भजन नं. 01

तर्ज़-ए सिर है अमानत-------।

टेक-हर घर में तुम्हारे चरचे हैं, हर लब पे तुम्हारे अफसाने।
शोहरत सुनकर तेरी सतगुरु, हम भी आये तेरे मयखाने।।

1.बंटती है सदा बादा-ए-इश्क, यह हमने सुना है लोगों से।
इक बार भी जो भी लेते हैं, वे रहते हमेशा मस्ताने।।

2.इस मय में भरी तासीर अजब, उतरे न जिसका खुमार कभी।
तेरी याद में रहके महव सदा , हो जाते हैं जग से बेगाने।।

3.यह आस लिये हम भी सतगुरु, आये हैं दरे-दौलत पे तेरे।
दो घूँट हमें भी मिल जाये, हम भी तो हैं तेरे दीवाने।।

4.हम तो हैं फकत तेरे शैदाई, नहीं गरज़ ज़माने से हमको।
तेरे जल्वों की मय ही पीते रहें, आँखों को बना कर पैमाने।।

5.तेरी महफिल में आने के लिये, माना कि दास नहीं काबिल।
पर छोड़ के शमा-ए-महफिल को, जायें कहाँ तेरे परवाने।।

भजन नं. 02

तर्ज़-फिरकी वाली तू----------।

टेक-मेरे सतगुरु की महिमा न्यारी, क्या जाने संसारी।
क्या जीव की मजाल जी, महिमा गाये जो दीन दयाल की।।

1.भक्ति का पन्थ चलाया जगत में, जीवों के कल्याण हेतू।
काया-कल्प ही करने आये, भक्ति के निर्माण हेतू।।
क्यों न गाऊं मैं बलि जाऊं, चरण-कमल की रज पर।
मैं बलिहारी जो नैया तारी, मुझ दुखिया कंगाल की।।

2.शत शत धन्यवाद सतगुरु का, माया से छुड़वाते हैं।
अचल शान्ति बख्शें जीवों को, चरण-शरण जो आते हैं।।
कष्ट मिटाये, सब सुख पाये, सतगुरु को अपना के।
जहाँ भक्ति ने किया है ठिकाना, सब दुःख हुआ रवाना।
गले न दाल काल की।।

3.नाम खज़ाना पाकर प्रभु जी, मैं तो माला माल हुआ।
दात रूहानी इस दर पाई, धन्य धन्य खुशहाल हुआ।।
पलटी तुमने हालत मेरी, जो जन्मों की थी बिगड़ी।
दुनियाँ सारी चर्चा करती, अटपट मेरी चाल की।।

4.कहूँ कहां तक मैं सतगुरु जी, जो एहसान उपकार किये।
तेरी चितवन पाके प्रभु जी, जग में दासनदास जिये।।
भरा खज़ाना मैनें पाया, जो न सँभलने में आता।
रख चरणों में ज़िन्दगी दे दी, सतगुरु हैं भक्ति के भेदी।।
दी थैली सच्चे माल की।।

भजन नं. 3

तर्ज़-ऐ मेरे दिले-नादां-----।

टेक-अहोभाग्य हमारे जो, ऐसा दरबार मिला।
जहाँ नाम और भक्ति का, हम को भण्डार मिला।।

1. प्रभु अन्तर्यामी हैं त्रैलोकी के स्वामी हैं।
प्रकटे जीव उबारन को, तज देश अनामी हैं।
श्री चरणों में जीने का, हम को आधार मिला।।

2. करुणा के सागर हैं, अनाथों के नाथ प्रभु।
जाये भूल भी जीव अगर, नहीं छोड़ते साथ प्रभु।
भव-पार लगाये जो, ऐसा खेवनहार मिला।।

3. जीवों के हितैषी प्रभु, सोये जीव जगाते हैं।
काल माया के फँदे से, सहजे ही छुड़ाते हैं।
सन्त रूप में देखो हमें, सच्चा गमख्वार मिला।।

4. सतगुरु संगी धुर के, तेरा लेखा चुकायेंगे।
कर्मों की हर रेखा, रहमत से मिटायेंगे।
कलिकाल में दास हमें, भगवान साकार मिला।।

भजन नं. 04

तर्ज़-यशोमति मैया से------।

टेक-हुआ तेरी उल्फत में दिल मतवाला।
होश गँवाई पी के प्रेम प्याला।।

1. प्यार की शमा दिल में जब से जली है।
हर इक बला मेरे सिर से टली है।
हुआ मारफत का दिल में उजाला।।

2. चरणों में तेरे है संसार मेरा।
तू ही है सतगुरु प्राणाधार मेरा।
तेरे प्यार का छाया नशा है निराला।।

3. सर्वस्व अपना मैं तुझ पे लुटाऊँ ।
तेरी ही चाहत के सदा गीत गाऊँ।
जपता रहूँ तेरे नाम की माला।।

4. जर्जर है नैया और दूर किनारा।
तेरे दास को बस तेरा है सहारा।
डूबते जीवों का तू है रखवाला।।

भजन नं. 05

तर्ज़-तेरा नाम सतगुरु जी-----।

टेक-है तुमने प्रभु जी मुझ पर करम यह कमाया।
दया करके बख्शी चरणों की छाया।।

1. फँसके मोह-बन्धन में भूला था ऐसा।
लिया न कभी मैंने लुत्फ बन्दगी का।
पकड़ बाँह तूने है रस्ते लगाया।।

2. बहुत काल-माया ने चक्कर खिलाये।
हैं मन मूज़ी ने भी सितम बहुत ढाये।
इन ज़ालिमों से है तूने छुड़ाया।।

3. आधार देकर न तुम गर बचाते।
तो भव में यकीनन हम डूब जाते।
कर्णधार बनकर है तूने बचाया।।

4. कहाँ तक मैं महिमा प्रभो तेरी गाऊँ।
किये हैं जो उपकार कहाँ तक गिनाऊँ।
सभी बन्धनों से है दास को छुड़ाया।।

भजन नं. 06

तर्ज़-मेरी याद में तुम न आँसू------।

टेक-जिस जीव ने लिया तेरा सहारा।
क्यों न वो भव से पाये किनारा।।

1. दुनियाँ का ममता न उसको सताये।
काल की भी न कुछ पेश जाये।
दिलो जान से जो हुआ है तुम्हारा।।

2. हृदय में जिसके हो ध्यान तेरा।
जीभा पे जिसकी हो नाम तेरा।
उसी जीव ने अपना जीवन सँवारा।।

3. जगत प्यार को कैसे दिल में बसाये।
तेरी छवि जिस हृदय समाये।
प्रेम तेरे का है पन्थ न्यारा।।

4. दासन दास वो जन बड़भागी।
लगन सतगुरु की जिस दिल में लागी।
चमका है उसका भाग्य सितारा।।

भजन नं. 07

तर्ज़-मुझे कोई मिल गया था-------।

टेक-जीवन पे रंग आया, प्रभु प्यार तेरा पाकर।
सुख सार मैंने पाया, लिव नाम से लगा कर।।

1. ऋतु आई है सुहानी, छाई है खुशहाली।
मेरे जीवन में आई, हर रोज़ ही दीवाली।
सच्ची खुशी मिली है, सिर चरणों में झुका कर।।

2. अनुकम्पा कर के तूने, किये दूर दुखड़े मेरे।
ऐ सतगुरु जी दाता, क्या गीत गाऊं तेरे।
कोई भी गम रहा ना, जागा मेरा मुकद्दर।।

3. किरपा तेरी हुई है, जीवन हुआ है शाद।
जब से बसी है दिल में, तेरी फकत इक याद।
तेरी रहमतों से दाता, झोली गई मेरी भर।।

4. उपकारी तेरे जैसा, जग में ना कोई पाया।
मुझ दीन को जो तूने, चरणों का दास बनाया।
बलिहार तुझ पे जाऊं, ऐ मेरे पीर राहबर।।

भजन नं. 08

तर्ज़-तुम्ही मेरे मन्दिर------।

टेक-ऐसी हुई प्रभु किरपा तुम्हारी,जीवन में मेरे रंग नया आया।
जन्मों के सोये भाग हैं जागे,प्यार तुम्हारा मैंने जो पाया।।

1. किस्मत की मेरी बदली है रेखा।
जब से प्रभु तेरा द्वार है देखा।
दौलत पाई नाम सच्चे की।
द्वार पे तेरे जो सिर को झुकाया।।

2. हृदय मन्दिर में दीप जला है।
शुभ कर्मों का फल यह मिला है।
दूर हुआ है सब अन्धियारा।
घट में तेरा दर्शन पाया।।

3. कौन है तुझ सा पर-उपकारी।
दूर करे जो रूह की बीमारी।
अशान्त रूहों को शान्त हो करते।
दे कर अपने चरणों की छाया।।

4. कैसे प्रभु तेरा बदला चुकाऊँ।
क्या कुछ तुझको भेंट चढाऊँ।
अपने चरणों का दास बना कर।
जग जंजाल से मुझको बचाया।।

भजन नं. 09

तर्ज़-दिया नाम का धन जो----।

टेक-भक्ति मुक्ति के दाता हो सतगुरु।
रूतबा महान तेरा जग में प्रभुवर।।

1. जो भी तेरा नाम सुमिरे ध्याये।
काल व्याल न उसको सताये।
सदग्रन्थों का ये फरमान।
माया की कुछ न चले पेश उस पर।।

2. जो भी शरण आये मन में श्रद्धा धार।
पल भर में करते हो उसका उद्धार।
देखते नहीं कभी जात सिफात।
भर देते झोली मेहरबान होकर।।

3. करुँ कैसे तेरी उपमा का ब्यान।
ताकत नहीं है मुझ में छोटी है ज़ुबान।
शेष शारदा भी गा गा हारे।
दामन फैलाये बैठे सभी तेरे दर पर।।

4. बलिहारी जाऊँ दाता तेरे चरणों पे।
काट दिये बन्धन तूने मेरे जन्मों के।
पर उपकारी तुमसा कोई न भगवन।
चरणों में ठौर दी है दास पे दया कर।।

भजन नं. 10

तर्ज़-ओ आसमान वाले-----।

टेक-तू ही राहनुमा है सतगुरु, इस मेरी ज़िन्दगी का।
क्या क्या करूँ मैं सामाँ, मालिक तेरी खुशी का।।

1. स्वामी हो दो जहाँ के, दीनों के हो सहारे।
मिलती हैं सच्ची खुशियाँ, चरणों में प्रभु तुम्हारे।
वर्णन करूँ क्या आनन्द, दीदार की घड़ी का।।

2. तेरी ऊँची शान सुनकर, मैं आया बन सवाली।
मिटी हर तमन्ना दिल की, जब दृष्टि तूने डाली।
मैं पुजारी हूँ तेरा ही, नहीं तालिब और किसी का।।

3. प्रेम में तेरे सतगुरु, जब कोई है रंग जाता।
रहती खबर न जग की, वह ऐसा सरूर पाता।
नहीं रहता अन्त कोई, उसकी फिर खुशी का।।

4. दास धन्य हो गया है, तेरा आधार पा के।
किस्मत बदल गई है, चरणों का प्यार पा के।
करूँ ध्यान मैं हमेशा, सुन्दर तेरी छवि का।।

भजन नं. 11

तर्ज़-

टेक-तुझे पा के मैंने सतगुरु, साचा सुख पा लिया है।
साचा सुख क्या है भगवन, मैंने सब कुछ पा लिया है।।

1. यह बात है बिल्कुल सच्ची, कि तू ही तो खुदा है।
परमहँस रूप चाहे तूने, जग में बना लिया है।।

2. न जाने कब से सतगुरु, बिछुड़ा हुआ था तुझसे।
रहमत से तूने मुझको, खुद ही बुला लिया है।।

3. एहसान तेरे हैं कितने, यह कहाँ तलक मैं गिनाऊँ।
तूने माया की दलदल से, मुझको बचा लिया है।।

4. धोखे में मन के आकर, गुमराह हो चुका था।
तूने दया कर मन के, चंगुल से छुड़ा लिया है।।

5. ऐ रहमत के भण्डारी, क्या गुण तेरे मैं गाऊँ।
अपने पावन चरणों का, मझे दास बना लिया है।।

भजन नं. 12

तर्ज़-मेरी ज़िन्दगी का आसरा----।

टेक-मुझे रास आ गया है तेरे दर पे सर झुकाना।
तुझे मिल गया पुजारी मुझे मिल गया ठिकाना।।

1. मेरे दिल की दुनियाँ भगवन आबाद है तुम्हीं से।
आबाद दिल को मेरे नाशाद न बनाना।।

2. मेरी आखरी तमन्ना तेरे दर पे प्राण निकलें।
अभी स्वाँस चल रहे हैं कहीं तुम चले न जाना।।

3. तेरी बन्दगी से पहले मुझे कौन जानता था।
तेरे प्रेम ने बना दी मेरी ज़िन्दगी फसाना।।

4. तेरी प्रीत की रीत ऐसी जिसको लगा दी तूने।
दुनियाँ ने समझा उसको पागल सदा दीवाना।।

भजन नं. 13

तर्ज़-दिया नाम का धन-----।

टेक-कुर्बत मे तेरी ज़िन्दगी बितायें।
श्री मौज आज्ञा को सीस चढायें।।

1. पुण्य कर्म से ये संयोग पाया।
मिली तेरे चरणों की निर्भय छाया।
धन्य हो गया जीवन पाकर तुमको।
श्री चरणों पर बलि बलि जायें।।

2. दर दर भटका मैं तुमसे दूर रहकर।
देना सहारा अब राहबर बनकर।
तेरे सिवा न कोई मेरा है स्वामी।
सतमार्ग जो मुझे दर्शाये।।

3. मुझे अपने चरणों की भक्ति देना।
पाँचों विकारों की शक्ति हर लेना।
लब पे हो चर्चा नाम तेरे की।
सुरति शब्द में जाके समाये।।

4. दीन बन्धु दाता शरण तेरी आया।
द्वार पे अपना दामन फैलाया।
बिगड़ी सँवारो मेरी दीन पे दया कर।
अपने ही चरणों का दास बनायें।।

भजन नं. 14

तर्ज़-रहा गर्दिशों में हरदम---।

टेक-तेरी शरण में जब से मेरे सतगुरु मैं आया।
सूना मेरा था जीवन खुश रंग उसे बनाया।।

1. मायूसियों के ताले, पल भर में तूने तोड़े।
तेरे हुज़ूर में जब, इक बार सिर झुकाया।।

2. मिलती न शरण तेरी, कहाँ दर बदर भटकते।
रहमत हुई जो तेरी, अपना हमें बनाया।।

3. अब काल के भी भय से, आज़ाद मैं हुआ हूं।
मेरा जो सारा ज़िम्मा, तूने प्रभु उठाया।।

4. तेरे एहसानों का मैं, क्या कर सुनाऊँ वर्णन।
तन मन करूँ जो अर्पण, जाये न ऋण चुकाया।।

5. खादिम रहूँ हमेशा, है दास की तमन्ना।
तुझ पे फिदा हो जाऊं, यह भाव दिल समाया।।

भजन नं. 15

तर्ज़-तू प्यार करे या ठुकराये----।

टेक-तेरे चरणों की प्रीति भगवन, मेरी रूह का सरमाया है।
तज कर के मुहब्बत दुनियाँ की, नेह केवल तुझसे लगाया है।।

1.सदियों से लगी चाह इस दिल में, तेरे प्यार के पाने की दाता।
मोह ममता के बन्धन ने अरमान, यह पूरा न होने दिया।
पर शुक्र है तेरी किरपा ने, संकल्प को सफल बनाया है।।

2.लगने हैं लगे कड़वे मुझको, संसार के रस जो लुभाते थे।
जीवन को जीवन जो है मिला, यह प्रीति तेरी की बरकत है।
माया का पुजारी था यह मन, खिदमत में तेरी लगाया है।।

3.पल एक न भूले नाम तेरा, बस जाये ध्यान में तेरी छवि।
तेरा प्रेमामृत पीने में सदा, तल्लीन रहे यह रूह मेरी।
तेरे चरणों से चित्त जुड़ा रहे, जग भासे दास पराया है।।

भजन नं. 16

तर्ज़-हकीकत में मज़ा------।

टेक-जगत के रंग क्या देखूँ, तेरा दीदार काफी है।
करूँ मैं प्यार किस किस से, तेरा इक प्यार काफी है।।

1. नहीं चाहिये ये दुनियाँ के, रंग निराले मुझको।
चला आऊं में तेरे दर पे ,तेरा दरबार काफी है।।

2. मेरे ये रिश्ते नातों ने, फैलाया जाल ममता का।
तेरे भक्तों से हो प्रीति यही परिवार काफी है।।

3. जगत की फीकी रोशनी से, ये आँखें भर गईं मेरी।
मेरी आँखों में हो हरदम, तेरा चमकार काफी है।।

4. जगत की झूठी माया ने , मेरा मन मोह लिया भगवन।
तेरे चरणों से हो प्रीती मेरी सरकार काफी है।।

5. जगत के साज बाजों से, हुये हैं कान अब बहरे।
कहाँ जाके सूनूँ अनहद तेरी झनकार काफी है।।

भजन नं. 17

तर्ज़-रामचन्द्र कह गये-------।

टेक-श्री सतगुरु किरपा कर हमको बार बार समझाते हैं।
जिसमें भला हमारा है यह भेद हमें बतलाते हैं।।

1. सतगुरु जैसा मीत नहीं कोई, और जगत में पाया है।
भूले भटके जीवों को जो, राह सीधी दिखलाते हैं।।

2. निर्भर अपने ख्यालों पे है, जीव का दुःखी सुखी होना।
इसीलिये ये सतसंगत की, महिमा सदा फरमाते हैं।।

3. अपने साथ मिलाने आये, पर उपकारी सतगुरु मेरे।
जिनकी संगत सोहबत से,बिगड़े कारज बन जाते हैं।।

4. वही सुखी प्राणी है जग में, जिन्हों को प्रभु प्यार मिला।
जगत की झूठी मोह ममता में, वह न कभी भरमाते हैं।।

5. दासनदासा गुरु वचनों का, मिला जो हमें खज़ाना।
वही राह अपनायें सदा, जिस राह पे सन्त चलाते हैं।।

भजन नं. 18

तर्ज़-रिमझिम बरसता सावन-----।

टेक-भागों से पाया है दर्शन तेरा।
झूम उठा है ये मन मेरा।
सफल हुआ है आज जीवन मेरा।।

1. तेरे ये नज़ारे हमेशा याद आयेंगे।
सुन्दर छवि ये तेरी दिल में बसायेंगे।
मैं हूँ सेवक तू स्वामी मेरा।।

2. घर घर में प्रभु जी चर्चा तुम्हारी है।
जिसका न कोई प्रभु उसका सहाई है।
जिस घर में है प्यार पावन तेरा।।

3. खुशियाँ भरी हैं प्रभु नाम में तेरे।
जो भी आ जावे प्रभु शरण में तेरे।
खुशनसीबी मिला द्वार तेरा।।

भजन नं. 19

तर्ज़-शमां जलती से परवाने------।

टेक-तेरा जलवा मैं जब देखूँ, मेरा मन झूम जाता है।
कि जैसे रंक धन पाकर, नहीं फूला समाता है।।

1. कशिश ऐसी अनोखी है,श्री दर्शन में ए स्वामी।
झलक एक जो भी पा जावे, वह भागों को सराहता है।।

2. बुझे न प्यास दर्शन से,तमन्ना और भी बढ़ती।
झुके जब सर हुज़ूरी में, मज़ा जन्नत का आता है।।

3. तुम्ही आधार जीवन का, तू ही प्रभु ज़िन्दगी मेरी।
नज़ारा आँखों को हरदम, यही तेरा सुहाता है।।

4. तमन्ना है यह दासनदास, रहे हरदम तेरा खादिम।
तेरी चाहत बिना न दिल, प्रभु कुछ और चाहता है।।

भजन नं. 20

तर्ज़-तेरी रहमत का कुछ-----।

टेक-महिमा तेरी को ऐ मेरे सतगुरु,किस विधि कह सुनाऊँ मैं।
अपनी जिव्हा में ऐ मेरे प्रभुवर,इतनी शक्ति कहाँ से लाऊँ मैं।।

1.प्रेम भक्ति का तूने ऐ सतगुरु,खोला अटूट खज़ाना है।
मुक्त हाथों से तू है भर देता,लाया जो भी जितना पैमाना है।
लाखों रंक राजा बनाये तूने,नाम किसकिस का कह सुनाऊँ मैं।।

2.तेरी शान निराली है जग में, सारी दुनियाँ का तू दाता है।
करके मीठी नज़र हम जीवों पे,दुःख दर्द सारे मिटाता है।
तुझसा न कोई उपकारी, इस जमाने में और पाऊँ मैं।।

3.मन्ज़िल मेरी मुझको मिल गई,तेरे चरणों का जो है प्यार मिला।
अब चाह रही न कोई बाकी, मेरे दिल को चैन करार मिला।
पाया तुझ को जो है नसीबों से,गीत खुशियों के क्यों न गाऊँ मैं।।

4.तेरी कृपा हर पल रहे बनी, और तार तुझसे हो जुड़ी।
तेरा ध्यान आँखों में बसे,पाऊँ दर्श तेरा हर घड़ी।
मिले द्वार तेरे की सेवा, और दास तेरा कहाऊँ मैं।।

भजन नं. 21

तर्ज़-सबसे सुन्दर------।

टेक-छत्रछाया श्री सतगुरु की खुशियों का भण्डार।
महिमा श्री सतगुरु जी की फैली सब संसार।।
सदा तेरा प्यार पाऊं, और तुझको ही ध्याऊं।।

1. निर्मल प्यार है पाया , प्रभु चरण शरण में आके।
पाया प्रभु अविनाशी, कई जन्मों के भाग हैं जागे।
पूरा सतगुरु पाया हमने, महिमा जिनकी अपार।।

2. नाम को जपने वाला, होता है गुरु को प्यारा।
अन्तर्मुख हो जो रहता , रहता जग से न्यारा।
ज्ञान की ज्योति जगाते भगवन, गुरु हैं बख्शनहार।।

3. अनहद नाद सुनाकर, सब कारज करते रास।
शब्द की है ये कुन्जी, पूरे सतगुरु के पास।
कई जन्मों के पुण्य करम से पाया है गुरुद्वार।।

4. भाग हमारे जागे पाये हमने प्रभु प्यारे।
खुशनसीब हैं सब पाये जो सुन्दर नज़ारे।
यहाँ मिलेगा ऐसा हमको बिन स्वार्थ का प्यार।।

5. धन्यवाद गुरु का दासा, शुक्रिया बारम्बार।
एहसान गुरु का भारा, महिमा है अपरम्पार।
भक्तों के आधार प्रभु हैं सन्तों के सिरताज।।

भजन नं. 22

तर्ज़-ज़रा सुन हसीना-----।

टेक-ऐ इष्टदेव मेरे प्रभु, तू ही मेरा आधार है।
दर्शन से तेरे सतगुरु, मेरे दिल को मिलता करार है।।

1. मुझे एक तेरी ही आस है, तेरा ही बस विश्वास है।
तू मीत है सच्चा मेरा, सब स्वार्थी संसार है।।

2. मेरे मन में है तेरी लगन, रहूँ याद में हरदम मगन।
तुझ से ही ऐ प्रियतम मेरे, जीवन में रहती बहार है।।

3. तुम किरपा सागर हो प्रभो, करुणा के आगार हो विभो।
दे ठौर निज चरणन में, मुझ पे किया उपकार है।।

4. अवगुण मैं अपने गिनाऊँ क्या, उनका हिसाब बताऊं क्या।
तू दास जान के बख्श दे, क्योंकि तू बख्शनहार है।।

भजन नं. 23

तर्ज़-

टेक-तेरा सतगुरु हाराँ वाले जयकारा बोले गली गली।
तेरे गल विच हार फूलाँ दे नज़ारा जावे गली गली।।

1. तेरे देख सिहांसन सगंताँ भीड़ लगाई।
लगन जिन्हां नूं नाम तेरे दी उन्हां नूं मस्ती छाई।
अब जोत से जोत मिला लो लिशकारा जावे गली गली।।

2. ढोलक ते चिमटी ने मिलके डाढी धूम मचाई।
लगन जिन्हां नूं तेरे नाम दी उन्हांनूं मस्ती छाई।
अब वज रहे ढोल ढमाके जयकारा जावे गली गली।।

3. तन मन धन ते हार फूलां दा भक्तां भेंट चढाया।
फल फ्रूट नमकीन ते मीठा प्रेमियाँ भोग लगाया।
प्रसाद दियो संगत नूँ भण्डारा जावे गली गली।।

4. जदों सतगुरु जी फरमांदे सब सेवा विच जुट जांदे।
घन्टे दा कम्म जो होवे ओह मिन्टाँ विच मुकांदे।
जदों मिलकर बोलना हल्ला जयकारा जावे गली गली।।

भजन नं. 24

तर्ज़-मुझे और जीने की चाहत----।

टेक-प्रभु तेरी उल्फत ने अजब जादू डाला।
होश गँवा के मैं हुआ मतवाला।।

1. तुझे पा के दिल की कली खिल गई है।
जन्नत ज़मीं पे ही मुझे मिल गई है।
तूने पिलाया ऐसा प्रेम प्याला।।
2. न चिन्ता रही कोई शरण तेरी पा के।
मिला चरणों में सब कुछ शीश झुका के।
हुआ तेरी रहमत का दिल में उजाला।।
3. तेरी चरण रज जब मस्तक लगाई।
जन्मों जन्म की अपनी बिगड़ी बनाई।
मेरा सतगुरु है जग से निराला।।
4. सभी ओर से सुरति अपनी हटाऊँ।
मनोहर छवि तेरी दिल में बसाऊँ।
जपूँ तेरे नाम की हर स्वांस माला।।
5. तुम तो हो प्रीतम दया के भण्डारी।
नज़रे-करम चाहूँ हरदम तुम्हारी।
मैं हूँ दास तुम मेरे दीन दयाला।।

भजन नं. 25

तर्ज़-आपकी नज़रों ने समझा-----।

टेक-तेरी रहमत से प्रभुवर, मिल गई मन्ज़िल मुझे।
खुशनसीबी से मिले जब, पीर तुम कामिल मुझे।।

1. क्यों फिरूँ अब मारा मारा, झूठे जग के प्यार में।
मिल गई है शरण मुझको, आप के चरणार में।
अब फँसायेगी भला क्या, माया की दलदल मुझे।।
2. नाव मेरी तो प्रभु जी, अब हवाले है तेरे।
कैसा डर तूफानों का जब हो खेवैया तुम मेरे।
अब तो मिल ही जायेगा, खुद-ब-खुद साहिल मुझे।।
3. राहे-भक्ति पर चलूं मैं , झूठे जग से तोड़ के।
सदा ही रखूं तार दिल की, श्री चरणों से जोड़ के।
अपने दीवानों में करना, है प्रभु शामिल मुझे।।
4. मेरे सिर पे तुम धनी हो, फिर भला कैसा फिकर।
गाऊँ महिमा तेरी हरदम, और करूँ तेरा ज़िकर।
एक पल भी दृष्टि से न, करना कभी ओझल मुझे।।
5. दासा तन मन और चित्त से, कर प्रभु आराधना।
इसके सिवा दिल में तेरे, रहे न कोई कामना।
हर जनम में सतगुरु की, शरण हो हासिल मुझे।।

भजन नं. 26

तर्ज़-भाग्यों से तेरा सतगुरु----।

टेक-दर्शन तेरा ऐ सतगुरु पुण्यों का धाम है।
इक बार जो भी करता होता पूर्णकाम है।।

1. टल जाती आधि-व्याधियाँ त्रय ताप हों काफूर।
इक झलक से दीदार की दिल होता नूरो-नूर।
मिट जाता नूरी जलवे से मन का अज्ञान है।।

2. धुलती मलीनता सभी मिट जाते सकल पाप।
दर्शन के पुण्य तीर्थ का ऐसा महा प्रताप।
होता है शुद्ध विमल मन करता स्नान है।।

3. बड़भागी पाते हैं दरस संचित हों जिनके पुण्य।
दर्शन की झलक से होये कृत्य-कृत्य नर अधम।
सन्तों का कहना है और ग्रन्थों का प्रमाण है।।

4. अमृत का स्रोत है सतगुरु तेरा दीदार।
दो घूँट पीने से होये गम फिकर रंज़ फरार।
हुआ मस्त दास का मन जब पिया जाम है।।

भजन नं. 27

तर्ज़-दिल ही दिल में-------।

टेक-तेरी रहमत का जिसे, सतगुरु सहारा मिल गया।
उसको भवसागर का सचमुच, ही किनारा मिल गया।।

1. फिर उसे दर दर भटकने, की कहाँ हाजत रही।
जिसको तेरे नूरी जलवे, का नज़्ज़ारा मिल गया।।

2. जिसने दिल तुझको दिया, सब कुछ उसी ने पा लिया।
गोया बरकत का खज़ाना,उसको सारा मिल गया।।

3. दायमी राहत मिली मेरे, दिले-नाशाद को।
फखर है मुझको मेरा दिल,दार प्यारा मिल गया।।

4. दो जहाँ की दौलतें उसकी नज़र में हेच हैं।
प्यार जिसको मेरे सतगुरु, जी तुम्हारा मिल गया।।

5. तेरे कदमों में ठिकाना मिल,गया जब दास को।
अपनी किस्मत का मुझे रोशन,सितारा मिल गया।।

भजन नं. 28

तर्ज़-साजन मेरा उस पार है------।

टेक-पाया जो प्रभु तेरा प्यार है।
मिल गया दिल को करार है।।

1. रहमत जो हो गई है तेरी।
पूरी मुरादें हुईं मेरी।
जीवन में आई बहार है।।

2. जन्मों की पीड़ा मेरी हर के।
जग से आज़ाद मुझे कर के।
दे दिया सुख अपार है।।

3. सचमुच मैं खुशनसीब हूँ।
चरणों के तेरे जो करीब हूँ।
खुशियों का न पारावार है।।

4. चरणों का तेरे प्रभु दास मैं।
रखता हूँ तुझ पे विश्वास मैं।
मेरा तू जीवन आधार है।।

भजन नं. 29

तर्ज़-स्वांस स्वाँस सुमिरो गोबिन्द-----।

टेक-नाम तेरा है सुख की खान।
दीजै हमको कृपा निधान।।

1. जो जन जपते तेरा नाम।
उनपे होये कृपा महान।
जप के नाम होये कल्याण।।

2. तुम सा नहीं कोई उपकारी।
तुमने सारी सृष्टि तारी।
खेवनहार मेरे भगवान।।

3. सारे जग के पालनहारे।
बिगड़ी किस्मत तू ही सँवारे।
तुम पर वारूँ तन और प्राण।।

4. तू मेरा स्वामी दास मैं तेरा।
बिन तेरे कोई नहीं मेरा।
बख्शो बख्शो मैं अन्जान।।

भजन नं. 30

तर्ज़-ज़िन्दगी प्यार का गीत है----।

टेक-नई ज़िन्दगी मिली मुझको, तेरे चरणों में सतगुरु जी आकर।
अब कुछ न तमन्ना रही, तेरा सुन्दर दीदार पाकर।।

1. कितने जन्म गँवाये यूँ ही,बिना तेरी बन्दगी के ही।
सच्चा आनन्द मिला अब मुझे, इस झूठे जगत को भुलाकर।।

2. रंक को कर दिया धनवान, देकर अपना प्यारा ये नाम।
तकदीर मेरी खुल गई, प्रेमाभक्ति तुम्हारी पाकर।।

3. सभी सुख हो गये हासिल, अब दूर नहीं मन्ज़िल।
पतवार मेरी नैया की आपने जब से थामी दया कर।।

4. माँगूँ वरदान तुमसे प्रभो, हर जन्म पाऊँ तुमको।
करना दास पे इतनी दया, अपने चरणों का सेवक बनाकर।।

भजन नं. 31

तर्ज़-रहमतां करदा ए-------.

टेक-कि सतगुरु प्यारे जी, कि प्राण आधारे जी।
अगम अपार है महिमा तेरी, कहता है जग सारा।।

1. उपकार किया तूने कितना, प्रेम भक्ति का पन्थ चलाया।
जन्मों से बिछुड़े जीवों को, अपने संग मिलाया।
कि तुझ सा और न कोई सहायक जीव का होई।
अगम अपार है।।

2. सन्तों का रूप बना के, जग में अवतार लिया है।
जो चरण शरण में आये, उनका उद्धार किया है।
कि नाम आधार दिया, कि भव से पार किया ।
अगम अपार है।।

3. खुशकिस्मत जग में हम हैं, जो तुझ सा स्वामी पाया।
तेरे चरणों में सिर को झुका कर, दिल फूला नहीं समाया।
कि दुखड़े दूर हुए, खुशी में भरपूर हुए।
अगम अपार है।।

4. जनम जनम में सतगुरु स्वामी, हम तेरे दास कहायें।
तेरी सेवा भक्ति कर के, सदा ही तुझे रिझायें।
यही बस दान देवो, यही वरदान देवो।
अगम अपार है।।

भजन नं. 32

तर्ज़-बड़ा बेदर्द जहाँ-----।

टेक-प्रभु जी एहसान तुम्हारे, गगन में जितने तारे।
मैं कैसे बदला चुकाऊँ सतगुरु प्यारे।।

1. जन्म जन्म रहा भटकता बन माया का मुहताज।
शरण तेरी में आ गया, हाथ पसारे आज।
काट माया के बन्धन, राख लिया अपने चरणन।
मैं कैसे बदला चुकाऊँ।।

2. स्वाँस की पूँजी से किया, विषयों का व्यापार।
मन का कहना मान कर, जीवन रहा था हार।
तूने उपकार कमाया, मुझे सत्पथ दरशाया।
मैं कैसे बदला चुकाऊँ।।

3. नाम का सुमिरण छोड़ रहा, माया संग लिपटाये।
भक्तिरूप चिन्तामणि बदले, कंकड़ लिये उठाये।
तूने प्रभु आन चिताया, मोह-निद्रा से जगाया।
मैं कैसे बदला चुकाऊँ।।

4. चरणों में तेरा दास यह,लेकर आया आस।
सेवक बनकर आपका, रहूँ मैं युग युग पास।
यही है दिल की चाहत, पाऊं हरदम तेरी शफकत।
मैं कैसे बदला चुकाऊं।।

भजन नं. 33

तर्ज़-ज़रा सामने तो आओ-----।

टेक-क्या उपमा करें सतगुरु जी, तेरा कल्पवृक्ष दरबार है।
सदा भक्ति की करना बख्शिश, दाता तेरा भरा भण्डार है।।

1.तेरे द्वार पे ऐ मेरे भगवन, जो भी सवाली आता है।
अपनी झोली है भर लेता, कभी न खाली जाता है।
तू दयालु बड़ा दातार है,तेरी रहमत का न पारावार है।।

2.फल भी वैसा ही पायेगा, जिस की जैसी भावना हो।
तेरे प्रेम बिना सेवक की, और न कोई कामना हो।
लिया जिसने तेरा आधार है,उसके जीवन में रहती बहार है।

3.सचमुच ही बड़भागी है वह, भक्ति जिसने पाई है।
जिस भक्ति की महिमा सन्तों और ग्रन्थों ने गाई है।
आन पहुँचा जो तेरे द्वार है, उसे दुनियाँ से न सरोकार है।।

4.रचना रच श्री आनन्दपुर की, सतगुरु ने उपकार किया।
निज चरणों की भक्ति देकर, जीवों का उद्धार किया।
लिया परमहँस अवतार है दास चरणों पे जाये बलिहार है।।

भजन नं. 34

तर्ज-आ हृदय के मन्दिर मे-----।

टेक-है दिल में बसाता जो तेरा प्यार हमेशा।
उस बशर का दिल रहता है गुलज़ार हमेशा।।

1. आबे-हयात जिसने तेरे नाम का पिया।
रहता है वह मस्ती से सरशार हमेशा।।

2. कर लेता है इक बार जो दीदार प्यारा।
तेरी दीद का रहता है तलबगार हमेशा।।

3. है याद तेरी जिसके रग रग में समाई।
करता है वह दिल में तेरा दीदार हमेशा।।

4. हर मौज पे तेरी जो झुकाता है अपना सिर।
वह नेकबख्त पाता है तेरा प्यार हमेशा।।

5. रहमो-करम का साया सदा दास पे रखना।
ममनून(आभारी) रहेगा यह खाकसार हमेशा।।

भजन नं. 35

तर्ज़-दो भक्तां नूँ फोटो मिली--।

टेक-प्रभु प्यारे से जिसका सम्बन्ध है।
उसको हरदम आनन्द ही आनन्द है।।

1. दिल में रखा है प्रभु का सहारा।
धन्य हुआ जीवन हमारा।
कट गया माया का फन्द है।।

2. क्यों पढ़े वह झूठी पढ़ाई।
जिसने लगन प्रभु से लगाई।
करे और न कुछ भी पसन्द है।।

3. सारे जग को है नश्वर जाना।
प्रभु चरणों में पाया ठिकाना।
मिला उसको फिर परमानन्द है।।

4. दास दुनियाँ के ताने सहे वो।
पर मुख से न कुछ भी कहे वो।
प्रभु नाम ही जिसको पसन्द है।।

भजन नं. 36

तर्ज़-आओ बच्चो तुम्हें------।

टेक-इस दरबार का झण्डा सारी सृष्टि में लहराय रहा।
परम शान्ति सुख पाता प्राणी, इस दर पे जो आये रहा।।

1.दिन दुगनी और रात चौगुनी, आनन्दपुर की शान है।
प्रेंमी भक्त जनों के घट में, फकत गुरु का मान है।
परमहँस निर्माता इसके, तभी तो यह हर्षाय रहा।।

2.महातीर्थ आनन्द सरोवर, सब तीर्थों का ताज है।
सदा खेलता अठखेली में, इस पे उसको नाज़ है।
त्रिभुवन मोहन सतगुरु उससे, अपने चरण धुलाय रहा।।

3.इस नगरी के कण कण में, कोई ऐसा तेज निराला है।
जो इसकी रज भाल चढ़ाता, दर्जा उसका आला है।
जन जन इस की महिमा अनुपम,निज मुख से है गाय रहा।।

4.विधि हरि हर और शेष-शारदा यश गा गा कर हारे हैं।
भवसागर में बहते प्राणी, लाखों पार उतारे हैं।
चौदह भुवनों में है सुन्दर, दासनदास सुनाय रहा।।

भजन नं. 37

तर्ज़-आज ऋतु सुहानी----।

टेक-दरबार रुहानी ये खुशियों का है भण्डार।
शोभा बड़ी अनुपम है छाई सारे संसार।।

1. जग माया से घबराया जो जीव यहाँ पे आवे।
मनोहारी रचना निरख आनन्दित हो जावे।
सानी न कोई इसका ये जन्नत का है द्वार।।

2. प्रेमा भक्ति का यहाँ अमृत बरसे दिन रात।
इसके ज़र्रे ज़र्रे से आती ये ही आवाज़।
ये वक्त कीमती है प्रभु नाम से कर ले तू प्यार।।

3. क्या कशिश अनोखी है क्या अजब नज़ारा है।
कुल मालिक ने इसको खुद आप संवारा है।
रहमत का सागर ये महिमा है अपरम्पार।।

4. दास शरण जो आ जाता कट जाते सब बन्धन।
प्रभु नाम व भक्ति के पा लेता अनमोल रतन।
रूहानी धन से वो हो जाता मालामाल।।

भजन नं. 38

तर्ज़-तुम्हें भूलना जो चाहा----।

टेक-तेरी बन्दगी में हमने दुनियाँ के गम भुलाये।
जीने का क्या सलीका तेरे दर से जान पाये।।

1. बड़ी मुशिकलों भरी थी अपनी यह ज़िन्दगानी।
बर्बाद जा रही थी बिना नाम के जवानी।
तुम्हें पा लिया है जब से जीने के ढंग आये।।

2. मुझे कौन पूछता था तेरी बन्दगी से पहले।
बेकार जी रहा था इस ज़िन्दगी से पहले।
नज़रे करम तुम्हारी ने है ये दिन दिखाये।।

3. प्रेमी हुआ आपका मैं भक्ति का दान चाहूँ।
तेरी साँवरी छवि का हर वक्त ध्यान पाऊँ।
मुझे हर घड़ी गुरुवर, बस तेरी याद आये।।

भजन नं. 39

तर्ज़-

टेक-लाखों पापी तारे ओ मेरी सरकार।
हमको भी तारो अब है हमारी बार।।

1. कौन सा गुण देखा जिससे गणिका को तारा।
कितनी माला फेरे था वह गीद्ध बेचारा।
नंगे पाँव आये तुम जब गज ने करी पुकार।।

2. अजामिल से पापी को प्रभु जी तुमने तारा।
एक बार नारायण कहकर उसने पुकारा।
इतने में ही कर दिया उसका भव से बेड़ा पार।।

3. गीद्ध अजामिल से बढ़कर हैं पाप हमारे।
नहीं गिने जायेंगे प्रभु जी तुमसे सारे।
पाप देखकर यमराज भी डर जायेगा एक बार।।

4. दासों के अवगुण प्रभु जी अब न विचारो।
इतने पापी तारे हैं इक और भी तारो।
दया करो हम दीनों पर तुम दया के हो भण्डार।।

भजन नं. 40

तर्ज़-ना कजरे की धार----।

टेक-ये आलीशाँ दरबार यहाँ नित नई मौज बहार।
है खुशियों का भण्डार सारे जग से न्यारा है।।

1. सतगुरु हैं वैद्य रूहानी, जिनका न कोई सानी।
देकर के नाम की औषध, हर लेते मर्ज़ पुरानी।
क्या बतायें पल में करते उपचार ये आलीशाँ।।

2. दीर्ध रोगों के सताये, जो इनकी शरण में आये।
पाकर के चैन करार बलिहारी चरणों पे जायें।
बड़ी महान इनकी शान छाई सारे संसार।।

3. वह जीव भाग्यशाली, जिसने इसकी पनाह ली।
अपने घट भीतर उसने प्रभु नाम की ज्योत जगा ली।
ऐसी तासीर बदले तकदीर जीवन बने गुलज़ार।।

4. इस पावन दर की रज को, मस्तक पे चढ़ा ले दास।
निर्भय जीवन गुज़रेगा, रख श्रद्धा विश्वास।
खुशी अनोखी यहाँ पे मिलती जिसमें है सुख अपार।।

भजन नं. 41

तर्ज़-मैं कहीं कवि न बन जाऊँ---।

टेक-सतगुरु जी शरण तेरी, जब से है मैंने पाई।
सूने मेरे जीवन में, फिर से बहार आई।।

1. भरपूर था गुनाह से, हुई मुझ पे तेरी रहमत।
तेरे इक इशारे से ही, गई बदल मेरी किस्मत।
मेरा मीत फकत तू है, और दुनियां है पराई।।

2. मेरे दीनाबन्धु सतगुरु निजधाम के हो वासी।
आये काटने धरा पर, दुखी जीवों की चौरासी।
माया जाल से ऐ सतगुरु, मुक्ति तू ने दिलाई।।

3. भक्ति का पी के अमृत, धुल जाये मैल मन की।
पाके तुझे रहे न, चिन्ता जन्म-मरण की।
अंग-संग हो तुम हमेशा, भक्तों के हो सहाई।।

4. इल्मो अक्ल न कुछ भी, न है भक्ति का करीना।
रहमत से पार करना, भव से मेरा सफीना।
इस दास ने ऐ सतगुरु, तेरी शरण अपनाई।।

भजन नं. 42

तर्ज़-

टेक-लगे ज़िन्दगी नूँ आन हुलारे, जदों दा तेरा लड़ फड़िया।
बेसहारियां नूँ मिल गये सहारे, जदों दा तेरा लड़ फड़िया।।

1. जदों दी निहारी छवि तेरी तस्वीर दी।
सुध बुध भुल गई ए अपने शरीर दी।
रोम रोम आरति उतारे, जदों दा तेरा लड़ फड़िया।।

2. अखिंयाँ दे विच तेरा नूर है समा गया।
जन्मां दी सुत्ती साडी किस्मत जगा गया।
साडी नस नस बोलदी जैकारे,जदों दा तेरा लड़ फड़िया।।

3. चढ़या ऐसा तेरे प्यार दा रंग ए सतगुरु।
नचदा प्यार विच साडा अंग अँग सतगुरु।
पान भँगड़े गमाँ दे मारे, जदों दा तेरा लड़ फड़िया।।

4. ऐसे दर्शन सतगुरु दित्ते ने प्यार दे।
भुल गये ने सानूँ सारे गम संसार दे।
सानूं लगदे ने दुख सुख प्यारे, जदों दा तेरा लड़ फड़िया।।

भजन नं. 43

तर्ज़-मेरे महबूब जाने-----।

टेक-सुखी वो ही है जिसने, मुर्शिदे कामिल है पाया।
बिना मुर्शिद जमाने में, किसी को चैन कब आया।।

1. मेरे मुर्शिद निराले हैं, वो भण्डारी हैं रहमत के।
मिली इनकी शरण समझो,कि घर बैठे खुदा पाया।।

2. नहीं पेचीदगी कोई न, उलझन न रुकावट है।
जो रस्ता हमको बतलाया, वो सीधा साफ दिखलाया।।

3. जहाँ उजड़े वीराने थे, बहारें थीं न रौनक थी।
वहाँ सतगुरु ने भक्ति का, परम तीर्थ है बनाया।।

4. वो खुशकिस्मत है उनसे, पा गये जो नाम की दौलत।
डूबो सकते नहीं उसको कभी, भी काल और माया।।

5. ख्वाहिश है अगर तो है, यही इस दास तेरे की।
रहे सिर पर सदा मेरे, इस पीर मुर्शिद का साया।।

भजन नं. 44

तर्ज़-आ लौट के आजा-----।

टेक-सच्चे मीत हैं सन्त सतगुरु, तुझे भवपार लगायेंगे।
सच्चे नाम की नाव बिठा, तुझे निजधाम ले जायेंगे।।

1. झूठे हैं नाती स्वार्थ के साथी, जिन संग प्रीत है तेरी।
पलक झपकते रंग बदलते, इनको न लगती देरी।
तू सतगुरु की शरण पकड़-----।

2. झूठी है रचना धोखे से बचना, सुरति न जग में फँसाना।
विषयों से अपना मन मोड़ के तू, भक्ति का रंग चढ़ाना।
फिर आनन्द में जाये गुज़र------।

3. हो के मगन लगा के लगन, सतगुरु की भक्ति कमा ले।
गुरु चरणों का तू लेके सहारा, लोक परलोक बना ले।
सतगुरु को बना राहबर---------।

4. खुशकिस्मती से ऐ दास तूने, सच्ची शरण है पाई।
सब छोड़ जायें जहाँ संग तेरा, वहाँ होंगे सतगुरु सहाई।
करते सतगुरु सदा है मेहर------।

भजन नं. 45

तर्ज़-फिरकी वाली तू-------।

टेक-मेरे सतगुरु तू सब सुख दाता, मेरे भाग्य विधाता।
तेरी महिमा महान है, सारे जग का तू ही भगवान है।।

1.ऊँचा तेरा द्वारा सबसे, शान भी तेरी निराली है।
मेरे सतगुरु सन्त प्यारे तू, दो जहाँ का वाली है।
सच्चे नाम का डंका बजाया, सुख सन्देश सुनाया।
किया बहुत बड़ा उपकार, जाने यह सब संसार।
भक्तों का तू तन प्राण है,सारे जग का तू ही भगवान है।।

2.श्रद्धा भाव से जो प्रेमी तेरे, चरणों में शीश झुकाता है।
तेरी नज़रे इनायत पाकर, धन्य धन्य भाग्य मनाता है।
गम चिन्ता से हो छुटकारा, पाये सुख अपारा।
तेरे प्यार में ऐसी तासीर, जन्मों की मेटे पीर।
सन्तों का यह फरमान है,सारे जग का तू ही भगवान है।।

3.किस्मत मेरी ने पलटा खाया, प्यार तेरा जो पाया है।
पाई सच्ची खुशी मिली जो, तेरे चरणों की छाया है।
ऐसी तूने कीन्ही दाया, चरणों का दास बनाया।
मैं जाऊं सदा बलिहार, ऐ मेरे दातार।
बड़ा ही तुझपे मान है, सारे जग का तू ही भगवान है।।

भजन नं. 46

तर्ज़-कैसे कह सुनाऊँ मैं----।

टेक-सतगुरु मेरे जग के वाली, तूने किया उपकार है।
तन मन तुझ पे मैं वारूँ प्रभु, बख्शा जो अपना प्यार है।।

1. श्री चरणों में दे के पनाह,जग झंझटों से आज़ाद किया।
पकड़ के सतगुरु मेरी बाँह, हर लिया सारा भार है।।

2. भक्ति से अन्जान था मैं, माया मे गल्तान था मैं।
जीव अति नादान था मैं, जीवन दिया सुधार है।।

3. देखे नहीं जो मेरे गुनाह, जाऊं प्रभु मैं सदा कुरबाँ।
तुझ सा ना और कोई मेहरबाँ, देखा तब संसार है।।

4. द्वार तेरे पे आके प्रभु, रहमत तेरी पा के प्रभु।
चरणों में सिर को झुका के प्रभु, पा लिया चैन करार है।।

5. रखता हूं दिल में आस मैं, तुझ पे फकत विश्वास मैं।
हूँ चरणों का दास मैं, तू मेरा प्राण आधार है।।

भजन नं. 47

तर्ज़-ऊँची ऊँची दुनियां की दीवारें-----.

टेक-शान तेरी पे ए सतगुरु जी, जाऊं बलिहार मैं, बलिहार मैं।
कर दूं तुझ पे तन मन अपना निसार मैं, निसार मैं।।

1. किरपा करके तूने मुझको, श्री चरणों में स्थान दिया।
सच्चे नाम की दौलत बख्शी, झूम रहा है मेरा जिया।
भूलूंगा न जन्मों तक भी, तेरा उपकार मैं, उपकार मैं।।

2. जीव अति अज्ञानी हूँ मैं, करता आया बहुत गुनाह।
देखे नहीं गुनाह तूने प्रभु, चादर रहमत की दी फैला।
तुम तो बख्शनहारे हो पर, हूं गुनाहगार मैं, गुनाहगार मैं।।

3. भाग उदय अब मेरे हो गये, तेरा जो है साथ मिला।
कुल मालिक की हो गई किरपा, तुझ सा जो है नाथ मिला।
तेरी रहमत से अब पाया, चैन करार मैं, करार मैं।।

4. बनूँ भिखारी द्वार तेरे का, दास की यह आरज़ू।
नक्शा नयनों में बसे तेरा, सतगुरु जी हू-ब-हू।
तेरे चरणों में ऐ सतगुरु, करता यही गुहार मैं, गुहार मैं।।

भजन नं. 48

तर्ज़-रमैय्या वस्ता वैय्या----.

टेक-मेरा दिलदार है तू मेरा गमख्वार है तू।

तुझ पे बलिहार जाऊँ, तुझपे बलिहार जाऊँ।।

1.तुझसे प्यार करुँ दिल निसार करूँ,तेरी उल्फत का मैं मस्ताना बनूँ।
तेरे बिन और कहीं दिल को ठौर नहीं,तेरे चरणों का मैं दीवाना बनूँ।
जग से तोड़ के अब, तुझ संग जोड़ के अब।
तुझ पे बलिहार जाऊँ।।

2.अन्तर्यामी हो तुम मेरेस्वामी हो तुम तेरीरहमत का प्रभु पारावार नहीं।
मैं इबादत करूँ तेरी खिदमत करुँ कुछ भी और मुझे दरकार नहीं।
आया हूँ तेरी शरण, काट दो जन्म मरण।
तुझ पे बलिहार जाऊँ।।

3.मेरा राहबर है तू और मुकद्दर है तू आस झूठे जगत की छोड़ी मैंने।
जबसे तूहै मिला कमल दिलका खिला प्रीतकेवल तुम्हींसे हैजोड़ीमैने।
मेरे सिरताज प्रभो, रखना लाज प्रभो।
तुझ पे बलिहार जाऊँ।।

4.तेरे आगे दातार दास करता पुकारअपने चरणों का बख्शो प्यार मुझे।
ध्याऊं नाम तेरा यही हो काम मेरा कोई जग से न हो सरोकार मुझे।
तू ही है नाथ मेरा, रहे संग साथ तेरा।
तुझ पे बलिहार जाऊँ।।

भजन नं. 49

तर्ज़-आने वाले कल की तुम-----।

टेक-मेरे सतगुरु तूँ पीरों का पीर है।
जो भी आये तेरी शरण, बनती बिगड़ी तकदीर है।।

1. भूले भटके जीवों को सत्पथ पे चलाने आये हो।
नाम-जहाज़ बना कर भव से पार लगाने आये हो।।
नाम तेरा भव रोगों की अकसीर है।।

2. तेरे दर से सतगुरु जी प्रेमाभक्ति का दान मिले।
जन्म-मरण का छुटे चक्कर मुक्ति का वरदान मिले।
मोह-मया की कट जाती जंज़ीर है।।

3. सारे जग की आस झोड़ कर आस रहे तेरी मन में।
हर दम ध्यान हो तेरा केवल प्रीत हो तेरे चरणन में।
दिल में तेरी ही बसे तस्वीर है।।

4. तू भण्डार है रहमत का मैं तेरे दर का भिक्षुक हूँ।
तेरी सेवा और भक्ति का प्रभु जी हर पल इच्छुक हूं।।
दास की तू ही सच्ची जागीर है।।

भजन नं. 50

तर्ज़-ठहरो ज़रा सी देर तो-----।

टेक-सतगुरु की शरण जाने से, अन्तर के पट खुलते हैं।
कर के सुमिरण नाम का, जन्मों के पाप धुलते हैं।।

1. काल माया का सदा, होता आया शिकार तू।
लाख चौरासी चक्कर में, भटका है बारम्बार तू।
सतगुरु का दामन थाम अब, जो भव से पार करते हैं।।

2. जग में आया किस लिए, और तेरा है फर्ज़ क्या।
वैद्य रूहानी हैं सतगुरु, बतायें तुझे है मर्ज़ क्या।
दे के दवाई नाम की, दुःख दर्द सब हरते हैं।।

3. संचित कर्मों के पुण्यों से, संयोग ऐसा बनता है।
गुरु-कृपा से ज्ञान का, घट में दीपक जलता है।
गुरु चरणों की छाँव में, मन के फूल खिलते हैं।।

4. आनन्द ही आनन्द मिले, सत्पुरुषों के संग में।
रंग जाते हैं दास फिर, नाम के पक्के रंग में।
शुभ गुण के मोती चुन चुन के, दामन अपने भरते हैं।।

भजन नं. 51

तर्ज़-जाने ज़िगर पहचाने----।

टेक-सतगुरु जी मेरे, गाऊं गुण मैं तेरे।

उपकार जो तूने कमाया, दरबार रूहानी बनाया।।

1. प्रेम भक्ति की राह चला दी है।

सच्चे नाम की गंगा बहा दी है।

हुआ शीतल तन मन उस जन का,जो आके इसमें नहाया।।

2. दुनियाँ के सताये जीव दुःखी।

पाते हैं यहाँ पे सच्ची खुशी।

दुःख गम चिन्ता सब मिट जाती,होती है जब तेरी दाया।।

3. तू बहुत बड़ा उपकारी है।

कहती यह दुनियां सारी है।

आया जो भी भूला भटका,तूने अपनी शरण लगाया।।

4. जाऊँगा मैं कुर्बान सदा।

भूलूंगा न एहसान तेरा।

मेरी जो तूने बाँह पकड़ी, और भक्ति पथ दरसाया।।

5. तेरे दास की प्रभु जी यह है दुआ।

फूले व फले दरबार तेरा।

रहे कायम जब तक यह दुनियाँ,हमें मिलता रहे तेरा साया।।

भजन नं. 52

तर्ज़-तेरी याद आ रही है----।

टेक-सदा पाऊँ तेरा द्वारा चाहे यह दिल हमारा।
ऊँची तेरी शान पे कुर्बां सर्वस्व हमारा।।

1. सेवा पूजा बन्दगी तेरी, सच्चा यह सरमाया है।
झोली भर दी तूने उसकी जिस आँचल फैलाया है।
मालोमाल हुआ इस दरबार से यह एहसान तुम्हारा।।

2. दुनियां के सब झंझट छूटे मिली चरणों की छाया है।
जन्म जन्म के बन्धन टूटे हम पर रहम कमाया है।
तेरी रहमत तेरी बख्शिश का यह खेल न्यारा।।

3. मन की कैद से रूह मेरी को तूने प्रभो आज़ाद किया।
शब्द से जोड़ के सुरति को वीराँ दिल को आबाद किया।
मनमति को छोड़के गुरुसंग जोड़के जीवन बना है मेरा।।

4. परमार्थ की खातिर तूने दुनियाँ में अवतार लिया।
खुशकिस्मत है जमाने भर में, जिसे चरणों का प्यार मिला।
भटकी रूह को पूरे गुरु ने आकर दास सँभाला।।

भजन नं. 53

तर्ज़-तुम्हीं राम हो----।

टेक-जगे भाग हैं मेरे सतगुरु।
तेरा जो दरबार मिला।।

1. झूम रहा खुशियों में मनवा।
तुझ सा जो दातार मिला।।

2. कोई चिन्ता फिकर रही ना।
सुखों का भण्डार मिला।।

3. तेरी अनुकम्पा से सतगुरु।
तेरा अनुपम प्यार मिला।।

4. जब से तेरा दास बना हूँ।
दिल को चैन करार मिला।।

भजन नं. 54

तर्ज़-ए मेरे दिले नादाँ।।

टेक-मैनूँ सतगुरु चरणां दा, दिन रात सहारा है।
मेरी डोलदी नैया दा, इक तू ही सहारा है ।।

1. है हथ तेरे दाता मेरे जीवन दी डोरी।
है हरदम आस यही, रहूँ जन्म जन्म तेरी।
सुनया है निमाणे दा इक तू ही सहारा है।।

2. मैनूँ भक्ति दा धन बखशो, मैंनू कोई भी ठोर नहीं।
दुनियाँ दे नज़ारेयाँ दी, मैनूं कोई वी लोड़ नहीं।
सतगुरु बख्शो अपना जो नाम प्यारा है।।

3. तुम युग युग राज़ करो, ये मेरी दुआएँ हैं।
रहो सदा सलामत तुम, हम सबकी दुआएँ हैं।
करो रहमत हम पर भी, हमें तेरा सहारा है।।

4. मेरे तन में समा जाओ, मेरे मन में समा जाओ।
मन मन्दिर के मालिक, अपने घर आ जाओ।
बैठा है आस लगा, तेरा दास बेचारा है।।

भजन नं. 55

तर्ज़-दो भक्तॉं नूँ फोटो----।

टेक-आओ सतगुरु देव मनाईये।
मिल गीत प्रेम दे गाईये।।

1. गुरु से सम्बन्ध पुराना।
गुरु चरण ही सच्चा ठिकाना।
इस बात को कभी न भुलाईये।।

2. गुरु सा न कोई हितकारी।
जिस दुविधा सकल निवारी।
अपना सब कुछ इनपे लुटाईये।।

3. जगतारण को हैं आये।
लाखों हैं पार लँघाये।
इस हकीकत को कैसे भुलाईये।।

4. देवें भक्ति श्रद्धा से तोल जी।
और लेवें नहीं कोई मोल जी।
कैसे महिमा इनकी गाईये।।

5. बेसहारों का यही है सहारा।
तभी नाम भी जग से न्यारा।
सदा इनको दिल में बसाईये।।

6. दासा वो ही किस्मत वाले।
जो हुये हैं गुरु के हवाले।
सदा अपना इनको बनाईये।।

भजन नं. 56

तर्ज़-दिल ही दिल में ले----।

टेक-दिल में जब से बस गई सतगुरु तेरी तस्वीर है।
बिगड़ी जन्मों की मेरी बन गई तकदीर है।।

1. ज़िन्दगी कर दी न्यौछावर राहे उल्फत मे तेरी।
जग की झूठी मोह ममता की कटी जंज़ीर है।।

2. ज़ेरे साया पाक कदमों में पनाह जब से मिली।
माया और मन की नहीं कुछ भी चले तदबीर है।।

3. मुश्किलों में तेरा ही मुझको भरोसा है प्रभो।
तू ही इस दुनियाँ में सतगुरु जीव का दस्तगीर है।।

4. राहबरी में तेरी राहे मारफत हो गई आसाँ।
भटकते देखा तेरे बिन हर इक राहगीर है।।

5. खूबी-ए-किस्मत पे अपनी नाज़ क्यों न मैं करूँ।
दास की नज़रे करम से बख्शी हर तकसीर है।।

6. दस्ते शफकत जब से मालिक तूने सिर पे रख दिया।
मिट गई पेशानी पे लिखी हुई तहरीर है।।

7. खाके-पा तेरी ने सतगुरु अजब जादू कर दिया।
पलक में आईना-ए-दिल कर दिया ततहीर है।।

8. दिल में जब से हैं जलाये तेरी उल्फत के चिराग।
मारफत के नूर से दिल में हुई तनवीर है।।

9. है तसव्वर तेरा मेरे वास्ते आबे-हयात्।
तेरे बिन ज़िन्दगी मेरी वरना ब-मिसले सऔर है।।(शोले)

भजन नं. 57

तर्ज़-बचपन की मुहब्बत ने------।

टेक-मालिक ने प्यार अपना इस दर पे लुटाया है।
जो कुछ भी पाया है तेरे दर से पाया है।।

1. कुर्बान है इस दर पे कुल इशरतें दुनियां की।
रहमत अगर हो जाये हसरत रहे न बाकी।
उल्फत का इक दरिया इस दर पे बहता है।।

2. सुनते हैं जो इस दर पे तकदीर बदलती है।
तकदीर बदलती है तासीर बदलती है।
हर बार वो आता है इक बार जो आता है।।

3. मिटते हैं ताप तीनों कलिमल धुल जाता है।
कटती है चौरासी और यम पास न आता है।
जिस प्रेमी के सर पर सतगुरु का साया है।।

4. इस दर की दुनियां में शोभा ही निराली है।
यहां रोज दशहरा है यहां रोज दीवाली है।
मालिक ने इस दर को सचखण्ड दर्शाया है।।

5. धूलि जब इस दर की मस्तक पे आती है।
प्रभु प्रेम की आँखों में मस्ती छा जाती है।
जल जाता माया ने जो जाल बिछाया है।।

6. उपकार की खातिर ही श्री सतगुरु आते हैं।
जो शरण में आते हैं मन्ज़िल पा जाते हैं।
जिस प्रेम किया दासा तिस ही प्रभु पाया है।।

भजन नं. 58

तर्ज़-बहुत प्यार करते हैं----।

टेक-बहुत हैं प्रभु हम पे तुम्हारे करम।
कभी भूले से भी न भूलेंगे हम।।

1. हमारा मुकद्दर है तुम ने बनाया।
बख्शी हमें चरण कमलों की छाया।
दूर किये सारे दुःख दर्द गम।।
2. गगन में चमकेंगे जब तक सितारे।
गुणवाद गायेंगे तब तक तुम्हारे।
छोड़ झूठे जग की झूठी शरम।।
3. मिले हर जन्म में शरण तुम्हारी।
रहे तेरी उल्फत की हर दम खुमारी।
निभाते रहें हम तो सेवक धर्म।।
4. इतनी अर्ज़ दाता है तेरे आगे।
बन्धे रहें तुझ संग प्रेम के धागे।
चाहे बीत जावें लाखों जनम।।
5. प्रेम का बन्धन है इतना प्यारा।
रिहाई नहीं दास को अब गवारा।
इसी कैद में ही निकल जाये दम।।

भजन नं. 59

तर्ज़-भगवान तेरे घर का----।

टेक-सतगुरु की पाई संगत, चमका है भाग्य सितारा।
शुभ कर्म उदय हुए हैं, पाया जो गुरु का द्वारा।।

1. अब चाह रही क्या बाकी, पूरे सतगुरु जो पाये।
खुशियों में झूमे मनुआ, कुरबान गुरु पे जाये।
रहमत की दृष्टि पा के, भूला है दुःख गम सारा।।

2. सब तोड़ दिये हैं बन्धन, आज़ाद मैं हुआ हूं।
भक्ति की दात पाके, अब शाद मैं हुआ हूँ।
दुनियां की हर उल्झन से, सतगुरु ने है उबारा।।

3. खुद किरपा कर सतगुरु ने, सही राह पे है लगाया।
अवगुण न देखे मेरे, चरणों से है मिलाया।
चरणों का प्यार देके, दुःख दर्द सब निवारा।।

4. उपकार किये हैं इतने, क्या गिन के मैं सुनाऊँ।
यदि सीस करुँ मैं अर्पण, बदला चुका न पाऊँ।
चरणों का दास बनाकर, जीवन जो है सुधारा।।

भजन नं. 60

तर्ज़--झिलमिल सितारों का----।

टेक-तू गर जीवन का सहारा होगा।
खुशरंग जीवन हमारा होगा।
क्या वह गज़ब का एक नज़ारा होगा।।

1. प्रेम की मन्ज़िल पे हर कदम बढ़ाते जाएंगे।
काँटे भी आँचल में फूल समझ कर भरते जाएँगे।
राह में तेरी सब गँवारा होगा।।

2. प्रीत मुयस्सर तेरी गर हो जाएगी हमें।
देगी मेरी ज़िन्दगी दुआएं तुझे हर समय।
होठों पे राग तुम्हारा होगा।।

3. जिसने भी लगन में तेरी कुरबां की है ज़िन्दगी।
उस को ही नसीब हुई तेरी सच्ची बन्दगी।
जीवन उसने संवारा होगा।।

4. पथ से जो हटाए ऐसी चाहूँ नहीं राहत मैं।
दौलत दो जहाँ की वार दूँ मैं तेरी चाहत में।
आँखों में रूप तुम्हारा होगा।।

5. निर्भय राही प्रेम के मग पर बेखटके चलता जाये।
हँस हँस तुफानों से खेले, इष्टदेव के मन भाये।
दास प्रभु को वह प्यारा होगा।।

भजन नं. 61

तर्ज़-तुम्हारी नज़र क्यों खफा हो----।

टेक-तेरी जब से मुझपर दया हो गई।
मेरी ज़िन्दगी क्या से क्या हो गई।
मिला जो उजाला तेरे ज्ञान का।
तो रोशन यह सारी फिज़ा हो गई।।

1. कई जन्म से चाह दीदार की थी।
तड़प दिल में हरदम तेरे प्यार की थी।
कि मन्ज़ूर मेरी दुआ हो गई।। मेरी ज़िन्दगी----।

2. तेरे चरण कमलों में आकर गुरु जी।
श्री चरणों की छाँह पाकर गुरु जी।
मेरे सिर से दूर हर बला हो गई।।मेरी ज़िन्दगी--।

3. तेरे दरस से मन की दुविधा मिटी है।
कि माया जो मुझको सताती रही है।
तेरा नाम सुनकर हवा हो गई।। मेरी ज़िन्दगी---।

4. मुझे बख्शो चरणों का अनुराग दाता।
कि सोया हुआ जागे मेरा भाग्य दाता।
अगर यह कबूल इलतेज़ा हो गई।।मेरी ज़िन्दगी--।

5. है दुर्लभ जगत में फकत प्रेम भक्ति।
प्रभो दास अपने को जो तूने बख्शी।
यही दर्दे-दिल की दवा हो गई।। मेरी ज़िन्दगी---।

भजन नं. 62

तर्ज़-एक दो तीन----।

टेक-मेरा प्रभु हाराँ वाला अनन्दपुर वासी जग में महान।
किससे करूँ तुलना तेरी तू जग में बेमिसाल।।

1. भक्तों की खातिर तू जग में आया,दरबार श्री आनन्दपुर बनाया।
सुख शान्ति के खोले भण्डार, उपकार तूने ये है कमाया।
नाम दान देता है तू बाकमाल, तू है जग में बेमिसाल।।

2. माया का जोर न यहाँ पर चले,दुःख गम भी सारे ही टले।
खुशियों की बरसात होती, यहां मौसम बहार सदा ही रहे।
मन माया की यहाँ क्या मजाल, तू जग में है बेमिसाल।।

3. गुरुमुख मण्डली सुहाती यहाँ,निशदिन गुरु महिमा गाती यहाँ।
कण कण में भक्ति की खुशबू भरी,दुखी आत्मा चैन पाती यहाँ।
भक्ति धन से तू करे मालामाल, तू जग में है बेमिसाल।।

4. प्रेम प्याला पिलाते हो तुम,नाम खुमारी चढ़ाते हो तुम।
फूलों में जैसे हो खुशबू भरी, दासों का जीवन बनाते हो तुम।
आठों पहर रहता वो खुशनिहाल, तू जग में है बेमिसाल।।

भजन नं. 63

तर्ज़-नसीब में जिसके------।

टेक-शरण में तेरी ऐ मेरे सतगुरु, सुख का सच्चा धाम पाया।
मैं सदके तेरी रहमतों के, ज़ुबां पे तेरा ही नाम आया।।

1. न हो सरोकार कोई जग से, रहूँ मैं चरणों से तेरे लग के।
इस मतलबी दुनियाँ में कोई, तेरे सिवा न काम आया।।

2. प्रेम भक्ति से झोली भर दो, ऐसी भगवन कृपा कर दो।
गुण नहीं कोई भी मुझ में, मैं बन के तेरा गुलाम आया।।

3. देख कर तेरी छवि प्यारी, मिट गई सब बेकरारी।
तेरे सुन्दर दरस बिन न, दिल को कभी आराम आया।।

4. रहे दास करता तेरा चिन्तन, लगन लगाये तेरी निसदिन।
दिल को चैन-ो-करार आया, जब चरणों में तेरे ठाम पाया।।

भजन नं. 64

तर्ज़-गुरु मेरे दाता----।

टेक-रहा चरण कमल का सहारा, जब बही दया की धारा।।

1. जलता आवा था कुलाल का, शावक मृदुल बचाये।
   तनिक आँच भी छू न सकी, प्रह्लाद सोच जिय हारा।।

2. दुःशासन की बली भुजाएं, चीर खींचते थाकीं।
   द्रुपद-सुता की लाज बचाने, अक्षय वसन उतारा।।

3. दैत्यराज ने तपे स्तम्भ से, अपना सुत चिपटाया।
   करुणा-पाणि बढ़ाकर तूने, हिम शीतल कर डारा।।

4. राणा ने जब गरल प्याला, मीरा पास पठाया।
   ध्यान लीन हो सीस चढ़ाया, बना अमिय की धारा।।

5. विकट अटपटे कितने ही प्रण, अर्जुन ने कर डारे।
   अपनी मधुर सुखद छाया में, किस विध पार उतारा।।

6. सतगुरु सोई मान भरोसा, दर पर अलख जगाई।
   अपनी चरण-शरण में राखो, निर्बल दास दुखियारा।।

भजन नं. 65

तर्ज़-प्रभु तुम बड़े दिल के----।

टेक-इक अर्ज़ सुनो गुरुदेव मेरी।
मोहे दीजौ अपने चरणों की भक्ति।।

1. तेरे दर पे खड़ा इक प्रेम पुजारी है।
भिक्षा दीजौ प्रभो आया भिखारी है।
माँगूं तुझसे सदा मैं तुझको ही।।
2. मेरी संगत सदा तेरे प्यारों से हो।
कुछ मेल न दुनियांदारों से हो।
जपूँ नाम तेरा हर पल हर घड़ी।।
3. ऐसा मस्ती का दे प्रभु जाम पिला।
नशा जिसका रहे हरदम ही चढ़ा।
भूले से भी न भूले तेरी याद कभी।।
4. सदा तुझको रिझाऊँ सदा तुझको मनाऊँ।
तेरी मौज में अपना जीवन बिताऊँ।
रहे लगन सदा यह दिल में लगी।।
5. दासनदास की प्रभु जी यह ही पुकार।
होवे हिरदे के मन्दिर तेरा ही दीदार।
करूँ सेवा पूजा निसदिन मैं तेरी।।

भजन नं. 66

तर्ज़-वृन्दावन का कृष्ण कन्हैया---।

टेक-कर्म उदय हुए हम जीवों के, दरबार प्यारा पाया है।
कुल मालिक ने किरपा करके,यह संयोग बनाया है।।

1. भक्ति मुक्ति के देने वाले, श्री सतगुरु भगवान हैं।
सानी इनका कोई ना जग में, गुण और ज्ञान निधान हैं।
जिसने इनका दामन पकड़ा, खुशरंग उसे बनाया है।।

2. सब गम चिन्ता मिट गई हमरी, शरण प्रभु की पा करके।
सुख साचा सहजे ही मिला है, चरणों में शीश झुका करके।
बलि बलि प्रभु चरणों पे जायें, बख्शा जो अपना साया है।।

3. तेरे उपकारों को भगवन, गाते रहेंगे जन्मों जनम।
दे न सकेंगे बदला कभी यदि, भेंट करें सिर लाखों हम।
जग झंझटों से हमें बचा कर, चरणों के संग मिलाया है।।

4. दासा हम जैसा बड़भागी, कौन होगा संसार में।
रंग लिया हमने तन मन अपना, पावन प्रभु के प्यार में।
घोर महा कलियुग में हम ने, पूरा सतगुरु पाया है।।

भजन नं. 67

तर्ज़-चेहरे पे खुशी छा-------।

टेक-किस्मत ने खाया है पलटा, दरबार प्यारा पाया है।
कुदरत ने करी हम पर किरपा, जो यह संयोग बनाया है।।

1. कितने जन्मों के शुभ फल से, हमको पावन दरबार मिला।
श्री चरणों में सर को झुकाया जब,खुशियों से जिया हर्षाया है।।

2. जिनके दर्शन करने के लिये, योगी मुनि जप तप करते हैं।
हमने उस मालिक का दर्शन, सतगुरु के रूप में पाया है।।

3. कुछ भी न चाहिये हमको प्रभु, बिन माँगे तूने सब कुछ दिया।
जीवन हमरा सूना सा था, तूने खुशरंग बनाया है।।

4. क्यों न हम तन मन धन वारें, अपने प्यारे श्री सतगुरु पर।
जिसने हम पर किरपा करके, चरणों के संग मिलाया है।।

5. पा कर तेरे दर की धूलि, ये दास तेरे धनवान हुए।
त्रैलोकी की दौलत है मिली, जब से दर तेरा पाया है।।

भजन नं. 68

तर्ज़-ओ दूर के मुसाफिर-----।

टेक-ऐ सतगुरु प्यारे अपना हमें बना ले जी।
चरणों से अब लगा ले।।

1. तुझ बिन नहीं है कोई, सुध बुध जो ले हमारी।
है खूब खोज देखा, मतलब की दुनियाँ सारी।
धोखे के जाल से अब भगवन हमें छुड़ा ले जी।।

2. कोई नहीं है संगी, दिन चार के हैं मेले।
सम्बन्ध इस जगत के, सब झूठ के झमेले।
तू भी न बाँह पकड़े, ते कौन फिर सँभाले जी।।

3. सत और असत का हमको, भगवन यह ज्ञान दे दे।
अभिलाषा अब यही है, भक्ति का दान दे दे।
हम प्रेम के हैं प्यासे, दे प्रेम के प्याले जी।।

4. किरपा से अब मिटादे, दुःख दर्द गम बखेड़ा।
बस इक नज़र से तेरी, हो जाये पार बेड़ा।
भव सिन्धु है भयानक, दासनदास को तरा ले जी।।

भजन नं. 69

तर्ज़-ये तेज ये जलवा------।

टेक-ऐ दीन बन्धु भगवन मैं आया तेरी शरण।
मोहे श्री चरणों में पनाह दीजिए।।

1. यह सुना जो भी आये तेरे द्वारे पर।
प्रार्थना प्रभु सुनते हो ध्यान देकर।
इसी आशा को लेकर आया, आकर दामन फैलाया।।

2. इक नहीं कई जन्म यूँ ही खो दिये।
मन की कैद से क्योंकर रिहाई मिले।
अब तेरे हाथ है स्वामी, मेरी चौरासी कटानी।।

3. मैं विकारों के फन्दे में फँसा इस कदर।
बच निकलने का ज़रिया न आता नज़र।
अब आया शरण तिहारी,तुम हो दाता पर उपकारी।।

4. मेरी जन्मों की बिगड़ी सँवारो प्रभो।
दास के मन की दुविधा निवारो प्रभो।
ज़ंज़ीरें मोहमाया की तोड़ो,सुरति चरणकमल संग जोड़ो।

भजन नं. 70

तर्ज़-चेहरे पे खुशी छा जाती है---।

टेक-दरबार तेरे में ऐ सतगुरु, जो भी इक बार आ जाता है।
तेरी बख्शिश के भण्डार भरे, झोली भर कर ले जाता है।।

1. तुझे देते नहीं देखा हमने, पर झोली सबकी भरी देखी।
तेरे देने का है ढंग अजब, जो नज़र किसी को न आता है।।

2. दुनियाँ के दुःखों से घबरा, जो तेरी चरण शरण आया।
तेरा पावन दर्शन करके वह, सारे दुःख दर्द गँवाता है।।

3. प्रेम भक्ति की गंगा बहा दी है, सेवा के खोल भण्डार दिए।
वह इन्साँ जग में बड़भागी, इस दर की जो सेवा कमाता है।।

4. तेरी शान के ऐ मेरे सतगुरु, सब दुनियां नगमे गाती है।
हर कोई कहता यह मुख से, श्री सतगुरु सुख का दाता है।।

5. किस्मत पे क्यों न नाज़ करुँ, जो बनाया दासनदास मुझे।
मेरी जो तूने बाँह पकड़ी, जिया मेरा हर्षाया है।।

भजन नं. 71

तर्ज़-झूला झूल मनमोहन श्याम-----।

टेक-पाया पाया, दरबार तेरा प्रभु पाया, मैने पाया।

1. ठौर मिली जो द्वार तुम्हारे, कहलाया बड़भागी।
   तेरी ही किरपा से भगवन, सोई किस्मत जागी।।

2. पाकर पावन प्यार तेरा, मेरा रोम रोम हर्षाये।
   नूरी दर्शन करके मनुआ, गीत खुशी के गाये।।

3. मिट गई सारी कलह कलपना, हो गई किरपा तेरी।
   भक्ति के साचे धन से प्रभु, झोली भर गई मेरी।।

4. तेरे उपकारों का भगवन, बदला दिया न जाये।
   भेंट करूँ यदि सीस मैं लाखों, फिर भी दिल सकुचाये।।

5. बनके दासनदास रहूँ मैं, यही मनोरथ मेरा।
   सेवा करूँ दरबार तेरे की, बन के तेरा चेरा।।

भजन नं. 72

तर्ज़-वृन्दावन का कृष्ण कन्हैया-------।

टेक-ऐ गुरुदेव दीजिए मुझको, नाम प्याला मतवाला।
मिटे अज्ञान अन्धेरा जिससे, और हो मन में उजियाला।।

1. मन की मैल मिटे जन्मों की, अजपा मे लौ लग जाये।
प्राणों में बस जाये तू ही, सोया मनुआ जग जाये।
प्रेम के साबुन से मन धो दे, जो है जन्मों का काला।।

2. ऐसी लटक लगा दे प्रियतम अपनी सुध बुध खो जाऊँ।
नाम तेरा मैं सुमिर सुमिर कर, तुझ ही में लय हो जाऊँ।
कट जाये सब बन्धन मेरा, काल कर्म ने जो डाला।।

3. विषय वासनाओं से मेरी, सुरति आज़ाद करा दीजै।
प्रेम की अमृत धाराओं से, तन मन मेरा रंग दीजै।
ऐ रंगरेज़ रंग वह रंग दे, जग में हो सब से आला।।

4. दासनदास सतगुरु तेरी,चरण शरण अपनाई है।
इष्टदेव भगवान हमारे, तुम बिन कौन सहाई है।
मन-मन्दिर के द्वार खोल दो, लगा जहाँ माया ताला।।

भजन नं. 73

तर्ज़-छोड़ बाबुल का घर-------.

टेक-आया दर पे तेरे, तुम भगवन मेरे।
मेरी लाज रखो- हो, मेरी लाज रखो।।

1. तेरे दर के सिवा कहीं ठौर नहीं।
तेरे जैसा प्रभु कोई और नहीं।
राखो अपनी शरण, काटो जन्म मरण।
मेरी लाज रखो।।

2. सुख सागर तेरा यह दरबार है।
सारे जग में यह भक्ति का भण्डार है।
मै भी भक्ति चाहूँ,तेरी महिमा गाऊँ।
मेरी लाज रखो।।

3. अब तो दाता मुझे स्वीकार करो।
मेरे दिल में सदा अपना प्यार भरो।।
सिर चरणन धरूँ, तेरी सेवा करूँ।
मेरी लाज रखो।।

4. हर जनम बनूँ मैं दास तेरा।
तेरी शरण में नित हो निवास मेरा।
यही चाह मेरी, मिले शरण तेरी।
मेरी लाज रखो।।

भजन नं. 74

तर्ज़-दुनियां का बन के देख चुका----।

टेक-है मान सरोवर भक्ति का, सतगुरु जी यह दरबार तेरा।
शुभ गुणों के मोती मिलते हैं, यहाँ हँसों का आहार भरा।।

1. इस दर पे जो भी आया है, उसको है अनुपम लाभ मिला।
यहाँ घाटे का कुछ काम नहीं, है लाभ का कोषागार तेरा।।

2. तू धनी भी बड़ा अनूठा है, जो नाम रतन देता सबको।
अब देश विदेश में फैला है, सतगुरु जी यह व्यापार तेरा।।

3. माया में भूले जीवों के, इस दर की झलक नसीब नहीं।
यहाँ गुरुमुख प्यारे आते हैं, ले जाते हैं भक्ति लाल खरा।।

4. रहे दास भिखारी जन्म जन्म, ऐ सतगुरु जी तेरे दर का।
कर जोड़ यही इक विनती है, मिलता रहे मुझ को प्यार तेरा।।

भजन नं. 75

तर्ज़-कैसा खुशी का अदभुत नज़ारा---।

टेक- कितना सुन्दर कितना प्यारा,त्रैलोकी से है यह न्यारा।
कि सुखों का सागर है तेरा द्वारा।।

1. प्रेम और भक्ति का तेरा यह दरबार है।
महिमा अपरम्पार है जाने सब संसार है।
गुरुमुख जन हैं यहाँ पर आते।
भक्ति से झोली भर भर ले जाते।।
कि सुखों का----।

2. चरणों में तेरे आकर धन धन भाग मनाया है।
तेरा प्यार जो पाया है मन में आनन्द समाया है।
उपकार तूने हम पर कमाया।
जग जंजाल से हम को बचाया।।
कि सुखों का----।

3. है तमन्ना दिल में यही तेरा दास कहाऊँ मैं।
तेरी महिमा गाऊँ मैं कि तेरी सेवा कमाऊँ मैं।
युग युग भिखारी बनकर दाता।
द्वार तेरे पे रहूँ मैं आता।
कि सुखों का----।

भजन नं. 76

तर्ज़-सुनो सुनो ऐ दुनियां वालो-----।

टेक- आया हूँ प्रभु शरण में तेरी, रखना लाज प्रभु जी हमारी।
निज चरणों की भक्ति दे दो, झोली तेरे दर पे पसारी।।

1. आया हूँ प्रभु द्वार पे तेरे, माँगूं तुझ से प्यार तेरा।
होता रहे हमेशा मुझको, मन भावन दीदार तेरा।
कृपा की दृष्टि करना हमेशा, तेरी कृपा का मैं हूँ भिखारी।।

2. भटक भटक कर अब सतगुरु जी, तेरा द्वारा पाया है।
तेरे चरणों में शीश झुका कर, सब दुःख दर्द मिटाया है।
तेरा कोई न सानी जग में, देखी भाली दुनियाँ सारी।।

3. जीव अति अज्ञानी हैं हम, अक्सर भूल ही जाते हैं।
मन माया के जाल में फँसकर, ठोकर फिर फिर खाते हैं।
मन माया से बचाना प्रभु जी, तेरी ओट है हमने धारी।।

4. चरण कमल से लगाये रखना, यह अभिलाषा है मेरी।
बन के दास श्री चरणों का, सेवा पूजा करूँ तेरी।
मान लेना प्रभु मेरी विनती, रहूँगा जन्मों तलक आभारी।।

भजन नं. 77

तर्ज़-याद आ रही है----।

टेक-ओ भक्ति के भण्डारी, आया मैं शरण तुम्हारी।
निज चरणों की भक्ति दे दो, माँग रहा भिखारी।।

1. तेरी भक्ति को पाने की खातिर, तेरे द्वार पे मैं आया।
ऐ नाथ मेरे अब कीजौ, निज चरण कमल की छाया।
और नहीं मैं कुछ भी चाहूं, चाहूँ दया तुम्हारी।।

2. तेरी भक्ति मेरे ऐ स्वामी, है सर्वसुखों की खान।
जो तुझ से नेह लगाता, है पाता वही इन्सान।
मिट जाती है सब गम चिन्ता, चाहे कितनी भारी।।

3. बिन तेरी भक्ति के हमने, कई जन्म गँवाये दाता।
तेरा नाम भुला के मनुआ, दुख सदा रहा ही पाता।
शरण पड़े हैं तेरी ऐ स्वामी, लाज रख हमारी।।

4. कोई गुण नहीं है मुझ में, मैं जीव अति अन्जान।
मुझे अपना दास बना लो, ऐ दीनबन्धु भगवान।
और कोई न मीत है मेरा, देखी दुनियाँ सारी।।

भजन नं. 78

तर्ज़-बाज़रे दा सिट्टा----।

टेक-सतगुरु मेरे प्यारे ने है, पर उपकार कमाया।
दरबार रुहानी बनाया, और भक्ति पथ दर्शाया।।

1. आज़ाद हुआ वह काल माया से, आया जो चरण शरण में।
मिट गईं सारी गम चिन्तायें, लागा मन सुमिरण में।
कि साचा आनन्द पाये, खुशी से मन हर्षाये।
बड़े ही पुण्य कर्मों से दर्शन, सतगुरुदेव का पाया।।

2. छोड़ के अपना धाम प्रभु जी, धराधाम पे आये।
भूले भटके जीव बेचारे, अपने संग मिलाये।
कि चरणों के संग बिठा के, प्रेम का जाम पिला के।
इस जीवन का मकसद क्या है, भेद रूहानी बताया।।

3. त्रैलोकी में महिमा फैली, शान प्रभु की निराली।
लाखों ही जीवों ने यहाँ, बिगड़ी तकदीर बना ली।
कि रहमत प्रभु की पाके, सीस चरणों में झुका के।
पाई दात रूहानी जिस का, मोल न जाये चुकाया।।

4. क्या गुण गाऊँ तेरे भगवन, तेरा कोई न सानी।
अपना दास बनाया जो तूने, तेरी मेहरबानी।
घड़ी भागों से पाई, मिली तेरी रहनुमाई।
किरपा कर के तूने हमको, मोह बन्धन से छुड़ाया।।

भजन नं. 79

तर्ज़-यह कहानी है दिये और तूफान की।

टेक-श्री सतगुरु ने किया उपकार है।

बनाया अनुपम निराला दरबार है।।

1. लगता कितना प्यारा प्यारा, है त्रैलोकी से यह न्यारा।

सतपुरुषों का यह फरमान है।

यह दरबार है रूहानी, इसका कोई न सानी।

महिमा इसकी जग में महान है।

जो भी जीव यहाँ पे आता, मुँह माँगी मुरादें पाता।

ऐसा कल्पवृक्ष दरबार है।।

2. क्या महिमा तेरी गाऊँ, इतनी शक्ति कहाँ से लाऊँ।

तेरी महिमा अगम अपार है।

तेरा भेद नहीं किसी पाया, ऐसी तेरी अदभुत माया।

हैरत में हुआ संसार है।।

तेरे प्यार में यह तासीर, मेटे जन्म जन्म की पीर।

सब सुखों का तू भण्डार है।।

3. मेरे सच्चे पिता माता, भक्ति मुक्ति का तू दाता।

सन्तों का तू सिरताज है।

प्राणों से भी प्यारे स्वामी, रास आई तेरी गुलामी।

मेरे दिल की यही आवाज़ है।

जब से पाया है दर तेरा, हो गया रोशन हिरदे मेरा।

हुआ दूर सकल अन्धकार है।।

भजन नं. 80

तर्ज़-बहुत प्यार करते हैं----।

टेक-करो सतगुरु मुझ पे दया की नज़र।
जनमों की बिगड़ी मेरी जाये सँवर।।

1. तेरे चरणों में दाता जन्नत है मेरी।
मेरे दिल में अंकित उल्फत है तेरी।
करूँ तुझ को सजदा शाम-ो-सहर।।

2. तेरी चरण शरण है किस्मत से मिलती।
हर इक बला तेरी रहमत से टलती।
सदा अंग संग हो तुम भला फिर क्या डर।।

3. सिवा तेरे कोई नहीं मेरा भगवन।
सर्वस्व करूँ तेरे चरणों में अर्पण।
चरणों में बिताऊँ तेरे सारी उमर।।

4. आया हूँ बन के मैं भी सवाली।
कभी तेरे दर से न गया कोई खाली।
प्यार से दास का दामन दो भर।।

भजन नं. 81

तर्ज़-क्या करूँ मेरा दिल दीवाना---।

टेक-अपने चरणों में सतगुरु जी दे दे स्थान।
इतना कर दे ऐसा सतगुरु मुझ पे एहसान।।

1. पूरी कर दे प्रभु अभिलाषा मेरी।
आया ताँते प्रभु मैं शरण तेरी।
दे दे मुझको थोड़ा सा भक्ति का दान।।

2. भक्ति मुक्ति का तू है दातार प्रभु।
सुख शान्ति का तेरा है द्वार प्रभु।
फैली जग में है तेरी यह महिमा महान।।

3. और कोई न दिल में आस रही।
तेरे प्यार की बस इक प्यास लगी।
इक घूँट पिला दे ऐ मेहरबान।।

4. अपने चरणों का दास बना ले मुझे।
तुझ बिन मुझको कुछ भी न सूझे।
मेरे लब पे हो तेरा सदा गुण-गान।।

भजन नं. 82

तर्ज़-जिया बेकरार है----।

टेक-लिया सन्त अवतार है, बहुत किया उपकार है।
सुख का सागर सतगुरु मेरे, तेरा यह दरबार है।।

1. बड़े भाग वाले ही प्राणी, इस दरबार में आते हैं।
तेरा सुन्दर दर्शन पाकर, अपना भाग मनाते हैं।
जो बोले जयकार है, उसका बेड़ा पार है।।

2. जन्म जन्म का भूला भटका, मैं भी शरण में आया हूँ।
यह ना देखो कैसा हूँ मैं, देखो न क्या लाया हूँ।
दया तेरी दरकार है, साची तू सरकार है।।

3. मेरे प्यारे सतगुरु दाता, जग के तारणहारे हो।
दीन दुखी जीवों के भगवन, तुम्हीं एक सहारे हो।
पाया तेरा प्यार है, दास सदा बलिहार है।।

भजन नं. 83

तर्ज़-मिले सतगुरु जी दिल बहार हो गया ।

टेक-देखो घड़ी कितनी भागों वाली आई।
होवे सब को बारम्बार बधाई।।

1. उन्नीस सौ छब्बीस का था वर्ष सुहाना।
बीस सितम्बर को हुआ प्रभु का आना।
पंचम रूप में प्रकटी ज्योति इलाही।।

2. जब जब भी धरती पे भार बढ़ा।
तब तब ही प्रभु ने अवतार लिया।
अपने भक्तों की आकर लाज बचाई।।

3. प्रेमी भक्तों की सुनके प्रभु ने पुकार।
आये जग में मानुष रूप को धार।
सच्चे नाम की घर घर धूम मचाई।।

4. हम दासों की प्रभु यह है दुआ।
रहे कायम सदा ही राज़ तेरा।
मिलती रहे हम को तेरी रहनुमाई।।

भजन नं. 84

तर्ज़-चन्दन सा बदन----।

टेक-ऐ मेरे सतगुरु, ऐ मेरे मालिक,इक आस हमें बस तुम्हारी है।
तेरी प्रीत को पाने की खातिर,झोली तेरे दर पे पसारी है।।

1. आए हैं प्रभो हम आस लगा, तेरे चरणों का प्यार मिले।
निसदिन ही हमको ऐ दाता,तेरा पावन दीदार मिले।
कोई और तमन्ना ना दिल में, चाहिए बस दृष्टि तुम्हारी है।।

2. जैसे तैसे हम जीव प्रभो,अब शरण तुम्हारी आए हैं।
चरणों में रख लेना हमको, दुनियाँ से बहुत घबराए हैं।
ऐ दाता जी उपकार करो,तेरा नाम ही पर उपकारी है।।

3. भूले से भी ऐ सतगुरु जी,कभी तेरा नाम ध्याया ना।
जी भर के हमने ऐब किये,कोई नेक करम भी कमाया ना।
बख्शो हमको सतगुरु स्वामी,श्री चरणों में अर्ज़ हमारी है।।

4. अब ऐसी किरपा करो मुझ पे, कभी दूर न तुझ से हो जाऊँ।
हर पल तेरी सेवा पूजा करूँ,और महिमा तेरी सदा गाऊँ।
तू स्वामी मेरा है दाता, यह दासनदास पुजारी है।।

भजन नं. 85

तर्ज़-तेरी दुनियाँ से दूर----।

टेक-श्री सतगुरु जी, मेरी सुनो विनती, बख्शो अपनी भक्ति।

1. मेरे सच्चे पिता माता, तू है भक्ति का दाता, जाने संसार।
तेरे संग मेरा नाता, मेरे भाग्य विधाता, दीजै अपना प्यार।
ऊँची शान तेरी, भर दो झोली मेरी, बख्शो अपनी भक्ति।।

2. माया ने है भरमाया, तेरा नाम जो भुलाया, सुख पाया नहीं।
कर वो मुझ पे सतगुरु दाया,मेरा जी घबराया, ओट गही मैं तेरी।
दृष्टि किरपा की करो,मेरे दुखड़े हरो,बख्शो अपनी भक्ति।।

3. तू है रहमत का सागर,नाम जग में उजागर, बाँह पकड़ो मेरी।
जीवन जाये सँवर,मिट जाये चिन्ता फिकर, हो जाये किरपा तेरी।
भूलूँ तेरा न एहसान, ऐ मेरे भगवान, बख्शो अपनी भक्ति।।

4. तेरे चरणों का हूँ चेरा, काटो चौरासी का फेरा, मेरे दाता जी।
मेरे हिरदै लाओ डेरा,पाऊँ दर्शन हर पल तेरा,विनती मान मेरी।
मेरे सतगुरु दीनदयाल,करदो दास को निहाल,बख्शोअपनी भक्ति।

भजन नं. 86

तर्ज़-मिलो न तुम तो-----।

टेक-दुनियाँ से अन्धकार मिटाने, ज्ञान का दीप जलाने।

सतगुरु आ गये हैं।।

तूफानों से हमें बचाने, नैय्या पार लगाने।

सतगुरु आ गये हैं।।

1. पाप कर्मों से पाला बन्दे शरीर है।

मोह माया की ऊपर से पहनी जंज़ीर है।

जीव के माया बन्ध छुड़ाने,जग से मुक्त कराने,सतगुरु---।

2. माना तेरे घर में करोड़ों का माल है।

नाम के बगैर बन्दा अजहद कंगाल है।

नाम का सच्चा धन लुटाने,मालामाल बनाने,सतगुरु-----।

3. दुनियां का सहारा झूठा,झूठी है प्रीत संसार की।

नाम का सहारा सच्चा,ले शरण सच्ची सरकार की।

नाम का गहरा रंग चढ़ाने, दिल की मैल हटाने,सतगुरु---।

4. गुरु महिमा गा सके जो, शक्ति कहाँ है इन्सान की।

गुरु दरबार मिला कृपा है कृपानिधान की।

अपना दासनदास बनाने,सच्चा राह दिखाने, सतगुरु-----।

भजन नं. 87

तर्ज़-जब जब बहार आई----.

टेक-जब हो धर्म की हानी, और पाप बढ़ते जायें,भगवन धरा पे आयें।
भक्ति भजन से बेमुख, जीवों को आ जगायें,भगवन धरा पे आयें।।

1. झूठे इस जगत में, सार नहीं है कोई।
प्रभु चरणों के सिवाये, आधार नहीं है कोई।
गफलत की नींद सोये, जीवों को आ जगायें, भगवन----।।

2. भक्ति के ही कारण, जग में हुआ है आना।
मकसद से कहीं प्राणी, गाफिल हो न जाना।
परम हितैषी सतगुरु, मन्ज़िल की राह बतायें,भगवन-----।।

3. निराकार साकार बन के, हरते चौरासी पीड़ा।
लोक परलोक का है, सतगुरु उठाया बीड़ा।
परमहँसअवतार ले के, भव-बन्धन सब कटायें,भगवन------।।

4. हमेशा धर्म की खातिर, प्रभु ने अवतार लीन्हा।
भक्तों का संकटों से, आ के उद्धार कीन्हा।
सही रास्ता दिखा के, दुष्कर्मों से बचायें, भगवन----------।।

5. बेड़ी में नाम वाली, सतगुरु तुम्हें बिठायें।
अनुकम्पा से ही अपनी, भव-पार फिर लगायें।
दासा पुकार सुन के, बन कर्णधार आयें, भगवन----------।।

भजन नं. 88

तर्ज़-देख तेरे संसार की-----।

टेक-कलयुग में अब तारण आये त्रेता युग के राम।
मेरे सतगुरु बड़े महान।।

1. युग युग के हैं ये अवतारी, त्रेता में सब दुनियां तारी।
दुष्टों का सब मान मिटाया,ऋषियों का किया कल्याण।।

2. श्रद्धा प्रेम मन में भर लो, ये ही राम हैं दर्शन कर लो।
भक्ति मुक्ति के दाता, सर्व सुखों की खान।।

3. जब भी प्रेमी इन्हें बुलाते, सचखण्ड प्रभु छोड़ के आते।
भक्तों के दुखड़ों को हरना, ये है इनका काम।।

4. युग युग हो प्रभु राज तुम्हारा,मिलता रहे प्रभु तेरा सहारा।
दासनदास ये माँगे सतगुरु तुझ से ये वरदान।।

भजन नं. 89

तर्ज़-यह रात सुहानी है---।

टेक-आई ऋतु सुहानी ये लेकर खुशियों की बहार।
ज्योति नूरानी ने कलयुग में लिया अवतार।।

1. पतझड़ ने विदाई ली ऋतुओं का आया ऋतुराज।
आज के शुभ दिन प्रगटे द्वितीय श्री महाराज।
ज्योति लासानी ये महिमा है अपरम्पार।।

2. छाया था अविद्या का इस धरा पे अन्धेरा घोर।
मन मोहनी माया ने फैलाया जाल चहुँ ओर।
उस वक्त में सतगुरु जी ने रहमत की है अपार।।

3. निराकार ब्रह्म ने खुद सन्त रूप में लिया अवतार।
अर्शों से उतर करके किया दूर भूमि का भार।
कण कण में खुशी का नया फिर से हुआ संचार।।

4. ध्वजा नाम की फैहराई घोर कलिकाल अन्दर।
पर हित कारण प्रभु ने रहे लाखों कष्ट तन पर।
दशा देख के जीवों की आये प्रभु करुणाधार।।

5. प्रेमी भक्तों ने प्रभु की देखी प्यारी छवि।
अनुपम मन हरने वाली सुन्दर लीलाएं भी।
जयकारों की ध्वनियों से झूम उठा संसार।।

6. युग युग अटल रहे दरबार ये रूहानी।
बीते इनके चरणों में सारी ये ज़िन्दगानी।
हर जनम में ये बने दास सेवादार।।

भजन नं. 88

तर्ज़-जहाँ डाल डाल पर-----।

टेक-जग में प्रकटे थे आज के दिन शाहों के शाह रूहानी।
उनकी है ये अमर कहानी।।

1. जब जब भी धरा ने आकुल स्वर से श्री चरणों में की गुहार।
तब तब प्रभु ने विविध रुप में दूर किया भूमि का भार।
पर उपकारी परमार्थ हित प्रकटी है ज्योति नूरानी।।

2. चहुँ ओर छा गई खुशहाली सुनकर आगमन की चर्चा।
जयकारों की मधुर धुन से नभ मण्डल सारा गूँज उठा।
सबको मुबारक होवे जी आई ये घड़ी सुहानी।।

3. 22 जनवरी1901 का शुभ मंगलवार की वेला में।
पुज्य पिता श्री चोखा राम जी और कँवर बाई माता जी बने।
पाकर के आपको हुये धन्य ये उनकी भाग्य निशानी।।

4. बचपन से आप सदा रहते थे शान्त एकान्त में प्रसन्न।
दिव्य आनन्द की मस्ती में रहते सदा सदा मगन।
दायें श्री चरण कमल में थी चक्र चिन्हों की निशानी।।

5. अभी आपकी आयु पाँच वर्ष की थी आपकी पुज्य मातेश्वरी ने।
आपको अपने संग ले गई कहीं पर भ्रमण के लिये।
मार्ग में कुछ जमघट देख कर हुई बहुत हैरानी।।

6. इस भीड़ के पास पहुँच देखा वहां था इक बैल खड़ा।
उसका मालिक जो प्रश्न करे उत्तर वो संकेत में देता था।
उनमें किसी ने प्रश्न किया कौन प्रभु का प्यारा जानी।।

7. कर भीड़ को एक तरफ बैल आ पहूँचा जी आपके पास।
जहां खड़े आप जी अपनी माता को पकड़े हुये थे हाथ।
उस बैल ने फिर कर संकेत बतलाया ये शाह रूहानी।।

8. सचमुच जिनके हृदय में भरी थी प्रेम भक्ति की भावना।
उन्होंने बालक रूप में अपना प्रभु पहचान लिया।
नतमस्तक होकर सीस झुका भक्तों के मानी तानी।।

9. उर्दू हिन्दी और फारसी लौकिक मर्यादा पूर्ण की।
पर दिल में साधु सन्तों की सेवा बड़ी प्यारी लगती थी।
अब गुरु भक्ति पर चलने की दिल में निश्चय ठानी।।

10. श्री दूसरी पातशाही जी के श्री चरण कमल में जा पहुँचे।
सुन्दर छवि को निरख कर दिल को बेकाबू कर बैठे।
चरणों में सर्वस्व अर्पण कर मौज पे चलने की ठानी।।

11. श्री दूसरी पातशाही जी के आप दिल के टुकड़े थे।
श्री तीसरी पातशाही जी भी विशेष दृष्टि रखते थे।
वह जानते थे इस सम्प्रदाय के आप हैं जाननशीनी।।

12. परमार्थ पथ के सिंहासन पर आप हुये विराजमान।
फरमाया हर गुरुमुख का फर्ज़ है सेवा भक्ति करे निष्काम।
मन वचन कर्म सच्चाई से ज़िन्दगी ये सफल बनानी।।

13. मीठी वाणी और दीनता के सदगुण अपने हृदय भरो।
तुम हँस हो हँसों की तरह प्रभु नाम के मुक्ता कण चुगो।
खुद को मिटाकर गुरु चरणों संग सुरति की तार मिलानी।।

14.आप समय की पाबन्दी पर, ज़ोर अत्यधिक देते थे।
जो नियम समय का पाबन्द नहीं वो आगे कभी नहीं बढ़ सकते।
सीधे और सरल इशारों से, समझाते थे राज़ रूहानी।।

15.फरमाते थे प्रेमा भक्ति में ऐसी अनोखी शक्ति है।
कुल मालिक इष्टदेव को भी अपने वश में कर लेती है।
ज्योति संग ज्योंत है मिल जाती ये प्रेम की अजब निशानी।।

16.ये दिव्य महान विभुतियाँ जब जब धरा पर हैं आती।
अपनी अनुपम लीलाओं से भक्तों को परम सुख पहुँचाती।
महिमा उपमा महान बड़ी जो जाये नहीं बखानी।।

17.इनके उपकारों का बदला हम कोटि जन्म न चुका सकें।
बस दिल में ये ही भावना है ये तख्त रूहानी फूले फले।
युग पुरुष श्री सतगुरु जी के चरणों में ज़िन्दगी बितानी।
जो दास के दिलवर जानी।।
सब बोलो प्रेम से जैकारा मिले शाहों के शाह रूहानी।।

भजन नं. 89

तर्ज़-दीदी तेरा देवर-------।

टेक-आये परमार्थ के काज, इस धरा पे मेरे प्रभु जी।
रखने आये भक्तों की लाज इस धरा पे मेरे प्रभु जी।।

1. जब जब होती धर्म की हानि तब तब ही प्रगटी ये ज्योत नूरानी।
मुबारक हो शुभ दिन आज, धराधाम पे आये प्रभु जी।।
2. कलिकाल का जोर हुआ जब भारा,मायाअज्ञान का छाया अन्धियारा।
रोशनी फैलाई बेहिसाब-इस धरा पे मेरे प्रभु जी।।
3. छोड़ अर्श को आये फर्श पे लाखों ही कष्ट उठाये निज तन पे।
भक्तों को करने शाद, धरा धाम पे आये प्रभु जी।।
4. सच्चे नाम धन की देकर शिक्षा रुहानियत का बजाया डंका।
जग से किया बे मुहताज दयावान बन के प्रभु जी।।
5. दुनियां में कोई न सानी तुम्हारा भवसिन्धु पार उतारनहारा।
दिल को है तुम पर नाज तुम ही प्राण हो मेरे प्रभु जी।।
6. युगों युगों अटल रहे तेरा राज,चरणों में दास की ये फरियाद।
पाऊँ सदा तुम्हें संग साथ हर जन्म में मेरे प्रभु जी।।

भजन नं. 90

तर्ज़-पहलां सतगुरु नूं अपना----।

टेक-हर पासे अज रौनकाँ बहारां, निराला कोई पीर आ गया।
इस घड़ी उत्तों की कुझ वारां, मैं सोहणा दीदार पा लिया।।
कि धरती ते रब आ गया।।

1. धुरधाम तों उतरी ऐ शक्ति, चौकुण्ठी विच महिमा फैली।
इसदे रूप दा वेख लिशकारा, जग ते निहाल हो गया।।

2. राम कृष्ण कदी नानक बनदे, हर युग विच आंदे रूप बदल के।
हुण रूप निराला ऐ धारा, कि भक्तां दे दिल नूं भा गया।।

3. प्रेमी जनां नूं छाई मस्ती, वेख के प्यारी सोहणी झाँकी।
दीवाना बनाया जग सारा, निराला कोई पीर आ गया।।

4. ब्रह्मा विष्णु स्तुति गाँदे, ऋषि मुनि सारे ध्यान लगांदे।
मंगदे चरणां दा ओह वी सहारा,तेरे नाल दिल ला लिया।।

5. युग युग राज करो रहो सलामत, रोशन जहां मेरा तेरे नाल मालिक।
रहे सिर ते अटल तेरा साया, तेरे नाल प्यार पा लिया।।

6. सबनूं मुबारिक कोटि मुबारिक 20 सितम्बर मुबारक।
अजदा दिन बड़ा करमां वाला, कि मैं ता मालामाल हो गया।।
कि मैं ताँ निहाल हो गया।।

भजन नं. 91

तर्ज़-आये हो मेरी ज़िन्दगी में-----।

टेक-धुरधाम से ये उतरी ऊंची महान हस्ती।
सारे जहां में फैली इसकी अपार ज्योति।।

1. निराकार ब्रह्म ने खुद साकार रूप धारा।
अधर्म को मिटाया भूमि का भार टारा।
प्रेमी जनों के दिल में छाई अनूठी मस्ती।।

2. चरणों में इनके बहती भक्ति की निर्मल धारा।
श्री वचनों में भरा है वेदों का तत्व सारा।
करता जो इसमें मज्जन राहत वो पाये सच्ची।।

3. दिन आज का सुहाना सबको होवे मुबारिक।
करूं भेंट नज़राना ये दिल भी तुमको मालिक।
सदा सामने विराजो यही चाहना है दिल की।।

4. युग युग रहे सलामत नूरानी जल्वा प्यारा।
इसके ही नूर से है रोशन जहां सारा।
रहे साया दास पर ये यही भावना है दिल की।।

भजन नं. 92

तर्ज़-ए सिर है अमानत----।

टेक-इक खास रूहानी मकसद ले, सतपुरुष जहां में आते हैं।
मोह माया में भटके जीवों को, वे सतमार्ग दर्शाते हैं।।

1. है जीव को चाहत खुशियों की, पर खोजता जग सामानों में।
जो खान है सारे सुखों की, उस भक्ति के गुण बतलाते हैं।।

2. स्वाँसों का भरोसा नहीं कोई, फिर लौट के आये या न आये।
तुझे भव से पार लगाने को, वे अजपा जाप सिखाते हैं।।

3. उस सफर का जोड़ ले तू खर्चा, इक दिन जो अचानक करना है।
काम आयेगी पूँजी भक्ती की, यही सन्त तूझे समझाते हैं।।

4. नहीं सतगुरु जैसा दाता कोई, चाहे खोज ले दासा त्रैलोकी।
भक्ति की बख्श के दात सच्ची, जो दोनों लोक बनाते हैं।।

भजन नं. 93

तर्ज़-होठों से लगा लो तुम--।

टेक-तेरे प्यार पे ऐ सतगुरु, मेरा दिल कुरबान रहे।
श्री चरणों में हरदम, मेरा पूरण ध्यान रहे।।

1. दीदार बिना दिल को, पल चैन नहीं आये।
सेवा पूजा तेरी, मुझको हरदम भाये।
तेरे प्रेम में खो जाऊँ, न कुछ भी ज्ञान रहे।।

2. तेरी याद बिना कुछ भी, दिल में न मेरे आये।
इस जग की मोह ममता, मुझको न फँसा पाये।
मेरा हर इक स्वाँस प्रभो, जपता तेरा नाम रहे।।

3. दो ऐसा वर सतगुरु, तुझको ही रिझाऊँ मैं।
तेरे प्यार का दीपक ही, हृदय में जलाऊँ मैं।
यह दासनदास सदा, गाता गुणगान रहे।।

भजन नं. 94

तर्ज़-रहा गर्दिशों में-------।

टेक-चरणों में अपने रख कर दे प्रेम का सहारा।
नैय्या मेरी को सतगुरु मिल जायेगा किनारा।।

1. दरबार तेरे आकर तुझ से प्रभो ये चाहूँ।
नज़दीकी तेरी पाकर दुनियां को भूल जाऊं।
कब से मैं मुन्तज़िर हूँ कर दे कोई इशारा।।

2. कैसे भुला दूँ ये दिन तुम मुझपे मेहरबाँ हो।
हर हाल साथ मेरे हर तौर निगहबान हो।
मँझधार हो या साहिल मुझको तेरा सहारा।।

3. अज्ञानी जीव हूँ मैं खुद राह पर लगा दो।
भक्ति की चाह बख्शो माया का मोह मिटा दो।
सेवा का भाव बख्शो भगवन मुझे न्यारा।।

4. औरों की आस छूटे तुझसे ये दिल जुड़ा हो।
तन मन में और मेरे प्राणों में तू बसा हो।
धुल जाये तेरे प्यार से दिल का गुबार सारा।।

5. बल हार के मैं सारे बलिहार तेरे जाऊँ।
अपने पराये भूलूँ तुझ से ही नेह लगाऊँ।
दुनियाँ से क्या गर्ज़ है जब दास को तू प्यारा।।

भजन नं. 95

तर्ज़-रुक जा ओ जाने------।

टेक-आया शरण तेरी आया, इक दृष्टि मेहर की फिरा दे।
तेरी महिमा को सुनकर आया, मेरा सोया मुकद्दर जगा दे।।

1. ओ सुख सागर स्वामी, तेरी शरण में आया हूँ।
जग जंजाल से दाता, मैं बहुत घबराया हूँ।
मेरे दुःख दर्द सारे मिटा दे।।

2. रहमत की चादर फैला, मेरे अवगुण सभी ढक दो।
अपने चरणों की छाया तले, ऐ स्वामी मुझे रख लो।
अपनी भक्ति के रंग में रंगा दे।।

3. बिन तेरे मेरे दाता, और कोई न हमारा है।
कोई अपना नहीं पाया, देखा जग सारा है।
मुझे अपनी शरण में लगा ले।।

4. दास के प्राणधन सतगुरु, रहूँ सेवा में तेरी मगन।
पाऊँ दर्शन तेरा मैं सदा, तुझसे राता रहे मेरा मन।
मय प्रेम की ऐसी पिला दे।।

भजन नं. 96

तर्ज़-विराजो आन कर भगवन----।

टेक-मुहब्बत का अगर बख्शिश, मुझे इक जाम हो जाये।
तेरा भी नाम हो जाए, मेरा भी काम हो जाये।।

1. हो दिल में जुस्तुज़ू तेरी, ख्यालों में हो तू ही तू।
तुम्हारा नाम ही बस लब पे, सुबह-ो-शाम हो जाये।।

2. जो पी लेते हैं मय उल्फत, की तेरे दर पे आ करके।
यकीनन उनके बेकल दिल, को फिर आराम हो जाये।।

3. मुबारिक मौज पे तेरी, झुकाऊँ सर अकीदत से।
नक्श दिल में मेरे तेरा, हर इक कलाम हो जाये।।

4. नज़र आये फकत तस्वीर, तेरी हर तरफ सतगुरु।
जो दासनदास की आँखों, में तेरा कयाम हो जाये।।

भजन नं. 97

तर्ज़-उठ जाग मुसाफिर-----।

टेक-मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान तुम्हारे चरणों में।
है बेनती यही पल पल छिन छिन, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

1. संकट ने मुझको घेरा हो, चाहे चारों ओर अन्धेरा हो।
यह चित्त न डगमग मेरा हो , रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

2. चाहे वैरी सब संसार बने, मेरा जीवन मुझपे भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने ,रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

3. काँटों पे मुझको चलना हो, चाहे अग्नि में भी जलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

4. जीभा पर तेरा नाम रहे , यही काम मेरा सुबह शाम रहे।
बस ध्यान तेरा भगवान रहे , रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

भजन नं. 98

तर्ज़-जोत से जोत जगाते चलो---।

टेक-किरपा ऐसी सतगुरु करो, हर पल करें हम तेरा सुमिरण।
प्रेम प्याला पिला दे ऐसा, लग जाये नाम में हमरी लगन।।

1. नाम तेरे में हम खो जाये, और कोई न हो काम।
साँझ सवेरे रटते रहें हम, तेरा प्यारा नाम।
हो जाये घट में तेरा दर्शन।।

2. माया के धोखे में न आयें, ऐसा हमको बना दो।
किरपा से अपनी ऐ सतगुरु, नाम की ज्योति जगा दो।
सुरत शब्द का हो जाए मिलन।।

3. लाखों ने तेरे नाम को जप के, जीवन अपना सँवारा।
हम पे भी तेरी किरपा हो जाये,बन जाये काम हमारा।
आये आस लेकर तेरी शरण।।

4. बनके दासनदास तुम्हारे, गीत सदा तेरे गायें।
जिस विधि रीझो ऐ दाता जी, वैसे ही तुमको रिझायें।
पूजेंगे सदा तेरे चरण।।

भजन नं. 99

तर्ज़-मुझे रास आ गया------।

टेक-चाहत में तेरी सतगुरु, दिल हो गया दीवाना।
तेरी शरण में पाया, खुशियों का सब खज़ाना।।

1. तेरे ऊँचे दर के देखे, ऊँचे असूल हमने।
तभी दाखिला लिया है, तेरे स्कूल हमने।
पाठ रूहानियत का, नित नित हमें पढ़ाना।।

2. सच्चाई नम्रता का, हमें ऐसा ज्ञान देना।
निर्मान रह के सीखें, दूजों को मान देना।
सुमति सब को बख्शो, अब तो कृपा-निधाना।।

3. इनायत करो सभी को, सेवक धर्म की शिक्षा।
आये पसारे दामन, यही लेने तुम से भिक्षा।
नहीं तुझ सा कोई दाता, देखा है कुल जमाना।।

4. सदा प्रेम भक्ति की ही, करते हैं याचना हम।
इसके सिवा न कोई, रखते हैं कामना हम।
दासों का प्रभु सहारा, तू हमेशा बन के आना।।

भजन नं. 100

तर्ज़-तुझे जीवन की डोर से---।

टेक-मैंने तुम से ही प्रीतम प्यार किया है।
जो भी तेरा हुक्म सिर आँखों पर।
मैंने तुम पे दिलो जां निसार किया है, जो भी----।

1. मेरे दिल पे ऐ सतगुरु तेरा राज है।
मुझे रहमत पे तेरी बड़ा नाज़ है।
छुपाये रखते हैं शीशा-ए-दिल में प्रभु।
तेरी मूरत को हम, मूरत को हम।।

2. दुखड़े संगदिल जहाँ से हज़ार मिले।
इससे फूलों के बदले खार मिले।
नहीं तुझ बिन है कोई दिल पे मेरे।
जो लगाये मरहम, लगाये मरहम।।

3. तू ही जीवन की कश्ती का है नाखुदा।
रखना चरणों में करना कभी न जुदा।
रहे मुझ पे हमेशा तेरी सतगुरु।
यूँ ही नज़रे-करम, नज़रे करम।।

4. तेरी प्रसन्नता पाना मेरा काम हो।
सदा मेरी ज़ुबाँ पे तेरा नाम हो।
बीते रहमत के साए में ऐ सतगुरु।
दास का हर जनम, का हर जनम।।

भजन नं. 101

तर्ज़-साजन साजन-----।

टेक-प्रेम भक्ति का दीजौ दान प्रभु जी।
पूरा कर दो यह अरमान प्रभु जी।।

1.फूल श्रद्धा के लिए द्वार पे आया।
दान भक्ति का दीजौ दामन फैलाया।
नाथ मेरे कीजौ चरणों की छाया।
होगा तेरा बड़ा एहसान प्रभु जी।।

2.रहे तेरे चरणों में मेरी सुरत लगी।
याद तेरी न भूले इक पल भी कभी।
नाम जपूँ मैं तेरा हर पल हर घड़ी।
करूँ तेरा सदा गुणगान प्रभु जी।।

3.दुःख दर्द रंज़ो-गम सारे दूर करो।
झोली भक्ति से प्रभु भरपूर करो।
विनती इतनी मेरी मन्ज़ूर करो।
नाम तेरा है मेहरबान प्रभु जी।।

4.हो गई किरपा तेरी ख्याल गैरों का हटा।
आसन तेरे लिये अब मेरा दिल है बना।
रोज़ रोज़ देखे दास तेरी राह।
अब दिल में विराजो आन प्रभु जी।।

भजन नं. 102

तर्ज़-ऐ मेरे दिले नादां---।

टेक-किस्मत लिखने वाले, करतार यही लिखना।
मेरे हिरदे के अन्दर, सतगुरु का प्यार लिखना।।

1. मेरे मस्तक पे लिखना, सतगुरु की ही तस्वीर।
नित ध्यान करूँ उनका, कोई चाहूँ ना जागीर।
नयनों में सतगुरु का, दीदार ही तुम लिखना।।

2. मेरी जिह्वा पर लिखना, सतगुरु का प्यारा नाम।
मैं और न कुछ चाहूं, जपूँ नाम मैं आठोंयाम।
कानों में शब्द की तुम, झंकार ही बस लिखना।।

3. मेरे हाथों में लिखना, इक सतगुरु की सेवा।
तन मन धन सब वारूँ, मेरा सतगुरु ही देवा।
जहाँ जाऊं पैरों से, गुरु-द्वार ही बस लिखना।।

4. मेरा सतगुरु से दाता, कभी नहीं बिछुड़ना हो।
पूरा जीवन साथ रहें, बस यही तुम लिखना हो।
बनूं दास मैं सतगुरु का, संसार का मत लिखना।।

भजन नं. 103

तर्ज़-बहुत प्यार करते हैं----।

टेक-आये हैं सतगुरु जी तेरे दर पे हम।
खुशियों के फूल खिले दूर हुए गम।।

1. झमेलों से दुनियाँ के तुमने छुड़ाया।
भक्ति की राह पे हम को लगाया।
दिल के मिटाये सब ही अंदेशे भरम।।
2. जब से हम आये हैं दर पे तुम्हारे।
जीवन के सब रंग-ढंग तुमने हैं सँवारे।
हम पे बना रहे यह तेरा करम।।
3. नाम प्रभु जी जो तुम ने दिया है।
सुमिरण उसी का जब हमने किया है।
मिट गए सारे ही रंज़ो-अलम।।
4. किया तुमने हम पे यह उपकार सतगुरु।
दिया चरण कमलों का आधार सतगुरु।
सहारा दिया तुमने हमें हर कदम।।
5. नयनों में मूरत तुम्हारी बसी हो।
तेरी याद दास के रग रग रमी हो।
तमन्ना यही अब तो करते हैं हम।।

भजन नं. 104

तर्ज़-गुरुमुख शरण गुराँ----।

टेक-मेरी वन्दना तेरे अगे बारम्बार प्रीतमा।

1. मैं हाँ दर तेरे दा चाकर, अर्ज़ी करदा सीस निवा कर।
जीवाँ दरस तेरा पाकर, हर हर बार प्रीतमा।।

2. तेरी महिमा किस मुख गावां, अपने औगुण तो शरमावां।
तेरा दर्श मनोहर चाहवां, ऐ आधार प्रीतमा।।

3. तेरी शरण दीनदयाला, मैं हाँ निपट अयाना बाला।
तेरी जय हो जुग जुग सालाँ, बख्शनहार प्रीतमा।।

4. दासनदास आया दर तेरे, तुझ सिमरण सुख घनेरे।
हृदय बसो सदा प्रभु मेरे, मैं बलिहार प्रीतमा।।

भजन नं. 105

तर्ज़-यशोमति मैय्या से----।

टेक-भक्ति का दान बख्शो, सतगुरु दातार।
भर दो प्रभु जी झोली, आया तेरे द्वार।।

1. भक्ति तेरी की दाता बहुत बड़ाई।
महिमा ऋषियों मुनियों मे गाई।
वेद और सन्त कहते, भक्ति सुख सार।।

2. किरपा कर दरबार यह बनाया।
प्रेम भक्ति का तूने पन्थ चलाया।
व्याकुल जीवों पे, किया उपकार।।

3. तेरे चरणों में मेरी सुरति लगी हो।
प्यारी छवि तेरी दिल में बसी हो।
हर पल पाऊँ मैं, तेरा दीदार।।

4. दास तेरे की यही है तमन्ना।
चरणों से दूर रहूँ मैं कभी ना।
विनती मेरी यह दाता, करो स्वीकार।।

भजन नं. 106

तर्ज़-तेरी याद आ रही है----।

टेक-तेरे दर के हैं भिखारी, भक्ति से दामन भर दो भगवन।
विनती है हमारी।।

1. जीवों के कल्याण की खातिर, तुम हो जग में आते।
लाभ उठाये वही जो तेरा दिल में प्यार बसाते।
दे उपदेश, हरते कलेश, रहमत के भण्डारी।।

2. दीनाबन्धु करुणासिन्धु हो जग के हितकारी।
सेवकजन की सदा ही करते प्रभु जी तुम रखवारी।
चरणों में तेरे, सुख हैं घनेरे, हम जायें बलिहारी।।

3. रहे भटकते जन्म जन्म अब तेरी, शरण हैं आये।
करो कृपा कि मोह माया हमको न अब भटकाये।
लगन लगायें, तुझे रिझायें, बन के तेरे पुजारी।।

4. चाह लिये प्रेमा भक्ति की आया दास है द्वारे।
मेरे तो इस जग में केवल तुम्हीं एक सहारे।
तुझ संग नाता, मेरे विधाता, रहे ज़िन्दगी सारी।।

भजन नं. 107

तर्ज़-रहा गर्दिशों में----।

टेक-इक सवाली मेरे दाता, आया है तेरे द्वारे।
चरणों का प्यार दे दो, यह अर्ज़ है गुज़ारे।।

1. तेरा प्यार पाने खातिर, तेरे द्वार पे हूँ आया।
है दिल में यह तमन्ना, पूजूं चरण तुम्हारे।।

2. दुनियां का प्यार झूठा, सच्चा है प्यार तेरा।
इस बात की गवाही, देते हैं सन्त सारे।।

3. हैं भाग्यशाली वे जन, जिन्हें प्यार तेरा मिलता।
जग में चमकते ऐसे, जैसे गगन में तारे।।

4. उपकारी सतगुरु जी, उपकार मुझ पे कर दो।
चरणों का दास बना लो, गाऊँगा गुण तुम्हारे।।

भजन नं. 108

तर्ज़-तेरी महफिल में मेरा वक्त-----।

टेक-मेरे प्रियतम मुझे बस एक तेरी आस रहे।
और न कोई भरोसा, न विश्वास रहे।।

1. जगत से कोई न गरज़, और न परवाह मुझको।
तेरी रहमत तेरे इक प्यार की, जो चाह मुझको।
यही पूँजी है जो मेरे पास रहे।।

2. मेरी नज़रों में तसव्वुर तेरा, यों छा जाये प्रियतम।
जिधर देखूँ तेरा जलवा, नज़र आये उधर प्रियतम।
मेरे दिल में जगह, तेरी ही बनी खास रहे।।

3. दिल में न रहे और, कोई तमन्ना बाकी।
हर दम रहूँ अलमस्त, तेरे प्यार में साकी।
तेरी उल्फत के सिवा,और न कुछ रास रहे।।

4. टूटे औरों से मेरी तार, जुड़े तुम से मेरे दिल की।
तुझ ही में समा जाऊँ प्रभु,आरज़ू है दिल की।
यह दास की अरदास सदा,तू ही मेरे पास रहे।।

भजन नं. 109

तर्ज़-बैठी हूँ राह गुज़र में-----।

टेक-भक्ति के दाता सतगुरु भक्ति चाहूं तुम्हारी।
मन में ले आया आशा, बन कर तेरा भिखारी।।

1. भण्डार सब गुणों का, भक्ति तेरी है स्वामी।
नेह तुझ से जो लगाये, निश्चय वह पाये प्राणी।
मिट जाये उस की मुश्किलें, चाहें हों कितनी भारी।।

2. चरणों की भक्ति से प्रभो, खुशहाल मुझ को कर दो।
इस सांचे धन से दाता, झोली मेरी यह भर दो।
केवल यही तमन्ना, मिट जायें और सारी।।

3. भक्ति बिना अनेकों ही, जन्म मैं गँवाये।
रह करके दूर तुझसे, लाखों ही कष्ट पाये।
अब शरण में पड़ा हूँ, लज्जा रखो हमारी।।

4. दासों का दास प्रभुवर, बलिहार तुझ पे जाये।
तेरे एहसानों को क्या, गिन गिन के कह सुनाये।
गर जानो दिल को वारूँ, फिर भी तेरा आभारी।।

भजन नं. 110

तर्ज़-दो भक्ताँ नूँ फोटो----।

टेक-तेरे चरणों में सर रख दिया है, भार ये उठाना पड़ेगा।
जैसा तैसा हूँ दाता मैं तेरा, चरणों से लगाना पड़ेगा।।

1. मैं जीव हूँ तेरे सहारे, जग से न्यारे हैं तेरे नज़ारे।
आज खोलो इलाही भण्डारा, जाम मुझको पिलाना पड़ेगा।।

2. मैंने तन मन तुझपे लुटाया, अपना साथी है तुझको बनाया।
हम तेरे हैं तेरे रहेंगे, मुझको अपना बनाना पड़ेगा।।

3. मैंने तुझ संग नेह लगाया, सारी दुनियाँ को मैंने भुलाया।
इक सतगुरु जी हैं मेरे अपने, सारे जग को सुनाना पड़ेगा।।

4. तेरे उपकार भूल न सकते, करके दीदार दुःख सारे कटते।
दास ने चरण पकड़े हैं तेरे, अब तो नाता निभाना पड़ेगा।।

भजन नं. 111

तर्ज़-बहुत प्यार करते हैं----।

टेक-तुम से बिछुड़ कई बीते जनम।
कब तक रहेंगे दूर तुम से हम।।

1. माया के धोखे ने हमको लुभाया।
दुनियाँ के झंझट में हमें है फँसाया।
भटकते रहे हैं कब से कदम।।

2. हमें हर घड़ी अब चाहत तुम्हारी।
तुम्हें सब खबर है प्रभु जी हमारी।
हम पर करो अब नज़रे-करम।।

3. तेरा दर हमेशा लगे हमको प्यारा।
मिलता रहे सदा तेरा सहारा।
दूर करो दास के दुःख दर्द गम।।

भजन नं. 112

तर्ज़-मुझे इश्क है तुम्हीं से-----।

टेक-भक्ति की दात बख्शो, ऐ भक्ति के भण्डारी।
भिक्षा प्रभु जी दे दो, माँगे है इक भिखारी।।

1. कहती है सारी दुनियाँ, भक्ति का तू है सागर।
खाली है झोली मेरी, भक्ति से दे प्रभु भर।
जन्मों तलक रहूँगा, तेरा प्रभु आभारी।।

2. जग के पदारथ मिथ्या, इनमें भरा है धोखा।
सुख नाम को नहीं है, अच्छी तरह से देखा।
इस फानी जग में केवल, तेरी भक्ति है सुखकारी।।

3. तुझ बिन ऐ मेरे भगवन, किसी और की न आशा।
तेरे प्यार का ही केवल, मनुआ मेरा है प्यासा।
इक जाम बस पिला दे, ऐ दाता पर उपकारी।।

4. न छूटे प्रेम तेरा, न भूले याद तेरी।
युग युग करूँ मैं सेवा, यह भावना है मेरी।
मुझे दास तू बना ले, करूँ पूजा मैं तुम्हारी।।

भजन नं. 113

तर्ज़-प्रभु तुम बड़े दिल के-----।

टेक-भक्ति दात लेने तेरे दरबार आया।
कर दे किरपा प्रभु दामन फैलाया।।

1. भक्ति मुक्ति का तू भण्डारी है।
तेरे दर पर झोली पसारी है।
कर दे थोड़ी सी सतगुरु जी दाया।।

2. मेरी तकदीर बिगड़ी बना दे तू।
मोह माया के बन्धन छुड़ा दे तू।
तेरी महिमा को सुनकर मैं आया।।

3. प्रेम भक्ति का भगवन ऐसा जाम दो।
नाम लब पर तेरा आठोंयाम हो।
प्यार तेरा ही दिल में हो समाया।।

4. तेरे चरणों की मुझको मिले खिदमत।
कर दे दास पे इतनी सी रहमत।
भाव हिरदय का तुझको है सुनाया।।

भजन नं. 114

तर्ज़-मेरी याद में तुम न----।

टेक-तुझे मन के मन्दिर में सतगुरु बसाऊँ।
निसदिन मैं श्रद्धा के फूल चढ़ाऊँ।।

1. गैरों के ख्याल न दिल में समायें।
मिटें मन की सारी विषय वासनायें।
सदा सेवा भक्ति की लगन मैं लगाऊँ।।

2. तेरी याद में मैने जग को भुलाया।
अपना बना के तुझे सब कुछ है पाया।
पल पल मैं प्रियतम तेरे गीत गाऊँ।।

3. मेरे अवगुणों को चित्त न धरो तुम।
रहमत की प्रभो जी नज़र करो तुम।
तेरी रहमतों पे मैं बलिहार जाऊँ।।

4. करुणा दया के भण्डार हो तुम।
दासनदास के आधार हो तुम।
चरणों में तेरे ही जीवन बिताऊँ।।

भजन नं. 115

तर्ज़-वह दिल मुझे अता कर----।

टेक-तेरी दया का तालिब, है दिल फकत यह मेरा।
हर रोम बन के चश्मा, देखे जलाल तेरा।।

1. हर स्वाँस तार मेरी, तेरे गीतों में गुँजाये।
रग रग में हो ऐ भगवन, तेरे रूप का बसेरा।

2. हो कर्म मुझ से ऐसा, तेरे दिल को जो सुहाये।
तू है तो ज़िन्दगी में, है चार सूं सवेरा।।

3. है मारफत की राहें, दया कर मुझे दिखाईं।
तू तू लगा गुँजाने, मैं-मैं उठाया डेरा।।

4. कहे दास पा लिया है, वह लुत्फ ज़िन्दगी में।
नज़रें उठा के दाता, जब दीन को है हेरा।।

भजन नं. 116

तर्ज़-इन्हीं लोगों ने-----।

टेक-भक्ति का रंग चढ़ाओ मेरे सतगुरु प्यारे।
दिल में आके बस जाओ मेरे सतगुरु प्यारे।।

1. मोह ममता के तोड़ के बन्धन।
अपने चरणों से जोड़ो मेरा मन।
माया से मुझको छुड़ाओ मेरे सतगुरु प्यारे।।

2. देकर सेवा श्री चरणन की।
धोवो मलिनता मेरे मन की।
सुमिरण भजन में लगाओ मेरे सतगुरु प्यारे।।

3. जग जंजाल से मुझको छुड़ाकर।
सुरति की तार शब्द से मिलाकर।
सब दुःख दर्द मिटाओ मेरे सतगुरु प्यारे।।

4. लीन रहे मन श्रेष्ठ कर्म में।
सुध-बुध भूले तेरी लगन में।
प्रेम का जाम पिलाओ मेरे सतगुरु प्यारे।।

5. भक्ति पथ पे बढ़ता ही जाऊँ।
पग न कभी मैं पीछे हटाऊँ।
दृढ़ता का पाठ पढ़ाओ मेरे सतगुरु प्यारे।।

6. माँगे दासनदास यही वर।
जन्म जन्म रहे तेरा चाकर।
किरपा का मेंह बरसाओ मेरे सतगुरु प्यारे।।

भजन नं. 117

तर्ज़-गुज़रा हुआ जमाना----।

टेक-दुःखड़े मिटाने वाले, दुखड़े मेरे मिटा जा।
ऐ दाता अब तो आजा।।

1. तेरे बिना ऐ सतगुरु, मेरा कोई न सहारा।
है देखा खूब मैं ने, स्वार्थ का जगत सारा।
तू ही है मीत सच्चा,आकर मुझे बचा जा।ऐ दाता--।।

2. तू ही बता मैं किस के, तेरे सिवा बुलाऊँ।
है कौन जग में ऐसा, जिसको व्यथा सुनाऊँ।
ऐ दीनों के सहारे, बिगड़ी मेरी बना जा। ऐ दाता---।।

3. दुखड़े जगत के सतगुरु,अब तो सहे न जायें।
गम्भीर भव-निधि में, कब तलक गोते खायें।
नैया फँसी भँवर में, इसे पार तू लगा जा।ऐ दाता--।।

4. तेरे सिवा न कोई, दीनों को जो बचाये।
माया के कठिन फँद से, जो आन के छुड़ाये।
जन्मों केइस दुखी को,इस जाल से छुड़ा जा।ऐ दाता।।

5. आवागमन में फँस कर,भटकी बहुत मेरी रूह।
इक पल न चैन पाया, तुझसे बिछुड़ के सतगुरु।
जन्मों की सोई किस्मत,सतगुरु मेरी जगा जा।ऐ दाता।।

6. दया का है तू भण्डारी, जग में है यश तुम्हारा।
जो भी तुझे पुकारे, देते उसे सहारा।
इस दास के भी सतगुरु,दुःखदर्द सब मिटा जा।ऐ दाता-।।

भजन नं. 118

तर्ज़-विराजो आनकर भगवन----।

टेक-तरसता हूँ मेरे सतगुरु, तेरा दीदार कब होगा।
मधुर मुस्कान से तेरी, यह मन गुलज़ार कब होगा।।

1. न पाऊँ दरस जब तेरा, तड़प उठे यह मन मेरा।
बिना तेरे मेरे सतगुरु, कोई गमख्वार कब होगा।।

2. लगन दर्शन की जब लगती, कसक इक मन में है उठती।
तन्हाई का मेरे सतगुरु, दूर अन्धकार कब होगा।।

3. तू भक्तों की अगर माने, तड़प में दर्द भी जाने।
तरसते जो हैं दर्शन को, उन का उद्धार कब होगा।।

4. दीवाने हैं बहुत तेरे, जो रहते हैं तुझे घेरे।
तेरे इस दास का उन में, कहो शुमार कब होगा।।

भजन नं. 119

तर्ज़-मेरी याद में तुम न-----।

टेक-तेरे दर पे बन के सवाली हूँ आया।
सदा रखना सतगुरु जी रहमत का साया।।

1. यह माया नागिन पीछे पड़ी है।
नीचा दिखाने पे ही यह अड़ी है।
तेरी दया बिन न कोई बच पाया।।

2. गलती का पुतला हूँ बख्शनहार तुम हो।
पापी अधम मैं तारनहार तुम हो।
कभी कोई अवगुण न तुम से छुपाया।।

3. जीवन की कश्ती का तू है खवैया।
तराओगे भव से तुम्हीं मेरी नैय्या।
हमेशा ही तूफान से है बचाया।।

4. कहीं तेरे दर बिना ठौर नहीं है।
राखनहार तुझ सा और नहीं है।
सदा दास ने सतगुरु को हमदर्द पाया।।

भजन नं. 120

तर्ज़-तेरे प्यार का आसरा----.

टेक-तेरा प्रेम पाने को जी चाहता है।
खुदी के मिटाने को जी चाहता है।

1. न कुछ और भाये, सिवा तेरे प्रियतम।
तेरे पास आने को जी चाहता है।।

2. दुनियाँ को देखा है खूब आज़मा के।
ठोकर लगाने को जी चाहता है।।

3. हकीकत दिखा दे हकीकत के वाली।
हकीकत के पाने को जी चाहता है।।

4. न ठुकराओ मेरी, यह फरियाद अब तुम।
तुम्हीं से निभाने को जी चाहता है।।

5. कहे दास सुन लो, मेरे प्राण प्यारे।
तुझ में समाने को जी चाहता है।।

भजन नं. 121

तर्ज़-भिखारी हाँ प्रभु जी----।

टेक-प्रभो प्यार से झोली मेरी भर दो।
है छोटी सी अर्ज़ मन्ज़ूर कर लो।।

1. भरो मेरी आँखों में जलवा नूरानी।
अन्धेरा सभी मोह का दूर कर दो।।

2. सुमिरण-भजन में जुड़े मन की वृति।
अचल प्रेम भक्ति का सरूर भर दो।।

3. कमी क्या तेरे घर भरे हैं भण्डारे।
दया की नज़र डार मखमूर कर दो।।

4. है रूह भूखी प्यासी कई जन्म से।
पिला प्यार का जाम तृषा इसकी हर लो।।

5. कहे दास हुज़ूरी में हाज़िर है सवाली।
नशे में मुहब्बत के बस चूर कर दो।।

भजन नं. 122

तर्ज़-गुरु जी तेरे चरणों----.

टेक-नज़रे करम मुझ पे प्रभुवर फरमाना।
मिले चरण कमलों में मुझको ठिकाना।।

1. मुझे गैर ख्यालों से रखना बचा के।
खुमार अपनी प्रीत का रखना चढ़ा के।
जो उतरे कभी न नशा वह पिलाना।।

2. अवगुण भरा तन है नाथ मेरा।
बख्शिश का सिर पे रहे हाथ तेरा।
गलत रास्ते से मुझको बचाना।।

3. तुम हो इष्ट मेरे तुम्हीं खुदा हो।
रहते हो दिल में सदा कब जुदा हो।
भक्ति का अमृत मुझको पिलाना।।

4. तेरी सेवा पूजा मेरा धर्म हो।
दासनदास पर ऐसा तेरा कर्म हो।
तेरा दर न छूटे कहे कुछ जमाना।।

भजन नं. 123

तर्ज़-साजन मेरा उस पार है----।

टेक-दीवाना मैं तेरे दीदार का।
तालिब हूँ बस तेरे प्यार का।।

1. दुनियाँ की मुझको परवाह नहीं।
किसी जग वस्तु की चाह नहीं।
प्रेमी हूँ तेरे दरबार का ।।

2. तेरा दर छोड़ के जाऊं कहाँ।
ऐसा सच्चा सुख मैं पाऊँ कहाँ।
झूठा है प्यार संसार का।।

3. तेरी महिमा मैं नित गाता रहूँ।
दर्शन तेरा प्रभु पाता रहूँ।
नियम निभाऊँ दरबार का।।

4. मुझको तो और कुछ आता नहीं।
तेरे सिवा कुछ भाता नहीं।
दास को बल तेरे आधार का।।

भजन नं. 124

तर्ज़-प्यासे पँछी नील गगन----.

टेक-दर पे तुम्हारे ऐ सतगुरु जी, आया एक भिखारी है।
रहमत की बख्शिश कर दो, तेरे आगे झोली पसारी है।।

1. नज़रे-करम की खैर मिले तो, बदल जाये किस्मत मेरी।
चरण शरण में रहूँ हमेशा, सदा करूँ खिदमत तेरी।
करने भेंट सुमन श्रद्धा के, आया एक पुजारी है।।

2. तुझ सा दाता कोई नहीं, कहीं तेरे दर बिन ठौर नहीं।
दुःखी अनाथ अयानों का, कोई राखनहारा और नहीं।
बड़े नसीबों से जो मिलती, दुर्लभ शरण तुम्हारी।।

3. भक्ति और मुक्ति के दाता, तुम ही भव के खवैय्या हो।
शरणागत की हमेशा भगवन, पार लगाते नैया हो।
संकट मोचन और दुःख भंजन, तुझसा नहीं हितकारी है।।

4. इतना ऊँचा सच्चा दर नहीं, तेरे दर जैसा देखा।
जहाँ पे सहजे ही कट जाती, दुष्कर्मों की हर रेखा।
तुझ सा दयालु कोई नहीं, मैंने दुनियां देखी सारी है।।

भजन नं. 125

तर्ज़-मेरी याद में तुम न----।

टेक-जन्मों से भूला शरण तेरी आया।
चाहता हूँ मैं नाथ रहमत का साया।।

1. गये जन्म लाखों तेरा छूटा दामन।
रहा मन मचलता पड़ा जग कही उलझन।
सिवाय रंजो गम के, न कुछ हाथ आया।।

2. विमल भक्ति की धार अब तो बहा दो।
मृदुल पाद पदमों का मधुकर बना दो।
परस्तिश में तेरी ही लग जाय काया।।

3. सुरति शब्द से है सदियों से बिछुड़ी।
माया की रंगीनियों में है जकड़ी।
न इक पल भी सुख चैन जीवन में पाया।।

4. ये पाँचों मुझे पथ से भटका रहे हैं।
तेरे प्यार की राह से झटका रहे हैं।
कर दो मेरे नाथ इनका सफाया।।

5. अब तो करो मेरा निस्तार स्वामी।
शरण में रहूँ छूटे माया गुलामी।
दासनदास ने दर पे दामन फैलाया।।

भजन नं. 126

तर्ज़-ऐ मेरे दिले नादां----।

टेक-मैं आया शरण तेरी, मुझे अपना बना लेना।
मैं जीव हूँ भूलनहार, मुझको न भुला देना।।

1. माया और ममता का, जन्मों से सताया हूँ।
तुमसे मैं बिछुड़ा था, अब शरण में आया हूँ।
मुझे शरण में रख करके, झंझट से बचा लेना।।

2. तुम दीन दयालू हो, सबने ही बताया है।
त्रैलोकी में सतगुरु, नहीं तुम सा पाया है।
तुम तारनहारे हो, मुझे पार लगा देना।।

3. तुम समरथ हो सतगुरु, और अन्तर्यामी हो।
हूँ दास प्रभु तेरा, तुम मेरे स्वामी हो।
अपने चरणों से मुझे, हरगिज़ न जुदा करना।।

भजन नं. 127

तर्ज़-मेरा गीत अमर कर दो----।

टेक-मैं सेवक हूँ तेरा, और तू है मेरा भगवन।
खिल जाती मन की कली, पा के तेरा दर्शन।।

1. मेरा मन न उलझे कभी माया के सामानों में।
हो जाए मेरी गिनती, प्रभु तेरे दीवानों में।
रहे मेरी ज़ुबाँ करती, तेरी महिमा का गायन।।

2. मैं जीव अयाना हूँ, तुम देवों के हो देव।
श्री चरणों की मुझको, बख्शो निशदिन सेव।
रहूँ ध्यान में तेरे ही, आठोंयाम मगन।।

3. मनमोहिनी मूरत पे, जाऊँ मैं बलिहारी।
हर जन्म में तेरा ही, रहूँ भगवन आभारी।
बड़े भागों से प्रभु जी, पाई है तेरी शरण।।

4. यह दास भी द्वार तेरे, बन आया सवाली है।
नहीं किसी को लौटाया, कभी तूने खाली है।
निज प्रेमाभक्ति से, भर दो मेरा दामन।।

भजन नं. 128

तर्ज़-दिल लूटने वाले----।

टेक-सुणिया ए तूँ लखां तारे ने, अज मेरा वी तरण नूँ जी करदा।
पर तरण तों पहलाँ या रब्बा, दो गलां करन नूँ जी करदा।।

1. मन्नयाँ मैं ममता विच फँसया,कोई कर्म कमा वी न सकया।
मैं तोड़ जंजीराँ जगत दियां,तेरे दर ते आ वी न सकया।
पर फेर वी सारे झगड़े छड,तेरा पल्ला फड़न नूँ जी करदा।।
2. तूं सामने होवें न होवें,दिल विच फिरे तस्वीर तेरी।
जद ख्यालां दे विच आ जावें,तद ही तकदीर फिरे मेरी।
जी करदा ए जीन नूँ तेरे पिछे,तेरी खातिर मरण नूं जी करदा।।
3. तूँ देख भावें न देख मैनूं,ना सही ऐदी मैंनूं लोड़ नहीं।
लेकिन मेरे दिल विच नटवर, हुण तेरे सिवा कोई होर नहीं।
ताईंयों ते मुड़ मुड़ सर तेरे,चरणाँ च धरन नूं जी करदा।।
4. तूं देख भावें ना देख हरि, मेरे वल नज़र उठा अपनी।
न पापी दे वल लख लख के,हुण सतगुरु लाज बचा अपनी।
तेरा बनके ते मैनूं होर नहीं,अज किसे तों डरन नूं जी करदा।।
5. ऐ पूजा पाठ ते जप वी तेरे, मिलने दे ने हैन साधन।
क्यों दुनियाँदारी विच फँसया,फिर दास तेरे दा दुखिया मन।
हर पासे धोखा खा के ते, हुण नाम जपन नूँ जी करदा।।

भजन नं. 129

तर्ज़-जग वाला मेला यारो----.

टेक-पुकार रहा मैं प्रभु दीन बेचारा।
रहमत का प्रभु जी कर दो इशारा।।

1. विनती करूँ मैं दो हाथ जोड़ के।
आया शरण तेरी मैं जग छोड़ के।
दीजो प्रभु मुझ को चरण सहारा।।

2. अवगुण मेरे तुम न निहारो।
किरपा दृष्टि से पार उतारो।
लाखों को तूने भव पार उतारा।।

3. दुनियाँ से मैंने खाया है धोखा।
अच्छी तरह देखा और खूब परखा।
स्वारथ का है सब संसारा।।

4. जाम मुहब्बत का ऐसा पिला दो।
रग रग में मेरी अपना रूप बसा दो।
देखूं सदा मैं जल्वा प्यारा।।

5. तेरे चरणों का बनूँ मैं पुजारी।
सेवा पूजा करुँ निसदिन तुम्हारी।
तू मेरा स्वामी मैं दास तुम्हारा।।

भजन नं. 130

तर्ज़-ठहरो ज़रा सी देर----।

टेक-मन मन्दिर में सतगुरु, तेरी छवि बसाऊँ मैं।
भेंट कर श्रद्धा सुमन, तुझको सदा रिझाऊँ मैं।।

1. दुनियाँ में कुछ सार नहीं, केवल मन भटकाना है।
तेरे प्यार की दौलत बिना, साथ नहीं कुछ जाना है।
हरगिज़ काया और माया में,दिल न अपना फसाऊँ मैं।।

2. अवगुण किये अनेक मगर, हार कभी न मानी है।
फिर भी दिया ओट-आसरा, प्रभु तेरी मेहरबानी है।
बदला तेरे उपकारों का, कैसे भला चुकाऊँ मैं।।

3. इस मतलबी जहान में, इक तू ही मेरा नाथ है।
धोखा दिया सबने मगर, पाया तुझे सदा साथ है।
देवों के देव मिले मुझे, क्यों न फिर इतराऊँ मैं।।

4. काँटों से भरपूर हैं, चाहे प्यार की राहें प्रभु।
रक्षा करें अपने दास की, लम्बी तेरी चाहें प्रभु।
तुझ संग नाता प्रेम का, जन्मों जन्म निभाऊँ मैं।।

भजन नं. 131

तर्ज़-प्रभु तेरे दर्शन पे-----।

टेक-मोहे दान भक्ति का प्रभुवर दीजै।
करुणा भरी एक दृष्टि कीजै।।

1. लाया हूँ श्रद्धा के फूल मैं भगवन।
भेंट मेरी स्वीकार यह कीजै।।

2. जाम मुहब्बत का ऐसा पिला दो।
कि अंग अंग मेरे तन का भीजै।।

3. जिधर भी नज़र दौड़ाऊं अपनी।
तुम बिन मुझको कुछ भी न सूझै।।

4. श्री चरणों का दास बना लो।
विनती मेरी प्रभु मान यह लीजै।।

भजन नं.132

तर्ज़-मुझे और जीन की चाहत-----।

टेक-शरण तेरी सतगुरु दाता मैं आया।
करो मुझपे अपनी रहमत का साया।।

1. नहीं रास मुझ को प्रभु यह जमाना।
मुझे चरण कमलों में दो अब ठिकाना।
तुझ सा दयालु है किस्मत से पाया।।
2. मेरे अघ-अवगुण प्रभु न निहारो।
विरद जान अपना मुझको उबारो।
सदा शरणागत पे है करम फरमाया।।
3. करुँ भेंट क्या कुछ समझ न पाऊँ।
एहसानों का बदला मैं कैसे चुकाऊँ।
मेरा आपने सोया भाग्य जगाया।।
4. नहीं दिल में तेरे सिवा कोई चाहत।
तेरी शरण में ही पाऊँ सच्ची राहत।
तुझे मन के मन्दिर में अपने बसाया।।
5. मिले हर जनम में संग-साथ तेरा।
रहूँ दास बन के मैं ऐ नाथ तेरा।
सदा मुझ पे करना प्रभु अपनी दाया।।

भजन नं. 133

तर्ज़-ऐ मेरे दिले नादां----।

टेक-यही विनती करूँ सतगुरु, रहमत की कर दो निगाह।
सूझे न मुझे कुछ भी, तेरी उल्फत के सिवा।।

1. दिल में न समाये मेरे, दुनियाँ की कोई चाहत।
चाहत में तेरी ही, मेरे दिल को मिले राहत।
मैं याद करूँ तुझ को, सब कुछ और भुला।।

2. रहूँ हर दम सजदे में, इक तुम हो मेरे अपने।
देवों के देव मेरे, सदा देखूँ तेरे सपने।
चरणों से कभी अपने, मुझ को न करना जुदा।।

3. मेरे जीवन की कश्ती, तेरे है सहारे प्रभु।
तेरी नज़रे करम से यह, लग जाये किनारे प्रभु।
चरण कमलों में तेरे, बस इतनी है इल्तिज़ा।।

4. नहीं सारी त्रैलोकी में, प्रभु कोई तेरा सानी।
कटे चौरासी बन्धन, तेरी जब हो मेहरबानी।
तेरी सेवा पूजा करूँ, तुझे मन मन्दिर में बिठा।।

5. न देखना खोटे कर्म, मैं तो अवगुणहारा हूँ।
न गिराना नज़रों से, आखिर तो तुम्हारा हूँ।
रहे दास की जिह्वा पे, तेरा प्यारा नाम सदा।।

भजन नं. 134

तर्ज़-नज़र जिस पर----।

टेक-मुझे भक्ति की दौलत से, प्रभो भरपूर कर देना।
विनय इस दीन सेवक की, प्रभो मन्ज़ूर कर लेना।।

1. जपूँ मैं रात दिन सतगुरु, तेरे ही नाम की माला।
पिला के प्रेम का प्याला, मुझे मख्मूर कर देना।।

2. रहे न कामना जग की, कोई भी दिल में ऐ सतगुरु।
तू ही हो दिल में बस मेरे, दया यह हुज़ूर कर देना।।

3. न छूटे दर तेरा सतगुरु, हो अभिलाषा यही दिल में।
बीमारी मोह-ममता की, ऐ मालिक दूर कर देना।।

4. तेरे दासों का बनके दास, बिताऊँ ज़िन्दगी अपनी।
बख्श कर दीनता दाता, अहंता चूर कर देना।।

भजन नं. 135

तर्ज़-तू प्यार करे या ठुकराये----.

टेक-मेरी सुरति की डोर सदा भगवन, चरणों से तेरे बँधी रहे।
मेरा मन न जाये और कहीं, तेरी इतनी कृपा बनी रहे।।

1. इस जग में वफा की रीत नहीं, यहाँ किसी की सच्ची प्रीत नहीं।
बिन तेरे सच्चा मीत नहीं, इक तुझ से ही सुरति जुड़ी रहे।।

2. तुम सतगुरु अन्तर्यामी हो, मेरे तन प्राणों के स्वामी हो।
तुम मालिक देश अनामी हो, तेरी सेवा की लगन लगी रहे।।

3. तुम भक्तों के दुःख हरते हो, सच्ची दात से झोली भरते हो।
सदा रहमत ही तुम करते हो, तेरी नज़रे करम यूं बनी रहे।।

4. मन का मन्दिर मैं सजाऊँगा, तेरी मूरत उसमें बिठाऊँगा।
भक्ति से तुझ को रिझाऊँगा, ध्यान में दास के तेरी छवि रहे।।

भजन नं. 136

तर्ज़-दिल लूटने वाले----.

टेक-सतगुरु जी मेरे मन मन्दिर में, आकर दरस दिखा देना।
जन्म जन्म का भटका हूँ मैं, अब तो शरण लगा लेना।।

1. जन्म लिया था भजन करन को, पर माया ने भरमाया।
शब्द से मिलने दी न सुरति, इसको तन में अटकाया।
सुरत शब्द का मेल कराकर, अपने धाम पहुँचा देना।।

2. सुख ढूंढा पर मिला न जग में, सुख चरणों में है तेरे।
जग माया से छूट सकूँ मैं, यह बस में नहीं है मेरे।
माया फँद छुड़ा कर सतगुरु, सुख का जाम पिला देना।।

3. तेरे बिना ऐ प्रीतम जग की, और चीज़ मैं न चाहूँ।
करूँ मैं हरदम दर्शन तेरा, अन्त समय तुझको पाऊँ।
बनूँ मैं तेरे चरणों की रज, जोत में जोत मिला लेना।।

4. सत असत का ज्ञान सुना कर, अपना दास बना ले तू।
भटक न जाऊँ तेरे दर से, सच्ची राह दिखा दे तू।
जीवित मरूँ मर कर फिर जिऊँ, ऐसा योग सिखा देना।।

भजन नं. 137

तर्ज़-परवरदिगारे आलम----।

टेक-सतगुरु जी मेरे दाता, चरणों में दो ठिकाना।
हर जन्म में रहूँ मैं, बन के तेरा दीवाना।।

1. इस जग की आशा तज कर, तेरे हुज़ूर आया।
सुध बुध रही न कोई, ऐसा सरुर पाया।
रहमत का तेरी सतगुरु, तालिब है कुल जमाना।।

2. बदला चुका सकूँगा, तेरा दातार कैसे।
दामन फटा है मेरा, भरूँ तेरा प्यार कैसे।
मेरे औगुनों से डर कर, नज़रें न तुम चुराना।।

3. मेरी है काग-वृति, पर हंस तुम बना दो।
चुगूँ शुभ गुणों के मोती, ऐसा सबक पढ़ा दो।
इस दीन पर गुरु जी, इतना करम कमाना।।

4. यह जन्म अब प्रभु जी, श्री चरणों में बिताऊँ।
बन के मैं दास तेरा, सेवक धर्म निभाऊँ।
आया तेरी शरण में, अब लाज तुम बचाना।।

भजन नं. 138

तर्ज़-तू प्यार करे या----।

टेक-मैं जीव तुम्हारा हूँ सतगुरु, मुझको भगवन अपना लेना।
तन मन धन से दाता मुझको, अपनी सेवा मे लगा लेना।।

1. कोई न बना संगी साथी, सब छोड़ गये झूठे नाती।
इस दीन अनाथ अयाने को, चरणों के संग मिला लेना।।

2. मुझको विश्वास तुम्हारा है, मुझको बस तेरा सहारा है।
मारग चलते जब गिर जाऊं, तब हाथ पकड़ के उठा लेना।।

3. टूटी सी जीवन नैया है, अब होना पार समस्या है।
भवसागर की जल धारा में, बनकर मल्लाह तरा लेना।।

4. जन्मों तक जीव भटकता रहा, जग वालों का मुख तकता रहा।
छुड़वाकर सब की गुलामी से, अपना ही दास बना लेना।।

भजन नं. 139

तर्ज़-तुझको पुकारे मेरा प्यार----।

टेक-आ ही गया हूँ तेरे द्वार, ओ सतगुरु।
कब से खड़ा हूँ तेरी राह में। नैया लगा दो मेरी पार।।

1. माया की रचना ने सुरत हटा दी, दाता राह से तेरी।
दुखिया बनाया मुझको सर पर, पड़ी है आके दुख की अन्धेरी।
छाया हुआ है अन्धकार।।

2. जन्म जन्म का भटका आया हूँ दर पे, सुनकर महिमा मैं तेरी।
अवगुण न देखो मेरे कृपालु दाता, हर लो विपदायें मेरी।
तुझको पुकारे मेरा प्यार।।

3. विषयों के फन्दे से मुझको छुड़ाकर, सच्ची राह पे लगा दो।
काल और माया से पार लघाँ के सतगुरु, दास बना लो।
दण्डवत करूँ मैं बारबार।।

भजन नं. 140

तर्ज़-रिमझिम बरसता सावन----।

टेक-हर पल में हो सुमिरण तेरा,ऐसा बना प्रभु जीवन मेरा।
तेरी सेवा करते करते बीते हर क्षण मेरा।।

1. याद तेरी को सदा दिल में बसाऊँ।
आठों पहर तेरे गीत गाऊँ।
तेरे चरणों में ही रहे मन मेरा।।

2. जग में रहूँ पर जग से आज़ाद रहूँ।
तेरे बिन और न किसी का मोहताज रहूँ।
नाम तेरा हो सच्चा धन मेरा।।

3. ख्वाहिशें जग की न मुझको सतायें।
चिन्ता हरगिज़ न नज़दीक आये।
करता रहूँ पर चिन्तन तेरा।।

4. ऐसा तेरी पूजा में दास खो जाये।
मैं न रहूँ तू ही तू हो जाये।
सफल हो जाये नर तन मेरा।।

भजन नं. 141

तर्ज़-हे रि मैं तो प्रेम दीवानी-----।

टेक-हे सतगुरु स्वामी दीजो अपने श्री चरणों का प्यार।

1. जग के मोह में भटक कर बहुत जन्म हैं गँवाये।
रह के दूर चरण कमलों से जन्म जन्म दुःख पाये।
अब तो कृपा करो मेरे स्वामी बख्शो अपना आधार।।

2. जीवन नैया ज़र्ज़र मेरी और है दूर किनारा।
स्वार्थ का संसार है सारा कोई नहीं है सहारा।
एक भरोसा तुम्हरो प्रभो जी थाम लो अब पतवार।।

3. पतित उद्धारण नाम तिहारो सतगुरु दीन दयाल।
दीन दुःखी जीवों की करते तुम ही सदा संभाल।
कृपादृष्टि मुझ पर भी डारो करुणा के भण्डार।।

4. जिसने ओट गही तेरी सतगुरु उसकी राखी लाज।
दे के चरण सहारा सँवारे सब ही उसके काज।
दास भी आया द्वार पे तेरे सुन कर महिमा अपार।।

भजन नं. 142

तर्ज़-

टेक-जिस विधि चाहो उस विधि राखो न कोई जोर हमारा।
तुझ बिन भगवन इस दुनियां में न कोई और हमारा।।

1. टूटी फूटी नैया मेरी न कोई पतवार है।
सर पर है तूफान बला का कौन लगाये पार है।
कौन लगाये पार प्रभु जी काफी दूर किनारा।।

2. जीवन साथी झूठे निकले मुझे अकेला छोड़ गये।
एक एक झटके में सब प्रेम की डोरी तोड़ गये।
ये जीवन भी जीवन क्या है जीवन न दो दोबारा।।

3. दुःख सागर में डूब गये तो फिर तेरी बदनामी।
भिक्षा दो आनन्द की भगवन ऐ आनन्द के स्वामी।
दास का इस चोरों से कैसे हो छुटकारा।।

भजन नं. 143

तर्ज़-दिल को देखो चेहरा-----।

टेक-ऐ मेरे सतगुरु ऐ मेरे दाता, द्वार पे तेरे आया।
अपने चरणों की कर दो छाया।।

1. आस लिये प्रभु द्वार तेरे पे, आया है एक भिखारी।
अपने चरणों की भक्ति दे दो, दाता जी पर उपकारी।
करो ऐसी दया,चाहूँ तुझको सदा,तेरा रूप हो दिल में समाया।।

2. भूलनहार मैं जीव बेचारा, नख सिख भरा हूँ विकार।
खोज के देखा है जग सारा, तुझ सा न बख्शनहार।
बख्श मेरे गुनाह,अपनी शरण लगा,दुनियाँ से है दिल घबराया।।

3. तेरी सेवा तेरी पूजा, हरदम हो मेरा काम।
स्वाँस स्वाँस में ऐ मेरे दाता, ध्याऊँ सदा तेरा नाम।
चाहूँ यही वरदान,ऐमेरे भगवान,सदा तुझसे ही नेह हो लगाया।।

4. और न कोई दिल मे तमन्ना, ऐ मेरे सतगुरु जी प्यारे।
युग युग आऊँ भिखारी बनकर, दाता जी तेरे द्वारे।
दासबनूँ मैं तेरा,तू हो स्वामी मेरा,यही भाव है दिल में समाया।।

भजन नं. 144

तर्ज़-तू प्यार के या ठुकराये----।

टेक-हर जन्म में मेरे सतगुरु जी, तुझ संग ही मेरा साथ रहे।
मैं सेवक बन के रहूँ तेरा, और तू ही मेरा नाथ रहे।।

1. दुनियाँ भरमाने न पाये, और ख्याले गैर न आ पाये।
आँखों में मेरे सतगुरु जी, इक ध्यान तेरा दिन रात रहे।।

2. संचित शुभ कर्मों का है सिला, जो आप का सच्चा प्यार मिला।
चरणों में गुज़रे इसी तरह, जीवन में चाँदनी रात रहे।।

3. माया ने भक्ति छुपाई है, सतगुरु ने आ प्रकटाई है।
सन्तों की सेवा से निशदिन, सदा मिलती सच्ची दात रहे।।

4. तेरे रिझाने का कोई सलीका नहीं, तेरे पाने का आता तरीका नहीं।
बस दास तो यह ही चाहता है, तेरी कृपा का सिर पर हाथ रहे।।

भजन नं. 145

तर्ज़-आये भी वो चले गये----।

टेक-रहे तलब हमेशा मुझे सतगुरु तेरे दीदार की।
उठती रहें सदा दिल में तरंगें प्रियतम तेरे प्यार की।।

1. सुन्दर प्यारा यह रुप तेरा, देख देख यह स्वरुप तेरा।
मन के मन्दिर में सजाऊँ, मूरति दातार की।।

2. जग रूठे न परवाह करूँ, औरों की आशा क्यों मन में धरूँ।
तेरा ही हर दम मान करूँ, प्रीति मिले चरणार की।।

3. माया मुझे न भरमा सके, रस्ते से तेरे न भटका सके।
नश्वर जान के इस खेल को, इच्छा न हो संसार की।।

4. खिदमत में तेरी जीवन बिताऊँ, तेरे इशारों पे मर मिट जाऊँ।
तेरा ही दासनदास कहाऊँ, विनती यह है गुनाहगार की।।

भजन नं. 146

तर्ज़-तेरे प्यार का-----।

टेक-मेरे इष्टदेव मुझको देना सहारा।
कहीं छूट जाये न दामन तुम्हारा।।

1. माया की झिलमिल ने मुझको भुलाया।
जहाँ दिल लगाया धोखा ही खाया।
सिवा तेरे किसी को न अपना है पाया।
नाम तुम्हारा है तारणहारा।।

2. दुनियाँ की उलझन ने उलझा दिया है।
अब तक का जीवन व्यर्थ गया है।
ना जाने ये कैसे तुम्हें पा लिया है।
मल्लाह बनो तुम दूर है किनारा।।

3. पग पग पर मनमुख हैं भरमाते।
मोह जाल में हैं मुझ को फँसाते।
मतलब के सब रिश्ते और नाते।
इनसे बचने का कर दो इशारा।।

4. सदा रहूँ मैं चरणों में तेरे।
करो इतनी किरपा सतगुरु मेरे।
पूजा करूँ तेरी शाम सवेरे।
दास का हर लो दुःख दर्द सारा।।

भजन नं. 147

तर्ज़-मुकद्दर आजमाना चाहता हूं।

टेक-मेरे दिल में हो सतगुरु प्यार तेरा।
रहे मुझको सदा आधार तेरा।।

1. उलझ जाऊँ न मैं दुनियाँ के मोह में।
न भटके मेरा मन विषयों की टोह में।
न भूले भजन ऐ दातार तेरा।।

2. यह मोह माया की लहरों के झकोले।
मेरी कश्ती न इन लहरों में डोले।
सहारा बस है खेवनहार तेरा।।

3. मेरे सतगुरु तू है समरथ मैं निर्बल।
कि मुझ पर चल न जाये माया का छल।
मुझे है आसरा दरकार तेरा।।

4. तेरा ही प्यार मेरी ज़िन्दगी है।
यही बस माँग दासनदास की है।
मिले वरदान बख्शनहार तेरा।।

भजन नं. 148

तर्ज़-दम भर जो इधर मुँह-----।

टेक-सब कुछ जाननहारे-ओ दाता, तुम्हें क्या क्या मैं बतलाऊँ।
क्या दिल का हाल सुनाऊँ।।

1. तुम अन्तर्यामी सतगुरु, करन करावनहार।
मैं अपराधी शरण में आया, मेरा करो उद्धार।
तुम जीव अनेकों तारे-ओ दाता।

2. सब जग में ढूँढ के देखा, कहीं नहीं सुख सार।
मंगलकारी सुखदाई इक, तेरा यह दरबार।
मैं आया तेरे द्वारे - ओ दाता।।

3. मैं और न कुछ भी जानूँ, नहीं आता कुछ काम।
महिमा तेरी गाता रहूँ बस, सतगुरु आठोंयाम।
यह जीवन तेरे सहारे- ओ दाता।।

4. दर छोड़ के तेरा दाता,अब और कहाँ जाऊँ।
दास तेरा मैं बन के रहूँ, और दर्शन नित पाऊँ।
तुम मेरे प्राण प्यारे--ओ दाता।।

भजन नं. 149

तर्ज़-मेरी ज़िन्दगी में आते----।

टेक-तेरी शरण में हूँ आया, सब छोड़ के सहारे।
सब छोड़ के सहारे।।

1. कई जन्मों से मैं दाता, दर दर भटक रहा था।
तुमसे बिछुड़ के सतगुरु, अब तक तड़प रहा था।
भागों से तुम को पाया।।

2. दुनियां में खूब देखा, मतलब के साथी सारे।
बिन गर्ज़ के प्रभु जी, तुम ने अनेकों तारे।
तुम सा न कोई पाया।।

3. अब दया करो दयालू, छूटे न तेरा द्वारा।
इस भूले भटके को भी, बख्शो प्रभु सहारा।
मिले तेरी चरण छाया।।

4. तेरे दर पे मेरे स्वामी, रहूँ बन के तेरा चेरा।
बख्शो अपनी सेवा भक्ति, यही माँगे दास तेरा।
हो जाये सफल काया।।

भजन नं. 150

तर्ज़-करती हूँ तुम्हारा व्रत मैं----।

टेक-यही वेनती है मेरी, स्वीकार करो जी।
संसार के झंझट से, बेड़ा पार करो जी।
ओ सतगुरु प्यारे, ओ सतगुरु प्यारे।।

1. जो भी श्रद्धा से आता, तेरे दरबार में।
नहीं डूब सकता है वह, जग की मँझधार में।
मैं भी हूँ आया दर पे, सिर हाथ धरो जी।।

2. दुनियाँ में खूब देखा, सब स्वारथ के हैं मीत।
मतलब के हैं सब साथी, झूठी है सबकी प्रीत।
तुम्हीं हो मीत साचे, मेरे कष्ट हरो जी।।

3. इस दास की यह वेनती, दाता करो स्वीकार।
करो अपनी दया की दृष्टि, हो जाऊँ भव से पार।
मल्लाह बनो तुम मेरे, उपकार करो जी।।

भजन नं. 151

तर्ज़-जिस गली में तेरा घर----।

टेक-मुझपे किरपा करो इतनी ऐ प्रभु,तेरी याद मुझे सुबह शाम रहे।
तेरी महिमा के गीत ही गाऊँ सदा,कोई और मुझे न काम रहे।।

1.तेरे चरणों में मेरी हो सुरत लगी,चाहूँ वरदान प्रभु जी तुझ से यही।
करुँ निशदिन सदा बन्दगी मैं तेरी,बैठ चरणों में तेरे यह सेवक प्रभु।
तेरी उल्फत के पीता जाम रहे।।

2.ध्यान तेरे का छाया हो ऐसा नशा,रूप तेरा हो रग-रग मेरी बसा।
देखता मै रहूँ प्यारा जल्वा तेरा,हाथ पाव से मै तेरी सेवा करूँ।।
और ओठों पे तेरा नाम रहे।।

3.आरिफो ने ये क्या बात खूब कही,यादतेरी से मिलती लासानी खुशी।
होता लोक सुखी और परलोक भी,प्रभु नाम में जो लवलीन रहे।
खुशी जीवन में आठोंयाम रहे।।

4.तेरे चरणों में मेरी विनती यही,मुझे मिलती रहे प्रभु भक्ति तेरी।
याद भूले नहीं तेरी इक पल भी,दासनदास का मेरे प्यारे प्रभु।
बारम्बार तुम्हें प्रणाम रहे।।

भजन नं. 152

तर्ज़-तेरी खुशियों का प्रभु----।

टेक-सुन मेरे सतगुरु जी, भिखारी इक दर पे खड़ा।
रहमत की दृष्टि प्रभु, मुझ पे फिरा दे ज़रा।।

1. तोड़ के नाता जग से, द्वार पे आन गिरा।
कैसे बताऊँ प्रभो, क्या क्या दुःख है सहा।
कर दे अनुकम्पा प्रभो, आया मैं आस लगा।।

2. भरा है गुनाहों से, जीवन मेरा प्रभो।
बख्श दे मेरे गुनाह, पकड़ा दामन तेरा प्रभो।
ठौर चरणों में दे, बस यह कर दो दया।।

3. ध्यान तेरा आँखों में बसे, ओठों पे गुणगान तेरा।
मेरा रोम रोम रटे, प्यारा मीठा नाम तेरा।
मन लगे सेवा में, ऐसा दे विचार बना।।

4. नाम मेरा शामिल हो, प्रभो तेरे प्यारों में।
संगत मेरी हो प्रभो, तेरे सेवादारों से।
याद तेरी का हे प्रभो, ऐसा हो रंग चढ़ा।।

भजन नं. 153

तर्ज़-सुनो सतगुरु जी----।

टेक-विनती सुनो सतगुरु किरपा निधान।
बख्श दो हमको भक्ति का दान।।

1. भक्ति की चाह लेकर आये तेरे द्वार।
भक्ति मुक्ति का तू है भण्डार।
इस बात को जाने सकल जहान।।

2. भटक रहे हम प्रभु जी बचा लो।
श्री चरणों के संग लगा लो।
कर दो प्रभु हम पे एहसान।।

3. खतायें हमारी क्षमा प्रभु कर दो।
प्रेम भक्ति से झोली को भर दो।
तेरा करेंगे सदा गुणगान।।

4. तुम हमरे स्वामी हम दास हैं तुम्हारे।
बितायेंगे जीवन तुम्हारे सहारे।
तुम्हारा फकत हमको है मान।।

भजन नं. 154

तर्ज़-भैय्या मेरे राखी के बन्धन----।

टेक-सतगुरु प्यारे अपना हमें तुम बनाना।

1. पल पल सुमिरण ध्यान कमा कर, मौज तेरी में जीवन बिताऊँ।
   हृदय में तेरा रूप बसाकर, निसदिन तेरा दर्शन पाऊँ।
   मय प्रेम की ऐसी पिलाना,पिलाना।।

2. पावन रज तेरे चरणों की, मस्तक अपने उसको लगाऊँ।
   तेरी महिमा के गीत बनाकर, गा गा के मैं सबको सुनाऊँ।
   तेरे प्यार का बनूँ मैं दीवाना,दीवाना।।

3. किस्मत मेरी जाग उठी है, तेरा जो दरबार मिला है।
   तेरी अनुकम्पा से स्वामी, मेरे हृदय का कमल खिला है।
   अपनी किरपा सदा बरसाना, बरसाना।।

4. तुझसे प्रभु जी क्या मैं माँगूं, चाहिये केवल किरपा तुम्हारी।
   निज चरणों की भक्ति दे दो, ऐ दाता जी पर उपकारी।
   अपने चरणों का दास बनाना,बनाना।।

भजन नं. 155

तर्ज़-मेहरां वालिया साईयां----।

टेक-रख लै चरणाँ दे प्रभु नाल।
मेहरां वालिया साईयाँ।।

1. धो धो के पीवां तेरे चरण मैं।
ताते आया तेरी शरण मैं।
कर ले मेरी सँभाल।।

2. पापाँ दी मैल मन ते चढ़ी है।
सुरति शब्द तों विछुड़ गई है।
होया जीव अति कंगाल।।

3. किरपा तेरी बिन ऐ मेरे स्वामी।
कैसे जाये सुरति लोक अनामी।
पाये कैसे दीन दयाल।।

4. दास तेरा प्रभु देवे दुहाई।
झोली है तेरे दर ते फैलाई।
देवो भक्ति रतन धन लाल।।

भजन नं. 156

तर्ज़-दिल के अरमाँ---।

टेक-सुख के सागर सतगुरु मेरे प्रभु।
है फकत मुझ को तेरा ही आसरा।

1. मोड़कर मुख मैं सारे संसार से।
आया हूँ भगवन मैं तेरे द्वार पे।
बख्श दीजै मुझको चरणों में जगह।।

2. कोई हो जाए अगर मुझसे गुनाह।
माफ कर देना यही है इल्तिज़ा।
कर न देना चरणों से मुझको जुदा।।

3. दिल में मेरे बस यही अरमान है।
नयनों में हरदम बसे तेरा ध्यान है।
ओंठों पे गुणगान तेरा हो सदा।।

4. तेरे दासों का प्रभु मैं दास बनूँ।
तेरी सेवा पूजा निसदिन मैं करूँ।
बस यही सेवक पे कर दीजै दया।।

भजन नं. 157

तर्ज़-ऐ मेरे दिले नादाँ----।

टेक-औषधि सब रोगों की, तेरा मीठा नाम प्रभु।
हर स्वाँस करूँ सुमिरण, तेरा सुबह-ो-शाम प्रभु।।

1. यह नश्वर काया तो, विष की बेलरी है।
रूह के कल्याण में ही, सदा होती बेहतरी है।
जप के नाम तेरा सच्चा, पाये मन विश्राम प्रभु।।
2. मान के मन का कहा, बड़े कष्ट उठाये हैं।
इस लाख चौरासी में, कई चक्कर खाये हैं।
इस बार करो रहमत, रहूँ बन के गुलाम प्रभु।।
3. सच्चे नाम की मस्ती में, इक नशा निराला है।
असर कभी जिस का, नहीं उतरने वाला है।
जन्मों की प्यास मिटे, पी के नाम का जाम प्रभु।।
4. सन्त रूप अवतार लिया, दुःखी जीव तराने को।
उन्हें नाम संजीवनी दी, साचा सुख पाने को।
पाके शरण तेरी होता, पूरण हर काम प्रभु।।
5. अब तेरे नाम में ही, मगन यह दास रहे।
यूँ ही नज़रे-करम तेरी, मुझ पे खास रहे।
भूले से भी भूले न, कभी तेरा ध्यान प्रभु।।

भजन नं. 158

तर्ज़-

टेक-तेरी शरण पड़ा हूँ आन, ऐ मेरे सतगुरु जी।
तुम मेरे हो भगवान, ऐ मेरे सतगुरु जी।।

1. चरण शरण तेरी हूँ आया।
कीजै मुझपे चरणों की छाया।
तेरा भूलूँ न एहसान, ऐ मेरे सतगुरु जी।।
2. अवगुण मेरे देख न दाता।
तू ही मेरा पिता और माता।
मैं बालक तेरा नादान, ऐ मेरे सतगुरु जी।।
3. नाम तेरा है दीन दयाल।
करते हो भक्तों की तुम सँभाल।
यह जाने सकल जहान, ऐ मेरे सतगुरु जी।।
4. तुम बिन और न कोई सहारा।
खोज के देखा है जग सारा।
तुम ही मीत सुजान, ऐ मेरे सतगुरु जी।।
5. तेरे पावन प्रेम का प्यासा।
आया दिल में रख यह आसा।
दास तेरा अन्जान, ऐ मेरे सतगुरु जी।।

भजन नं. 159

तर्ज़-दिल के अरमाँ-----।

टेक-एक दृष्टि तू मेहर की डार दे।
मेरे जीवन को प्रभु जी सँवार दे।।

1. पाक कदमों की मिले खिदमत मुझे।
आस यह पूरी तू कर दातार दे।।

2. सेवा पूजा में सदा खोया रहूँ।
अपने सुन्दर चरणों का मुझे प्यार दे।।

3. तेरे बिन कोई न साचा मीत है।
मुझ को अपने चरणों का आधार दे।।

4. भूलूंगा एहसान न हरगिज़ कभी।
किश्ती मेरी को तू भव से तार दे।।

5. झूठी दुनियाँ में कभी न मन फँसे।
मुझको ऐसा प्रेम का खुमार दे।।

6. बन के दासनदास रहूं दरबार में।
कर तू ऐसा दृढ़ मेरा विचार दे।।

भजन नं. 160

तर्ज़-मेरी आँखों के नज़ारे------।

टेक-झूठी दुनियाँ के झूठे नज़ारे, तुझे लगते हैं जो प्यारे प्यारे।
फिर इस संसार से क्या लेना-----हो-----क्या लेना।।

1. इस बाग-ए-जहां में जितने, ये फूल हैं प्यारे प्यारे।
दामन में इन्हें क्यों भरता, दरअसल हैं सब अंगारे।
जो काँटों की बाड़ है, सरासर पुरखार है।
ऐसे गुलज़ार से क्या लेना--हो--क्या लेना।।

2. ये वादे-सवा के झोंके, तेरी रूह को वीराँ बनावें।
विषयों का झुला के झूला, तुझे मोह की नींद सुलावें।
यह दुश्मन है चमन, ठण्डी ठण्डी जो पवन।
फिर ऐसी बहार से क्या लेना--हो--क्या लनेना।।

3. आगोशे जहाँ को तज कर, सतगुरु की शरण जाओ।
खुदी का महल गिरा कर, दर्शन गुरु का पाओ।
बख्शे भक्ति और योग, यह है सच्चा संयोग।
तुझे जग व्यौहार से क्या लेना--हो--क्या लेना।।

4. हर रंग में देखो सतगुरु का, क्या रंग है खूब समाया।
जिस रंग में रंग कर भक्तों ने, है जीवन सफल बनाया।
बन के चरणों के दास करो यही अरदास।
दुनियां के प्यार से हमें क्या लेना--हो--क्या लेना।।

भजन नं. 161

तर्ज़-दिल का खिलौना----।

टेक-अवसर मिला तुझे नर तन का।
वक्त यही है प्यारे सुमिरण भजन का।।

1. चौरासी लाख में श्रेष्ठ यह तन है।
सच पूछो तो अनमोल रतन है।
जप नाम तू निसबासर, संयोग बना है सुन्दर।
मौका है यह प्रभु से मिलन का।।

2. झूठी दुनियाँ से दिल न लगाना।
इस के धोखे से खुद को बचाना।
करते हैं सन्त आगाह, बतलाते सीधी राह।
ले ले सहारा तू सन्त शरण का।।

3. चन्द स्वांस की प्यारे तेरी ज़िन्दगी है।
बिनस जाए कब पता कुछ नहीं है।
नाम प्रभु का जपना, काम तेरा है अपना।
लक्ष्य यही है इस जीवन का।।

4. सन्तों की शिक्षा मान ले दास।
गुरु चरणों पे रख दृढ़ विश्वास।
बिगड़ी बन जाए तेरी, पलक न लगती देरी।
खत्म होगा चक्कर आवागमन का।।

भजन नं. 162

तर्ज़-

टेक-जाऊं कहाँ तज चरण तिहारे।।

1. मुझ सा पापी और नहीं है, तेरे चरण बिन ठौर नहीं है।
   जीवन के इस दुर्गम पथ में, चलता जाऊँ तेरे सहारे।।

2. गफलत की मैं नींद में सोया, हीरा जन्म अकारथ खोया।
   तूने सतगुरु आन जगाया, यह दाता बड़भाग्य हमारे।।

3. तेरे मन में प्रेम का सागर, मेरे सिर पर पाप की गागर।
   जन्म जन्म का मैं दुखियारा, तू प्रभु जन्म जन्म दुःख टारे।।

4. भवसिन्धु में नीर अपारा, डगमग नैया दूर किनारा।
   डूबत हौं मैं जीव बेचारा, हाथ पकड़ कर तू ही उबारे।।

भजन नं. 163

तर्ज़-लगा लो प्रेम----।

टेक-तेरा इक सहारा होवे सहारे ही सहारे ने।
तेरे चरणां विच निभ जाये गुज़ारे ही गुज़ारे ने।।

1. औ बेड़ी डुब नहीं सकदी, कि जिसदा तू है मल्लाह।
ओहनूँ मँझधार अन्दर वी, किनारे ही किनारे ने।।

2. माया दी अपनी आदत है, भक्ति दी अपनी आदत है।
माया ने डोबे ने, भक्ति ने तारे ही तारे ने।।

3. तू ही इस लोक दा वाली, तू ही परलोक दा मालिक।
तू तो भगवान भक्ताँ दा, भगत तेरे सहारे ने।।

4. जिन्होने हार मनीं ए, ओहना मैदान मारे ने।
बने जो माया दे ग्राहक, सदा हारे ही हारे ने।।

5. सताये काल माया दे, तेरे चरणाँ विच आ जाये।
तुसां तपदे होये हृदय, सदा ठारे ही ठारे ने।।

भजन नं. 164

तर्ज़-ठहरो ज़रा सी देर तो----।

टेक-आया है भक्ति कमाने तू, प्राणी इस संसार में।
साचा व्यापार है यही, दुनियाँ के बाज़ार में।।

1. दुनियाँ किसी की न बने, कब तक तू आज़मायेगा।
फँस के मोह और माया में, हाथ नहीं कुछ आयेगा।
धोखा फिर क्यों खाये तू, जग के झूठे प्यार में।।

2. पानी का है बुलबुला, तेरा यह मानुष जन्म।
त्याग के मन की मति, सन्तों की ले ले शरण।
सच्चा आनन्द मिले तुझे, उनके श्री चरणार में।।

3. सुखों की खानी भक्ति है, सन्त यही फरमाते हैं।
बड़भागी हैं जीव वही, भक्ति धन जो कमाते हैं।
हानि का कोई सवाल नहीं, भक्ति के व्यापार में।।

4. प्रकटे धरा पे मालिके-कुल, सन्त रूप धार के।
भक्ति में है कल्याण तेरा, हरदम कहते पुकार के।
लोक परलोक सँवरे तेरा, सतपुरुषों के दरबार में।।

भजन नं. 165

तर्ज़-ठहरो ज़रा सी देर तो----।

टेक-अब भी उठा लो फैज़ तुम, दो दिन की ज़िन्दगानी से।
धन मिलेगा भक्ति का, सतगुरु की मेहरबानी से।।

1. नश्वर इस संसार में, रहना तुम होशियारी से।
तुमको बचायेंगे सन्त ही, मोह ममता की बीमारी से।
बनेगा न काम नित नेम का, ऐ गुरुमुख आनाकानी से।।

2. गफलत को तू अब छोड़ के, मन अपना उपराम कर।
लुटा कर खज़ाना श्वासों का, न मानुष तन बदनाम कर।
पा ले सच्चा सुख नादाँ, सतपुरुषों की वाणी से।।

3. साहिब अपनी रकम का, माँगेगा इक दिन हिसाब भी।
लेकर गये गर खाली हाथ, न सूझेगा कोई जवाब भी।
करके व्योपार सन्तों से, बच जाओगे हर हानी से।।

4. शरण में जा तू सतगुरु की, नाम का अमृत पिलायेंगे।
नज़रे-करम से अपनी फिर, कैद से मन की छुड़ायेंगे।
ले दासा भक्ति दान तू, आनन्दपुर वाले दानी से।।

भजन नं. 166

तर्ज़-लगा लो प्रेम सतगुरु से-----।

टेक-सतगुरु नज़र मेहर की कर दे, जो मैं दर पे तेरे आऊँ।
तेरे चरण कमल के नीचे, अपनी पलकें आन बिछाऊँ।।

1. पिण्ड देश में किया निवास,सुरत सुहागिन भई उदास।
चारों ओर से हुई निरास, कहती है अब मैं कित जाऊँ।।

2. दे दो नाम का एक प्याला, पीकर हो जाऊं मतवाला।
मेरे अन्दर होय उजाला, मैं भी भवसागर तर जाऊँ।।

3. माया मोह मुझे भरमावें, नित ही नये नये जाल बिछावे।
भजनाभ्यास से मुझे हटावे, मैं खुद कुछ भी न कर पाऊँ।।

4. तेरे दर का बनकर चाकर, सुख पाऊं मैं सेव कमाकर।
झूम उठूँ तव दर्शन पाकर, अपना जीवन सफल बनाऊँ।।

5. दासनदास की यही पुकार, जीवन नैय्या है मँझधार।
करुणामय अब कर दो, पार, तेरी रहमत के गुण गाऊँ।।

भजन नं. 167

तर्ज़-मरने वाले का अरमान----।

टेक-अपने चरणों का मुझको जो दे आसरा।
फिर तो मेरा मुकद्दर बदल जायेगा।।
सब दुःखों से छूटूँगा तब मैं प्रभो।
लड़खड़ाता कदम यह सँभल जायेगा।।

1. मैं तो जन्मों जन्म से भटकता रहा।
मोह माया के चक्कर में ही रात दिन।
अब तो कर के दया दीजिए आसरा।
मेरे जन्मों का चक्कर निकल जायेगा।।

2. कर्म मेरे न देखो प्रभो नीच हूँ।
नीच से भी हूँ मैं नीच पापी अधम।
मेरे कर्मों पे गर ध्यान दोगे पिता।
आपका भी इरादा बदल जायेगा।।

3. दीनबन्धु दयालु तेरा नाम है।
दया दुखियों पे करना तेरा काम है।
मेरी बिगड़ी बना दो लगे देर क्या।
आप का ही प्रभो नाम हो जायेगा।।

4. तेरे चरणों में आया तेरा दास है।
लाज मेरी दयालू तेरे हाथ है।
तेरे नज़रे-करम की ही हो बात है।
मैला दामन मेरा फिर तो धुल जायेगा।।

भजन नं. 168

तर्ज़-रहा गर्दिशों में---।

टेक-ऐ मन समझ ले गाफिल, सन्तों के जो इशारे।
हमदर्द तेरी रूह के, सतगुरु सजन हैं प्यारे।।

1. तेरे दिल को है लुभाती, दुनियाँ की ऐशो-इशरत।
मकसद को अपने भूला, दिलकश निरख नज़ारे।।

2. नादाँ विषय रसों को, जी भर तू पी रहा है।
निकलेंगे तेरे तन से, बन कर ज़हर फुहारे।।

3. चाहता है बेहतरी गर, मन का बदल रवैय्या।
नहीं तो पड़ेंगे सहने, नरकों के कष्ट भारे।।

4. जिन को समझ तू अपना, रंगीनियों में डूबा।
आयेगी जब कयामत, तज देंगे साथ सारे।।

5. दुनियाँ के बन्धनों से, आज़ाद कर ले खुद को।
सतगुरु की ओट ले ले, राह में विघ्न हैं भारे।।

6. हर स्वांस धुन लगा ले, सतगुरु के नाम की तू।
दासा सहज ही होगा, भवसिन्धु के किनारे।।

भजन नं. 169

तर्ज़-गुरुमुख शरण गुरां-----।

टेक-सेवा करो दिल नाल, महापुरुषाँ दा कहना ए।
सेवा लायेगी बहार, सब सन्ताँ दा कहना ए।।

1. सेवा भीलनी ने कीती, पाई राम जी दी प्रीति।
उसने जग तों बाजी जीती, महापुरुषाँ दा कहना ए।।

2. मीराँ लाई सच्ची प्रीत, गई ओ जग तों बाजी जीत।
सच्चे प्रेम दी ऐ ही रीत, महापुरुषां दा कहना ए।।

3. छड दे मोह लोभ अहंकार, कर सतगुराँ नाल प्यार।
फिर तो हो जाये बेड़ा पार, सब सन्तां दा कहना ए।।

4. जेहड़ा सेवा दिल नाल करदा, न ओ जमदा न ओ मरदा।
ओ तां भवसागर तों तरदा, सब सन्तां दा कहना ए।।

भजन नं. 170

तर्ज़-तुम्हीं मेरे मन्दिर------।

टेक-सुनो मेरे सतगुरु, सुनो मेरे भगवन।
आया हूँ दर पे बन के भिखारी।।
तेरी पावन भक्ति की खातिर।
झोली है दर पे तेरे पसारी।।

1. आस लगाकर आया हूँ दर पे।
भक्ति से झोली ले जाऊं मैं भर के।
नहीं चाहियें मुझे और कुछ स्वामी।
चाहिये फकत नज़रे-रहमत तुम्हारी।।

2. भक्ति बिना कई जन्म हैं गँवाये।
भूलकर तुम को बहुत दुःख पाये।
अब तो बख्शो शरण प्रभु अपनी।
सुख साचे के हो तुम भण्डारी।।

3. फकत यही सतगुरु वर दीजै मुझको।
स्वाँस स्वाँस में ध्याऊँ मैं तुझको।
दुनियाँ के सब रंग-रूप भुला कर।
हृदय बसाऊं तस्वीर तुम्हारी।।

4. भवसागर के हो तुम रखवाले।
जीवन नैया है तेरे हवाले।
अपने चरणों का दास बना लो।
करूँ सेवा पूजा निसदिन तुम्हारी।।

भजन नं. 171

तर्ज़-अखियों का नूर है तू----।

टेक-ऐ मेरे सतगुरु प्यारे,आया मैं तेरे द्वारे,चरणों का दे दो प्यार।।
मेरे स्वामी, चरणों का दे दो प्यार।।

1. महिमा तेरी मैं सुनकर आया,तू है सब सुखों का दाता।
नज़र दया की मुझ पर कर दो,ऐ सतगुरु जी जग के त्राता।
ये ही है आशा मन में,हर पल रहूँ चरणन में।
इतनी सी मेरी पुकार,सुन लो स्वामी,इतनी सी मेरी पुकार।।
2. तेरे बिना ऐ मेरे प्रियतम,कहीं पे मिला न मुझको सहारा।
सच्चा सहारा है दुनियां में,केवल इक दरबार तुम्हारा।
कोई न संगी साथी, स्वार्थ के रिश्ते नाती।
देखा सकल संसार,कोई न मेरा, देखा सकल संसार।।
3. ऐसे प्रेम के रंग में रंग दो,सुधबुध अपनी भूल मैं जाऊँ।
जिधर भी नज़र दौड़ाऊँ अपनी,तेरा ही जल्वा देख मैं पाऊँ।
तेरा ही ध्यान रहे, तुझसे ही काम रहे।
ऐ मेरे दातार, तू इष्ट है मेरा, ऐ मेरे दातार।।
4. तुझ से जुड़ा रहे मेरा नाता,दीनबन्धु है मेरे भगवान।
दासनदास कहाऊँ मैं तेरा, दिल में फकत है यही अरमान।
और न कुछ भी चाहूँ, सेवा और भक्ति कमाऊँ।
बन के मैं सेवादार, तेरे दर का, बन के मैं सेवादार।।

भजन नं. 172

तर्ज़-भगवान दो घड़ी ज़रा-----।

टेक-सतगुरु वचन अमुल्य रतन हैं बेशकीमती लाल।
करनी है इन्सान लाज़मी-इन की तुझे सँभाल।।

1. जिसने किया विश्वास सतगुरु के वचनों पर।
बस मौज आज्ञा में किया ज़िन्दगी का सफर।
उस की परछाईं छू नहीं सकता कभी भी काल।।

2. नारद मुनि के श्री वचनों को, ध्रुव ने हिरदे धारा।
हासिल किया वह रुतबा जिसका साक्षी है जग सारा।
दुनियाँ में ऐसी दिव्य शक्ति की कायम हुई मिसाल।।

3. गुरु वचनों को आदर देता है धन्य वह इन्सान।
रत्नाकर जैसा डाकू भी, बन गये ऋषि महान।
एक वचन सन्तों का सुनकर जिसने किया कमाल।।

4. निर्भय हो तीनों लोकों में, गुरुमुख विचरता है।
गुरु वचनों को दास जो शिरोधार्य करता है।
संगी हैं लोक-परलोक में, उस के सतगुरु दयाल।।

भजन नं. 173

तर्ज़-तोरा मन दर्पण कहलाये----।

टेक-सतगुरु तेरी सुन्दर वाणी, अमृत रस बरसाये।
इक इक बूँद मधुर वचनों की, मन की प्यास बुझाये।।

1.सतगुरु आप के चरणों में ही,द्वार खुला साधन का।
बड़भागी जन अर्पित करते, फूल हैं अपने मन का।
जिससे जीवन के गुलशन का, फूल सदा मुसकाये।।

2.युगों युगों से कायम है, तेरा दरबार इलाही।
ऋषि मुनि अवतारों तक ने, महिमा इस की गाई।
सतगुरु की ही भक्ति से नर, नारायण हो जाये।।

3.पारब्रह्म परमेश्वर खुद ही, सतगुरु बन कर आते।
माया में उलझे जीवों को, शुभ मारग दरशाते।
जो भी उन की शरण आवे, भव से पार लगायें।।

4.दासन दास को सतगुरु प्यारे, दास बनाये रखना।
चरण कमल का दे के सहारा, आस बँधाये रखना।
तेरी नज़रे-रहमत से फिर, चौरासी कट जाये।।

भजन नं. 174

तर्ज़-तेरे प्यार का आसरा----।

टेक-मेरी ज़िन्दगी का सहारा भी तू है।
मुकद्दर का मेरे सितारा भी तू है।।

1. रहूँ ध्यान की मस्ती में सुध बुध भुलाकर।
करूँ तेरी सेवा मन चित्त लगाकर।
तमन्ना का मेरी किनारा तू ही है।।

2. लगन तेरी हो इक लगन जग की भूले।
तसव्वर तेरा ध्यान पलकों में झूले।
कि मेरा फक्त प्राण आधारा तू ही है।।

3. दास के मन से,खवाहिशों की बू तक हटा दे।
अपनी प्रेम भक्ति का गुलशन खिला दे।
प्रेम का सरुर मुझको ऐसा पिला दे।
कि मेरे राह सफर का सहारा तू ही है।।

भजन नं. 175

तर्ज़-पानी रे पानी तेरा ----।

टेक-हृदय विराजो मेरे आन प्रभु जी।
तेरा हो इस में कयाम प्रभु जी।।

1. घट में तेरा दर्शन पाऊँ, ऐ मेरे सतगुरु प्यारे।
जीवन मेरा बीते सारा, हर दम तेरे सहारे।
यही तमन्ना दिल में रहती, ऐ मेरे भगवान।
हृदय विराजो मेरे आन प्रभु जी।
जाऊं मैं तुझ पे कुरबान प्रभु जी।।

2. सूना सूना दिल ये मेरा, इसको रोशन कर दो।
अपने सच्चे प्रेम प्यार से, दाता इसको भर दो।
तुझ से हरदम मांगूँ यही सतगुरु जी वरदान।।
हृदय विराजो मेरे आन प्रभु जी।
नैनों में बसे तेरा ध्यान प्रभु जी।।

3. दासनदास चरण कमलों का, हर दम रहे पुजारी।
तुझे रिझाने की बस दिल में, रहे लगन इक भारी।
श्री चरणों पे ही मिट जाऊँ यही हो मेरा काम।
हृदय विराजो मेरे आन प्रभु जी।
तेरा मैं तेरा हूँ गुलाम प्रभु जी।।

भजन नं. 176

तर्ज़-ओ दुर के मुसाफिर-----।

टेक-सतगुरु के वचनों से तू, सुरति ज़रा मिला ले।
अनमोल हीरे हैं ये, इन को हृदय बसा ले।।

1. दरअसल तेरा अपना,असली है यह खज़ाना।
जिससे है मिलता रूह को, निजधाम में ठिकाना।
परलोक की है पूंजी, जी जान से बना ले।।

2. जिस दिल में सतगुरु के, बचनों का हो बसेरा।
रोशन रहे वह हरदम, हरगिज़ न हो अँधेरा।
नहीं शक है इसमें कोई, चाहे तो आज़मा ले।।

3. भक्ति भरी हुई है, वचनों में सद्गुरु के।
सज्जन फकत हैं वे ही, प्यारे तेरी जो रूह के।
कर के निसार तन-मन, तू भी उन्हें रिझा ले।।

4. गुरु-मौज को ही दासा, हर वक्त सिर पे धरना।
किसी और की तो आशा, दिल में कभी न करना।
हर स्वांस में गुरु के, गुणवाद ही तू गा ले।।

भजन नं. 177

तर्ज़-मुझे कोई मिल गया----।

टेक-है प्यार भरी यह राखी, स्वीकार करो भगवान।
हाथों पे तुम बँधवा लो, कर दो प्रभु एहसान।।

1. दुनियाँ से तोड़ नाता, तेरी शरण हूँ आया।
तेरे बिना ऐ भगवन, कोई न अपना पाया।
रक्षा मेरी प्रभु करना, दर पे पड़ा हूँ आन।।

2. तेरे सहारे जीवन, तू ही है सच्चा साथी।
तू ही है मेरा स्वामी, बाँधी जो तुझको राखी।
चरणों में अपने रख लो, ऐ दाता दया-निधान।।

3. उपकारी सतगुरु जी, उपकार इतना कर दो।
मेरी जो खाली झोली, भक्ति से दाता भर दो।
तुम भक्ति के भण्डारी, भक्ति का दे दो दान।।

4. बन के पुजारी हरपल, पूजा करूँ तुम्हारी।
हृदय मन्दिर में देखूँ, तेरी छवि प्यारी।
मैं दास हूँ तुम्हारा, हो तुम मेरे भगवान।।

भजन नं. 178

तर्ज़-

टेक-ऐ मेरे सतगुरु तू मेहर कर, तेरे दर ज़िन्दगी गुज़रे।
स्वाँसों की लड़ी हर पल हर घड़ी तेरा ही सुमिरण करे।।

1. हर इक मोड़ पे ज़िन्दगी के, प्रभु मेरा सहारा तू है।
कोई होगा किसी का गुजारा मेरा गुजारा तू है।
प्रभु मेरा गुजारा तू है मुझे जो भी मिला तेरे दर से।
मेरी झोली सदा तू भरे।।

2. ये दुनियाँ तो इक मेला है, मेरे दाता तू रहमत करना।
इस मेले में न खो जाऊँ, मेरी ऊँगली पकड़ के रखना।
मैं तो नादान हूँ बड़ा अन्जान हूँ,
तू न करना चरणों से परे।।

3. अब तो तेरे दर बीती बाकी भी तेरे दर बीते।
इस दास पे तू रहमत करना ये हीरा जनम को जीते।
ऐ मेरे सतगुरु ऐ मेरे दाता जी तेरे हैं ।
खोटे हैं या हम खरे।।

भजन नं. 179

तर्ज़-गरीबों की सुनो----।

टेक-मेरी विनती सुनो,गुरुदेव हमारे,इक आशा लेके आया मैं तेरे द्वारे।।

1. झूठे जग की छोड़ के आशा, तेरी शरण में हूँ आया।
नाथ मेरे अब कीजौ मुझपर, अपने चरणों की छाया।
यही हाथ जोड़कर विनती करूँ मैं,तेरे पाक कदमों की खिदमत करूँ मैं।
दे दो प्रभु यह वरदान दे दो,श्री चरणों की भक्ति का दान दे दो।
रोम रोम में बस जाये प्रभु, तेरा सुन्दर ध्यान जी।

2. खोज के देखा जग सारे में कोई नहीं गमख्वार मिला।
स्वार्थमयी इस दुनियाँ मैं, कहीं न सच्चा प्यार मिला।
कोई न हमको अपना दिखाता,झूठे जगत का है झूठा नाता।
तू ही केवल मीत हमारा, देना प्रभु हमको देना सहारा।
तू ही हमरा मात पिता है तू ही है भगवान जी।।

3. मन माया के जाल में फँस के, कष्ट अनेकों पाये हैं।
ऐ सतगुरु अब दया करो, हम जीव बहुत घबराये हैं।
दिल की हालत किस को सुनायें, तुम बिन कैसे खुद को बचायें।
किश्ती भव में डूब रही है, बचा लो प्रभु तेरी शरण गही है।
जन्मों तलक न भूलेंगे प्रभु हम तेरा एहसान जी।।

4. तेरे चरणों का दास कहाऊँ, दिल में यह अभिलाषा है।
तेरे सच्चे पावन प्रेम का, मनुआ मेरा प्यासा है।
तुझ से जुड़ी रहे दिल की तार,कायम रहे तेरे संग मेरा प्यार।
और न कोई दिल की तमन्ना,तेरे प्रेम की है बस चाहना।
पूरा कर दो सतगुरु मेरे दिल का यह अरमान जी।।

भजन नं.180

तर्ज़-तुम रूठ के मत---।

टेक-रक्षा बन्धन है आया।

करुणा-हस्त बढ़ा दो प्रभो,राखी श्रद्धा की मैं लाया।।

1. प्रभो रक्षा सदा करना।
   माया से बचा करके, चरणों में सदा रखना।।

2. तेरा मेरा अटल नाता।
   तू ही मीत मेरा है प्रभो, तू ही मेरा पिता माता।।

3. रहमत की नज़र करना।
   है झोली मेरी खाली, अपने प्यार से तू भरना।।

4. तार टूटे न दिल की कभी।
   आयें लाख विघन चाहे, प्रीत तुझसे रहे बस ज़ुड़ी।।

5. रखना लाज प्रभु मोरी।
   तेरे हाथ में है दाता, मेरे जीवन की डोरी।।

6. युग युग तेरा दास बनूँ।
   तेरी सेवा पूजा मैं, दिलो-जान से किया करूँ।।

भजन नं. 181

तर्ज़-मेरे सतगुरु का दरबार सच्चा--।

टेक-राखी का पर्व है आया प्रभु, मैं राखी लेकर आया।
अपनी रहमत का स्वामी मेरे, रखना तुम हरदम साया।।

1. श्रद्धा से राखी बनाई, मेरे नाथ बढ़ा दो कलाई।
श्री कर कमलों में बाँधने दो, इतनी सी कर दो दाया।।

2. तेरे संग अटल रहे नाता, ऐ मेरे भाग्य विधाता।
तू ही मेरा पिता और माता, कि नेह बस तुझसे ही लगाया।।

3. प्राणों से प्यारे स्वामी, मिले तेरी पाक गुलामी।
बिन तेरी सेवा पूजा के, मुझे रास नहीं कुछ आया।।

4. विधि ने संयोग बनाया, जो राखी का पर्व चलाया।
शिष्य स्वामी के मिलने का यह, सुन्दर अवसर है आया।।

5. तेरा रहूँ मैं सेवादार, और पाऊं सदा तेरा प्यार।
जुड़े तुझसे दिल की तार, यही बस भाव है दिल में समाया।।

6. मेरी यही है इक अरदास, रखना चरणों के पास।
मुझे अपना बनाना दास, कि जिससे व्यापे न मोह और माया।।

भजन नं.182

तर्ज़-जोगी हम तो लुट---।

टेक-दाता द्वार पे मैं तेरे आया।

इक दृष्टि हो इक दृष्टि मेहर की कर दो।।

1. तू ही मीत बन्धु है मेरा तू ही प्राण प्यारा।

बिना तुम्हारे ऐ सतगुरु जी और न कोई सहारा।।

2. ऐसी किरपादृष्टि कर दो सुध बुध भूल मैं जाऊँ।

स्वांस स्वांस में ऐ सतगुरु जी तेरा नाम ध्याऊँ।।

3. मौज तेरी में चला करूँ मैं ऐसा मुझे बना दो।

अपनी प्रेम भक्ति के रंग में मनुआ मेरा रंगा दो।।

4. दासों का तेरे दास कहाऊं, ऐ मेरे सतगुरु प्यारे।

युग युग आऊं भिखारी बनकर दाता तेरे द्वारे।।

भजन नं. 183

तर्ज़-रेशमी सलवार-----।

टेक-दे दो भक्ति प्रेम का हमको दान प्रभु।
गायेंगे हम तेरे सदा गुणगान प्रभु।।

1. तेरे चरणों में हम हैं आये, दिल में यह ले कर आसा।
तेरी पावन भक्ति का ही, मनुआ सदा रहे प्यासा।
करो एहसान प्रभु।।

2. तेरी अनुपम भक्ति की महिमा, जाए न ज़ुबाँ से बखानी।
जिस पे किरपा हो तेरी, पाता वही है प्राणी।
कि सुख की खान प्रभु।।

3. तेरी भक्ति बिना ऐ स्वामी, कई जन्म हैं हम ने गँवाये।
मन माया के धोखे में आकर, हैं कितने कष्ट उठाये।
करो कल्याण प्रभु।।

4. श्री चरणों की भक्ति की बख्शिश, हम पर सतगुरु जी कर दो।
खाली झोली है हमारी, इसे अपनी भक्ति से भर दो।
जायें कुरबान प्रभु।।

5. हम जन्म जन्म दाता जी, तेरे दासनदास कहायें।
तेरी पावन भक्ति करके, जीवन को सफल बनायें।
दे दो वरदान प्रभु।।

भजन नं. 184

तर्ज़-है दीनाबन्धु करुणासिन्धु---।

टेक-नाम के रंग में हमें भी रंग दो करुणा के भण्डार।

1. रंग निराला रंगना ऐसा शोभा हो बेशुमार।
मेरे प्रभु शोभा हो बेशुमार।।

2. धोने पर जो कभी न उतरे ऐसा रंग देना डार।
मेरे प्रभु ऐसा रंग देना डार।।

3. हृदय मन्दिर में पाऊं हमेशा तेरा सुन्दर दीदार।
मेरे प्रभु तेरा सुन्दर दीदार।।

4. और नहीं कुछ चाहिये मुझको मांगूँ नाम आधार।
मेरे प्रभु मांगु नाम आधार।।

5. जब जब भी सौभागय मिले तो पाऊं तेरा दरबार।
मेरे प्रभु पाऊँ तेरा दरबार।।

6. पर उपकारी सतगुरु प्यारे दास पे करो उपकार।
मेरे प्रभु दास पे करो उपकार।।

भजन नं. 185

तर्ज़-चूड़ी मज़ा न देगी-----।

टेक-इठलाता हर्षाता नव सम्वत् आज आया।
नई खुशियाँ और बहारें संग साथ मे ये लाया।।

1. सबसे प्रथम मुबारिक हो आपको प्रभुवर।
नव सम्वत की ये खुशियाँ सब वारू चरणों पर।
युग युग हम पे कायम रहे आपका ये साया।।

2. हर लम्हा हर घड़ी ये तेरी यादों में ही गुज़रे।
ऐसा सरूर भर जो मस्ती के झूलूँ झूले।
यही भाव मेरे दिल में कब से प्रभु समाया।।

3. तेरी मौज में लगा दूं,अपने जीवन की बाजी।
हृदय मन्दिर में देखूं हर पल तेरी ये झांकी।
बड़ी खुशनसीबी मेरी तुझसा स्वामी पाया।।

4. पाँच नियम जो हमारी खातिर हैं बनाये तुमने।
उनको निभाने का आज हम दृढ़ संकल्प कर लें।
देना प्रभु जी हिम्मत इक पल करें न ज़ाया।।

5. फूले फले हमेशा ये आलीशान द्वारा।
इसकी चरण शरण में बीते जीवन ये सारा।
मिलती रहे हमेशा इसकी निर्भय छाया।।

6. नव सम्वत् में ये मांगूँ वरदान तुमसे भगवन।
हरदम विराजो दाता इस नैनों के सन्मुख।
बड़ी अभिलाषा लेकर तेरे द्वार दास आया।।

भजन नं. 186

तर्ज़-जोत से जोत----।

टेक-नाम की घट में तू जोत जला।
सुख रूप अपना तू जीवन बना।।

1. चाहत में खुशियों की हमेशा, सब ही दीवाली मनाते।
खोज गलत होने को कारण, उलटा दुःख हैं उठाते।
अब भी सन्तों की शरण में जा।।

2. गुरु चरणों में विरले कोई, सच्ची दीवाली मनायें।
कर के रोशन मन मन्दिर को, खुशी हकीकी पायें।
इसी अवसर सुनहरी का लाभ उठा।।

3. कभी किसी की विषय रसों से, तृप्ति नहीं हो पाई।
कम न होगी चाहत इनकी, ज़िन्दगी व्यर्थ रुलाई।
कितने ही बेशक जन्म गँवा।।

4. लोक परलोक का दासा तेरे, सन्त उठायें बीड़ा।
जन्म मरण की फिर कभी न, पड़े उठानी पीड़ा।
धुर के संगी को राहबर बना।।

भजन नं. 187

तर्ज़-अफसाना लिख रही----.

टेक-नया साल है आया लेकर खुशी सुहानी।
तुम ज़िन्दगी की लिख लो कोई अमर कहानी।।

1. नया साल हमेशा से ही सदियों से आता आया।
सन्देश सतगुरु का है हमेशा गाता आया।
उठो सफल बना लो अनमोल ज़िन्दगानी।।

2. मिली ज़िन्दगी है तुमको सतगुरु से प्यार कर लो।
भक्ति भजन से दामन है वक्त अब भी भर लो।
तुम साथ लेके जाओ भक्ति का धन रूहानी।।

3. गिनकर तुम्हे मिला है स्वाँसों का यह खज़ाना।
भक्ति की ही लगन में था फर्ज़ इसे लगाना।
अफसोस मगर तुमने इसकी कदर न जानी।।

4. खुश किस्मती से तुमको मिला है यह दर इलाही।
तेरे पापों की यहाँ पर धुल जायेगी स्याही।
है प्रभु की यह इनायत सतगुरु की मेहरबानी।

5. नये साल की खुशी में आओ प्रण यह धारें।
जीवन हमेशा सतगुरु के चरणों में गुजारें।
बड़े भाग्यों से मिला है दरबार यह रूहानी।।

6. परमार्थ सेवा भक्ति में सुख का सार समझो।
श्री सतगुरु का दर्शन प्रभु का दीदार समझो।
श्री सतगुरु को समझो तुम जोत वो नूरानी।।

7. मन को ऐ भोले प्राणी चाहे जिधर लगा लो।
चाहे मुक्ति कर लो हासिल या चौरासी में फँसा लो।
ज़रा सोच समझ लो तुम अपना लाभ और हानी।।

8. दासों की सतगुरु के चरणों में है दुहाई।
हर वक्त हम पे भगवन रखना नज़र सवाई।
भक्तों की लाज भगवन तुमने सदा बचानी।।

भजन नं. 188

तर्ज़-सेवा गुरु की करना है---।

टेक-वर्ष नया यह आया है पैगाम खुशी का लाया है।
दर्शन तेरा पाकर के धन धन भाग मनाया है।।

1. नये वर्ष की ऐ प्रभु जी तुम को लाख बधाई है।
तेरी पावन किरपा से यह घड़ी अनुपम पाई है।
चरणों में तेरे सिर को झुकाके सब दुःख दर्द मिटाया है।।

2. बीते वर्ष में ए दाता जी हुए जो भारी गुनाह हम से।
बख्श देना प्रभु हम जीवों को विनती इतनी सी है तुमसे।
बख्शनहारे तुम हो जग में यश संसार में छाया है।।

3. नये वर्ष में ऐ स्वामी जी हमको यह वरदान मिले।
तेरे पावन प्रेम का हमको थोड़ा सा प्रभु दान मिले।
प्यार तेरा पाने की खातिर द्वार भिखारी आया है।।

4. रहे सलामत राज तेरा प्रभु हम दीनों की यही दुआ।
तेरे प्रेम पुजारी बन कर आते रहें तेरे द्वार सदा।
दासनदास के हृदय में बस ये ही भाव समाया है।।

भजन नं. 189

तर्ज़-मिलो न तुम तो----।

टेक-सन्तों के सतसंग में जाना, और नर तन लेखे लगाना।
यही है फर्ज़ तेरा।।
मन मन्दिर में प्रभु बसाना, और नाम की जोत जगाना।यही है---।

1. लाख चौरासी फिर फिर, जन्म कई है गँवाये।
मुक्ति की राह कौन, सतगुरु बिना बताये।
दुनियां में न दिल अटकाना, नाम का धन कमाना।।

2. दिन और रात मिल के, तेरी उमर हैं खा रहे।
सोये मोह नींद में जो, जीवों को सन्त जगा रहे।
भला बुरा अब सोच के अपना, तू नाम हमेशा जपना।।

3. स्वाँसों की अपनी पूँजी, मत खोना नादान तू।
खरीद ले इसके बदले, परलोक का सामान तू।
सुरति अपनी जग से मोड़, और नाम के संग तू जोड़।।

4. जोड़ ले रूहानी रिश्ता, अब तो सतगुरु प्यारे से।
लाख चौरासी कटती, जिन के एक इशारे से।
मिला है अवसर दास गनीमत, सन्तों की मान नसीहत।।

भजन नं. 190

तर्ज़-ऐ मेरे दिले----।

टेक-ऐ प्राणी भक्ति बिना, सुख मिलना मुश्किल है।
माया से परिपूरण, दुनियां की झिलमिल है।।

1. दिल से तू सदा चाहे, सुख शान्ति अपार मिले।
करे कोशिश लाख मगर, नहीं फिर भी करार मिले।
जीवन में दुःख लेकिन, हो जाता शामिल है।।
2. सुख नहीं सामानों में, तुझे सन्त बताते हैं।
है खोज गलत तेरी, तुझे यही समझाते हैं।
मालिक को भुला तूने, दिया और कहीं दिल है।।
3. इच्छा तुझे भक्ति की, संसार में लाई है।
सुख खानी मगर भक्ति, तूने दिल से भुलाई है।
बिन भक्ति मानुष जन्म, हो जाता निष्फल है।।
4. दुनियाँ में रहते हुए, कर बेशक सब धन्धे।
नहीं भक्ति बिना कटने, काल माया के फन्दे।
गुरु कृपा से होना, यह मसला तेरा हल है।।
5. सतगुरु की शरण ले ले, बन जाये कुछ तेरा।
गुरु भक्ति कमाने से, कटे चौरासी फेरा।
खुशकिस्मती से दासा, मिलता पीरे-कामिल है।।

भजन नं. 191

तर्ज़-हाय यह मजबूरी---।

टेक-ऐसी क्या मजबूरी, है क्यों मालिक से दूरी।
तुझे चैन कैसे आये, तेरी दो दिल की ज़िन्दगानी।
भक्ति ही क्यों न कमाये।।

1. रस विषयों के बहुत लिये, इनमें ही उमर गँवाई।
भँवरा बन भक्ति रस का, तू जा सतगुरु शरणाई।
और मार के अपने मन को, अब नाम का धन कमाये।।

2. भक्ति मार्ग है सर्वोत्तम, अपनायें किस्मत वाले।
ठोकरों से हमें बचाते, वे हैं आनन्दपुर वाले।
भक्ति राज़ों को समझाने, हैं निजधाम से आये।।

3. जन्म मरण का यह बन्धन, सहजे नाहीं टूटे।
इस दम का क्या है भरोसा, आज है कल छूटे।
चौरासी के चक्कर से, मेरा सतगुरु आन बचाये।।

4. कितने जन्म हैं बीत गये, नर तन की आस लगाये।
चरणों से लिपटायें सतगुरु, शुभ घड़ी कब आये।
सन्त मिलन का अवसर दासा, बड़भागी ही पाये।।

भजन नं. 192

तर्ज़-बैठी हूँ राह गुज़र पर----।

टेक-तू जग में आया किसलिए, ज़रा सोच मन में प्राणी।
गिनती के स्वाँसों की है, तेरे जीवन की कहानी।।

1. नहीं हैं हितैषी सच्चे, जग वाले मीत तेरे।
जतला के प्रीत झूठी, रहते तुझे जो घेरे।
धोखे में ज़िन्दगी अब, नहीं वृथा है गंवानी।।
2. मन का मोड़ के रुख, मालिक का ज़िकर कर तू।
भवसागर है भयानक, तरने की फिकर कर तू।
तेरी किश्ती सतगुरु ने, अन्त पार है लगानी।।
3. नर तन है बेशकीमत, फैज़ तू उठा ले।
सतगुरु की शरण ले के, आवागमन छुड़ा ले।
कर स्वांस स्वांस सुमिरण, तेरी संवरे ज़िन्दगानी।।
4. अनमोल स्वाँसों का तू, लाया था जो खज़ाना।
आखिर हिसाब उसका, इक रोज़ है चुकाना।
सत्तनाम धन तू जोड़ ले, गर लाज है बचानी।।
5. किसी ने नहीं किसी को, देखा साथ कुछ भी लाते।
सभी खाली हाथ आते, सभी खाली हाथ जाते।
बस नाम की ही दासा,दौलत है साथ जानी।।

भजन नं. 193

तर्ज़-बाबुल की दुआएँ----।

टेक-तू तो है पुतला माटी का, फिर काहे अभिमान करे।
भूल प्रभु को भुलाने की, फिर काहे नादान करे।।

1. कई नीच योनियाँ भटक भटक, यह सुन्दर अवसर पाया है।
कर साधन कोई मुक्ति का,सन्तों ने यह समझाया है।
क्यों विषय वासना में फँस के, अपना तू नुकसान करे।

2. जीवन की कोई गारंटी नहीं, इक रोज़ तो आखिर जाना है।
मालिक की सच्ची दरगाह में, स्वांसों का लेखा चुकाना है।
ले के शरण अब सतगुरु की,क्यों न हासिल आत्म-ज्ञान करे।।

3. जग रचना काल और माया की, सतपुरुष यही फरमाते हैं।
सूने घट में तेरे सदा, ज्ञान का दीप जलाते हैं।
फिर क्यों न दयालु सन्तों पे, तू न्यौछावर दिलो-जान करे।।

4. तू करता चल निष्काम कर्म, इच्छा न करना फल की कभी।
सतगुरु पे अपना भरोसा रख, चिन्ता न करना कल की कभी।
कर स्वाँस स्वाँस सुमिरण दासा, फिर चाहे जो भगवान करे।।

भजन नं. 194

तर्ज़-तेरी याद आ रही है---।

टेक-अब जाग जा तू प्राणी।

भक्ति कमाले, प्रभु को रिझा ले, बीती जाये ज़िन्दगानी।।

1. दुर्लभ नर तन पाके मन का, रुख तू मोड़ ले।
तज के झूठी मोह ममता को, सतगुरु सो जोड़ ले।
मत खा धोखा, यही है मौका, न कर मनमानी।।

2. दर दर का तुझे भिखारी, खवाहिशों ने है बनाया।
भूल के तूने कुल मालिक को, जग में दिल अटकाया।
झूठी है रचना, माया से बचना, कहती सन्त वाणी।।

3. सन्त हैं परम हितैषी तेरे, चाहें तेरी भलाई।
भरें रूहानी दात से दामन, जो आये शरणाई।
भाग्य जगा ले, भक्ति कमा ले, जो है सुख की खानी।।

4. यही है अवसर भव तरने का, दासा मन समझा ले।
दोनों जहां में काम जो आये, नाम की पूँजी कमा ले।
सन्त चेतायें, तुझे समझायें, करके मेहरबानी।।

भजन नं. 195

तर्ज़-परवरदिगारे आलम----।

टेक-अब चेत जा तू बन्दे, यह दुनियां है सराये।
बिन सतगुरु के तेरे, कोई न काम आये।।

1. है अजब यह काल चक्कर, जिससे बचे न कोई।
इस जग के कच्चे नाते, देंगे तुझे न ढोई।
क्यों सतगुरु को फिर तू, अपना नहीं बनाये।।

2. जिन को कहे तू अपना, सामान है सरकारी।
इन पे जमा के कब्ज़ा, क्यों भूल करता भारी।
धोखे में इस माया के, तू भी न पल गँवाये।।

3. सन्तों की महिमा का तो, किसी ने न पार पाया।
चरणों में सद्गुरु के, जिसने है दिल लगाया।
वह भाग्यशाली गुरुमुख, भक्ति भण्डार पाये।।

4. साथी हैं धुर के सतगुरु, इनसे ही नेह लगा ले।
घाटे में कभी रहे न, बेशक यह आज़मा ले।
इक बार प्यार में गर, कुरबान दास जाये।।

भजन नं. 196

तर्ज़-सफल आज जीवन हुआ----।

टेक-तेरा नाम प्रभु जी है कैसा प्यारा।
दिल का सहारा है आँखों का तारा।।

1. जिस ने भी ओट इस की गही है।
उसी को ही ऊँची पदवी मिली है।
मिला सहज में उस को भव से किनारा।।

2. मुश्किल को आसान है यह बनाता।
सभी आफतों से सदा है बचाता।
इक बार इस का जो लेवे सहारा।।

3. बिना नाम के सब ही झूठी बड़ाई।
लालच में लग करके आयु गँवाई।
न सोचा विचारा, जुए में जन्म हारा।।

4. दासा लगन नाम की ही लगाना।
यही लाभ सच्चा है लेकर के जाना।
इसी से ही धन्य होगा जीवन तुम्हारा।।

भजन नं. 197

तर्ज़-उठ जाग मुसाफिर----।

टेक-है बनी बनी के सब साथी, बिगड़ी में हमारा कोई नहीं।
धन वालों के हमदर्द सभी, निर्धन का सहारा कोई नहीं।।

1. थे दोस्त हमारे दुनियाँ में, जब पास हमारे पैसा था।
जब वक्त गरीबी का आया, दिलदार दिलारा कोई नहीं।।

2. पैसे से इज्ज़त होती है, पैसे वाला ही अक्लमन्द।
सब खूबी पैसे की होती है ,बिन पैसे गुज़ारा कोई नहीं।।

3. जीना उसी का उचित है, जिस के घर में पैसा होवे।
निर्धन का मरना बेहतर है, जब पूछने वाला कोई नहीं।।

4. पैसे से स्त्री प्यार करे, पैसे से नाते दुनियाँ में।
जब समय बुरा आ जाता है , तब बनता प्यारा कोई नहीं।।

5. हमदर्द हज़ारों होते हैं,जब तक पैसे की ताकत है।
इस दुनियां में सतगुरु के बिना,दास का सहारा कोई नहीं।।

भजन नं. 198

तर्ज़-ज़रा सामने तो आओ----।

टेक-अब सुन ले तू गाफिल बन्दे, सतपुरुषों की जो आवाज़ है।
गुरु भक्ति बिना दरगाह में, नहीं होना ज़रा भी लिहाज़ है।।

1. मालिक से क्यों बेमुख हो के, भोगों का तू गुलाम हुआ।
मैं मेरी के चक्कर में फँसकर, नाहक तू बदनाम हुआ।
बड़ी शर्म की ये तो बात है, बना मन का तू मुहताज है।।

2. क्यों न शरण में सन्तों की आकर, भक्ति रस का पान करे।
उठ कर अपने शरीर से ऊँचा, पैदा आत्मज्ञान करे।
हुई जाती जीवन की रात है, जिस पे करता तू झूठा नाज़ है।।

3. कर ले कमाई गुरु शब्द की, बने जो मददगार सदा।
श्री आज्ञा और मौज में पाये, सतगुरु का तू प्यार सदा।
यही सन्तों की सच्ची दात है,भव तरने को नाम जहाज़ है।।

4. दाति पिआरी विसरिया दातारा, ऐसा कभी तुम न करना।
सतगुरु ही हैं साथी धुर के, उनका ध्यान सदा धरना।
दासा भेद की यही तो बात है, गुरु मौज ही भक्ति राज़ है।।

भजन नं. 199

तर्ज़-आ हिरदय के मन्दिर---।

टेक-कर देर न ऐ बन्दे, प्रभु नाम ध्या ले।
अनमोल है तन तेरा, कुछ लाभ उठा ले।।

1. हर पल में घट रहा है तेरा ये जीवन।
पर तू यह सोचे है, कि बढ़ रहा दिन दिन।
गफलत का परदा तू, दिल से हटा ले।।

2. कुछ सोच ज़रा तूने यह, तन क्यों है पाया।
किस काम के लिए प्रभु ने, तुझको भिजवाया।
आ करके शरण सन्तों की, सेवा कमा ले।।

3. सन्तों की कर के सेवा, तू उनको रिझाना।
झोली को फैला कर तू, कर भक्ति की चाहना।
हर हुक्म में उनके तू, सिर अपना झुका ले।।

4. ले दात सेवा भक्ति की, बन सबका तू प्यारा।
चमकेगा तेरा जग में, फिर भाग्य सितारा।
खुद को प्रभु चरणों का, तू दास बना ले।।

भजन नं. 200

तर्ज़-नील गगन पर उड़ते----।

टेक-जग माया में भटके प्राणी आ-आ-आ।
श्री चरणों में आके अपना जीवन सफल बना।।

1. लाख चौरासी भ्रम के ये हीरा तन पाया।
बना न सच्चा पारखी यूँ ही व्यर्थ गंवाया।
समय है अब भी जान ले इस हीरे का मोल है क्या।
चिड़ियाँ चुग गईं खेत पीछे फिर पछतायेगा।।

2. झूठा जग ये बाँवरे और झूठे जग वाले।
ऊपर से मीठे बड़े पर मन के हैं काले।
जब तक स्वार्थ है इन सबका रखते गले लगा।
बिन स्वार्थ ये बात न पूछें कहदें जा रे जा।।

3. धन दौलत और महल ये दो दिन का है मेला।
सभी यहीं रह जायेंगे जाना तुझे अकेला।
इनमें से कुछ भी तेरे साथ ना जायेगा।
श्री चरणों का ध्यान ही बेड़ा पार लगायेगा।।

भजन नं. 201

तर्ज़-चल उड़ा रे पंछी----।

टेक-चल उड़ जा रे पंछी कि तुझको दूर देश है जाना।

1. याद करो उस घर की बातें जिसमें तेरा बसेरा था।
अमर लोक नित बरसे अमृत सुख मन सेज पर डेरा था।
तेरी तो जागीर वही थी ना जोगी वाला फेरा था।
भूल गया क्यों भोले पंछी अपना पद निरवाणा।।

2. अपने घर को छोड़ के मूर्ख आया देश पराये।
महल बावड़ी बाग बगीचे क्या क्या खेल रचाये।
अपने खेल में आप फँसा तू कर्म करे मन भाये।
अपना आप गँवाया रे बन्दे तूने अपना ठिकाना।।

3. देख हाल तेरा आये दयाल हैं रूप तेरा दर्शाने।
अलख निरन्जन सब दुख भञ्जन तू माने या न माने।
जाग जा अब तो खुद ही मालिक आये तुझे जगाने।
मूँड पकड़ कर रोयेगा जो अब भी तू नहीं माना।।

भजन नं. 202

तर्ज़-दिल दिया है----।

टेक-क्यों तू आया इस जहां में, मन में कुछ तो विचार कर।
क्या किया तूने ऐ प्राणी, देही उत्तम धार कर।।

1. बन्दगी प्रभु की करूँगा,वायदा तूने था किया।
दुनियां के धन्धों में फंस के, भूल गया तेरा जिया।
किये वायदे को पूरा कर ले,कहते सन्त पुकार कर।।

2. दुनियाँ के पीछे तू अपनी, ज़िन्दगी न यूँ लुटा।
बेशकीमत स्वाँस तेरे, लेखे में इनको लगा।
छोड़ दे जग की मुहब्बत, नाम से ही प्यार कर।।

3. दिन दिन कर जीवन तेरा, हाथ तेरे से जा रहा।
कूच करना डेरा इक दिन, तुझको है यह सुना रहा।
साथ ले जाने की खातिर, सामान कुछ तैयार कर।।

4. जीव के सच्चे हितैषी, वक्त के हैं सतगुरु।
ले शरण दासा तू उनकी, हो जीवन तेरा सुर्खरु।
मान ले तू उनकी आज्ञा, भव से देंगे पार कर।।

भजन नं. 203

तर्ज़-सतगुरु वचन अनमोल मोती---।

टेक-इक पल कभी न व्यर्थ गँवा, मानुष जन्म का लाभ उठा।
पाया है अनमोल समय यह, गफलत में न इसे गँवा।।

1. समय की बड़ी तेज है चाल, रख तू हरदम इसका ख्याल।
वरना होगा तू पामाल, जो न अपना काम किया।।

2. भूल न तू अपना इकरार, कर मालिक संग सच्चा प्यार।
सन्त तुझे करते होशियार, मोह की नींद से जाग ज़रा।।

3. वक्त की जिसने कद्र है जानी, उसने असली रम्ज़ पहचानी।
है यह कीमती तन इन्सानी, इससे पूरा लाभ उठा।।

4. दासनदासा सोच विचार, नर तन मिले न बारम्बार।
पड़ जा सतगुरु के चरणार, ये है तेरे जन्म का लाहा।।

भजन नं. 204

तर्ज़-दुनियां का बन के मत रह---।

टेक-जप नाम तू प्रभु का, चाहे अगर भलाई।
बिन नाम के किसी ने, सुख शान्ति न पाई।।

1. साचा यह नाम प्रभु का, जिसने हृदय बसाया।
सतगुरु से भेद लेकर, है स्वाँस स्वांस ध्याया।
उसके हृदय दर्पण से, उतरी जन्मों की काई।।

2. जिस जिस ने नाम ध्याया, भवसिन्धु तर गया वह।
दुनियाँ में नाम रोशन, अपना है कर गया वह।
ऐसे भक्तों की महिमा, सद्ग्रन्थों ने है गाई।।

3. संयम नियम और जप तप, निष्फल हैं नाम के बिन।
बिना नाम के ऐ प्राणी, जायेगा वृथा जीवन।
दरगाह में मालिक की, होगी बहुत रुसवाई।।

4. सतगुरु की शरण आके, भक्ति का धन कमा ले।
दासों का दास बन कर, जीवन सफल बना ले।
फिर गुरु कृपा से होगी, सतलोक में रसाई।।

भजन नं. 205

तर्ज़-मिलो न तुम तो----।

टेक-जग जंजाल है मिथ्या सारा, नाम का ले ले सहारा।
कटे तेरी लाख चौरासी।।

1.माया के सामान यहाँ, है सारे बेगाने।
सुरत फँसाये फिर क्यों, इन में तू दीवाने।
झूठी है सब मान बड़ाई. नाम ही अन्त सहाई।।

2. आया तू सौदा करने, दुनियाँ के बाज़ार में।
फायदा ही फायदा है, नाम के व्यापार में।
सन्तों ने है हाट सजाई, लो सच्चा सौदा भाई।।

3. बेच दे मन अपना, तू सतगुरु के पास।
सभी होंगे अपने आप, तेरे कारज रास।
कर के उनकी सेवकाई, मिले जन्म मरण से रिहाई।।

4. तरने को भव से दासा, सतगुरु नाम जहाज़ है।
यही भक्ति मुक्ति का, एक गहरा राज़ है।
सन्त हितैषी तुझे जगायें, निज घर की राह बतायें।।

भजन नं. 206

तर्ज़-जीवन जाये न बीत---।

टेक-कर ले प्रभु संग प्रीत, यह तन नहीं फिर फिर पाये।
यही सीख ले रीत, नहीं फिर कभी पछताये।।

1. प्रीति प्रभु की है सुखदायी, निजघर तेरी करे रसाई।
प्रभु ही सच्चे मीत, जो भय से मुक्त करायें।।

2. प्रेम है साधन ऐसा निराला, धुल जाये जिससे मन काला।
होवे न फिर भयभीत, जन्म योनि नहीं आवे।।

3. दुनियाँ से दिल खाली कर ले, प्रभु प्रेम से इस को भर ले।
ऐसा जुड़ा जाये चीत, कभी छूटन नहीं पाये।।

4. छोड़ के जग की तेरी मेरी, दासनदास ना कर देरी।
गा सतगुरु के गीत, कि जग में श्रेष्ठ कहाये।।

भजन नं. 207

तर्ज़-बड़ा बेदर्द जहाँ---।

टेक-नाम से प्रीत लगा ले, नाम से सुरित लगा ले।
नाम प्रभु का बन्दे हर पल ध्या ले।।

1. नाम का अमृत जो भी पीवे, तीनो ताप टलें।
दरगाह में इक नाम ही तेरे साथ चले।
नाम कलयुग को जारे, नाम हौं मैं को मारे।।

2. सतगुरु नाम जहाज़ है चढ़े पार हो जाये।
नाम से सुरति जोड़ ले सो गुरुमुख कहलाये।
नाम की चढ़े खुमारी, नाम की महिमा भारी।।

3. नाम ज्योति दिल में जगे भगें पाप मद खोट।
गुरुमुख बनकर जो रहे पावे गुरु की ओट।
गुरु बन्धन को काटें भजन सुमिरण से जागे।

4. कलयुग में प्रभु नाम ही है जगतारन हार।
दासा नाम पे जाईये बारम्बार बलिहार।
नाम ने लाखों तारे, नाम से काल भी हारे।।

भजन नं. 208

तर्ज़-मन ले सतगुरु का सहारा---।

टेक-जप ले तू सिरजनहारा।

तन मानुष जो है धारा।।

1. पाया मानुष जन्म अमोलक, भागों की है निशानी।
स्वाँस स्वांस प्रभु नाम सुमिर के, सुरत शब्द से मिलानी।।

2. संयोग बड़ा यह दुर्लभ प्यारे, बारबार न पाये।
कर्म कमाना नेक सदा ही, जीवन सफल हो जाए।

3. सन्त हैं तेरे परम हितैषी, करते हैं राहनुमाई।
मान ले उनकी श्री आज्ञा को, दरगाह होगी रसाई।।

4. दासा हिदायत सतपुरुषों की, इक पल तू न भुलाना।
कुल मालिक का नाम प्यारा, हिरदे अपने बसाना।।

भजन नं. 209

तर्ज़-हकीकत में मज़ा----।

टेक-कर्म तू नेक कमाया कर, पाया तूने जो है नर तन।
कहना सन्तों का यह प्यारे, किया कर तू सदा सुमिरण।।

1. चौरासी लाख योनि में, उत्तम नर तन ही है प्यारे।
देही उत्तम को पा करके, कमा ले भक्ति का तू धन।।

2. प्रभु प्यारे से मिलने का, मिला अवसर सुनहरा है।
उठा ले लाभ तू पूरा, मान सन्तों के ले तू वचन।।

3. मिलेगा सुख तेरी रूह को, प्रभु का नाम ध्याने से।
सहज ही हो जायेगा खतम, तेरा दुनियाँ में आवागमन।।

4. ऐ दासा शिक्षा सन्तों की, सदा दिल में बसा ले तू ।
पायेगा हिरदय मन्दिर में, प्रभु का तू सदा दर्शन।।

भजन नं. 210

तर्ज़-दुनियां में ऐसा कहाँ----।

टेक-गुरु चरनन संग प्रीत जो लगायेगा।
भक्ति का गूढ़ा रंग चित्त पे चढ़ायेगा।।

1. तज कर दुनियाँ के मान अपमान को।
नयनों में बसाये सतगुरु के ध्यान को।
खुदी को मिटा के चरणों में झुक जाएगा।।

2. परम हितैषी कोई गुरु बिन न अपना।
महामाया काल की तो रचना है सपना।
ममता के दाग जो भी मन से हटायेगा।।

3. प्रेम के रंग में ही तन मन भीजे।
रूठे जमाना चाहे, सदगुरु रीझें।
उन की लगन में जो सुधि बिसरायेगा।।

4. हरदम जो चाहे सेवा दरबार की।
बन्दगी सुबह शाम लगन गुरु प्यार की।
हस्ती को मिटा के दास, ज़िन्दगी वह पायेगा।।

भजन नं. 211

तर्ज़-मुझे कोई मिल गया----।

टेक-गाफिल क्यों इस कदर तू, है हो रहा ऐ प्राणी।
गुरु से न की मुहब्बत, तेरी सख्त यह नादानी।।

1. जिन को समझ के अपना, कुरबान जान करता।
है चाल यह जगत की, कोई न अपना बनता।
पछतायेगा तू आखिर न रहेगी जब जवानी।।

2. तुझ को दिया निरन्तर, इस मन चपल ने धोखा।
विषयों की तेज अगन में, कई बार तुझ को झोंका।
फिर भी सदा ही तूने, इस की ही बात मानी।।

3. कभी बैठ संगति में प्रभु की न कीन्हीं चर्चा।
जग का बना दिवाना, तुझ को न भाई अर्चा।
जग की यह झूठी दौलत तेरे न काम आनी।।

4. दरगाह में शर्मसारी, होनी है तुझ को भारी।
श्वासों की पूँजी दुर्लभ, तूने गँवा दी सारी।
ऐ दास ज़िन्दगी की गुरु प्यार है निशानी।।

भजन नं. 212

तर्ज़-जोत से जोत----।

टेक-जोड़ के धन सच्चे नाम का तू।
ले ले टिकट निज धाम का तू ।।

1. काल और माया की रचना मे, हुआ तू ऐसा दीवाना।
कहाँ से आया कहाँ है जाना, बिसरा पता ठिकाना।
कर फिकर कल्याण का तू।।

2. दुनियाँ खेल है चौरासी का, लेखा है कर्मों का।
गुरु कृपा बिन कटे न हरगिज़ चक्कर यह जन्मों का।
दामन पकड़ मेहरबान का तू।।

3. सन्त हितैषी ही केवल हैं, नाम दान के दाता।
सच्चे धन से भरें झोलियाँ, जो भी शरण है आता।
ले ले सहारा सच्चे नाम का तू ।।

4. अर्शों से हैं धरा पे प्रकटे, सन्त रूप भगवान।
नाम जहाज़ में बिठा के दासा, ले जायें निज धाम।
वासी है जिस मुकाम का तू।।

भजन नं. 213

तर्ज़-मेरी मुहब्बत-----।

टेक-चार दिनों की तेरी ज़िन्दगानी।
यह सारी दुनियां है आनी जानी।
जप ले रे जप ले नाम सतगुरु का प्राणी।।

1. कोटि जन्म के पुण्य से यह मानुष तन मिलता है।
भाग्य उसका ही खिलता है, जो सतगुरु मौज में चलता है।
मौज गुरु की ही सुखों की खानी।।

2. सतगुरु का शब्द जो अपने दिल में बसाएगा।
जगत में सब सुख पायेगा नहीं तो फिर पछतायेगा।
उतर आएगा आँखों से पानी।।

3. नाम के सुमिरण मात्र से लाखों प्राणी तर गये हैं।
उजाला जग में भर गये हैं, सफल जीवन को कर गये हैं।
दुनियाँ उनकी है करती कहानी।।

4. युग युग में अवतार धार कर सतगुरु आते हैं।
जीव को राह दिखाते हैं, झंझटों से छुड़वाते हैं।
दास क्या महिमा गाये ज़ुबानी।।

भजन नं. 214

तर्ज़-तुझको पुकारे मेरा प्यार----।

टेक-कर ले प्रभु संग प्रीत, तेरा जीवन दो दिन चार रे।
ऐसी सुनहरी घड़ियाँ पाये फिर नहीं बारम्बार रे।।

1. प्रीत प्रभु की अति सुखदाई मिलती शुभ कर्मों से।
निज घर में ये करती रसाई काटे बन्धन जन्मों के।
बाजी जन्म की जीत साची दरगाह में होवे नहीं हार रे।।

2. सतगुरु सा हितकारी जगत में कोई नहीं है।
हर पल पल अपने भक्तों की रखते लाज यही हैं।
ये ही हैं साचे मीत कर इनके चरणों से प्यार रे।।

3. जग की हवस से खाली कर ले दिल तू अपना।
मन के मन्दिर में अपने प्रभु को बसा कर रखना।
ऐसा जुड़ जाये चीत कभी टूटने पाये नहीं तार रे।।

4. छोड़ दे तेरी मेरी कर मत देरी दासा आजा शरण में।
सिर के बदले प्रीत मिल जाये करले सफल जन्म ये।
गा सतगुरु के गीत नैया ले जायेंगे भव पार रे।।

भजन नं. 215

तर्ज़-उठ जाग मुसाफिर----।

टेक-कुछ सोच समझ गाफिल बन्दे, दुनियां में दिल को फँसाया क्यों।
भयभञ्जन परमपिता भगवान की, याद को दिल से भुलाया क्यों।

1. मोह माया के मद में माता, दिन रात विषय के रंग राता।
हरि भजन बिसारा सुखदाता, परदा गफलत का छाया क्यों।।

2. विषयों में सुख क्षणमात्र मिले, फिर पावे कष्ट कलेश घने।
दुःख पाकर बारम्बार मगर, विषयों से चित्त न हटाया क्यों।।

3. पूरब पुण्य से यह जन्म मिला, बिन भगती भजन गया विरथा।
यह मानुष तन अनमोल रतन, बदले कौड़ी के गँवाया क्यों।।

4. यह अवसर भाग्य से पाया था, पर लाभ न इसका कुछ भी लिया।
जब समय अकारथ बीत गया, फिर रोया और पछताया क्यों।।

5. हरिनाम को दासनदास सुमिर, है वक्त अभी गफलत मत कर।
बिगड़ी जन्मों की जाय सँवर, आखिर इतना घबराया क्यों।।

भजन नं. 216

तर्ज़-कसमें वादे प्यार----।

टेक-जग में मोह में मत फँस प्राणी, है दुःख रूप सकल संसार।
कोई किसी का नहीं बनेगा,झूठा है नातों का प्यार।।

1. बहुत जन्म से दुःख पा पाकर, मानुष तन में आया।
मोह माया में सुरति फँसाकर, काहे आपको बँधवाया।
मन समझा ले बाँवरे प्राणी, नहीं तो फिर पछतायेगा।।

2. भगती भजन भुलाकर बंदे, क्यों कर तू सुख पावेगा।
रस भोगों में सुख नहीं हरगिज़, धोखा फिर फिर खावेगा।
भजन कमा ले बाँवरे प्राणी, नहीं तो फिर पछतायेगा।।

3. सतगुरु सन्त जगत में आये, पर उपकार के ही कारण।
शरण लगे तू भी तर जावे, वे कहलाते जगतारण।
गुरु को रिझाले बाँवरे प्राणी, नहीं तो फिर पछतायेगा।।

4. भजन करे सतगुरु को ध्यावे, जग के फन्द कटावे।
मुक्तिधाम को पाकर दासा, बहुरि न जोनी आवे।
मन समझा ले बाँवरे प्राणी, नहीं तो फिर पछतायेगा।।

भजन नं. 217

तर्ज़-तू प्यार करे या ठुकराये-----।

टेक-जग में आकर के ऐ प्राणी, गर भक्ति तूने कमाई है।
यही लाभ है तेरे जीवन का, इसमें ही तेरी भलाई है।।

1. भेजा है प्रभु ने तुझको यहाँ, कुछ साचा धन कमाले तू।
हर स्वाँस स्वाँस में सुमिरण कर, जीवन यह सफल बना ले तू।
आलस्य न कर इस काम में तू, यह ही तेरी दानाई है।।

2. सुख का साधन है फकत भक्ति, मुक्ति का यही इक द्वारा है।
इस दुर्लभ पावन वस्तु को, हिरदे में जिसने धारा है।
सहजे ही मालिक के घर में, उस की हो गई रसाई है।।

3. चाहे राजा हो या रानी, भक्ति बिन है व्यर्थ ज़िन्दगानी।
कुदरत के घर मन्ज़ूर वही, जो भक्तिवन्त होवे प्राणी।
हरगिज़ उस प्रभु को भाये नहीं, थोथी सब जग चतुराई है।।

4. जो बीता समय सो बीत गया, आगे के लिए हुशियार हो तू।
फरमाते हैं जो सन्त तुझे, उस काम के लिये तैयार हो तू।
जो घड़ी गुज़र जाये दासा, फिर कभी न वापिस आई है।।

भजन नं. 218

तर्ज़-ओ दूर के मुसाफिर---।

टेक-गिनती के स्वाँस पाये, कुछ नाम धन कमा लो।
विरथा न जन्म जाये, अपना भी कुछ बना लो।।

1. इस जग के प्यार में तुम, हरगिज़ न चित फँसाना।
परिणाम होगा उलटा, बेशक यह आज़मा लो।।

2. मन की मति पे चल के, दुष्कर्म जीव करते।
नहीं पाप छुप सकेंगे, चाहे लाख तुम छुपा लो।

3. भक्ति है सार वस्तु, सन्तों के वचन मानो।
दयालु हैं बख्श देंगे, झोली ज़रा सँभालो।।

4. दुनियाँ की तज के झिलमिल, बन जाओ एकान्त सेवी।
कर साफ दिल का कमरा, सतगुरु को वहाँ बसा लो।।

5. हैं सदगुरु जी रक्षक, उन की ही आस रखना।
उनके ही दास बन कर, दिल में उन्हे बिठा लो।।

भजन नं. 219

तर्ज़-बाबुल की दुआएँ----.

टेक-कुछ सोच विचार ले ऐ प्राणी, यह जन्म नहीं हर बार मिले।
तेरा लोक परलोक सँवर जावे, जो सतगुरु तारणहार मिले।।

1. इस फानी दुनियां में बन्दे, तू भक्ति कमाने आया है।
झूठी ममता के धन्धों में नहीं, मूल गँवाने आया है।
चाहत हो मन में यही तेरे, श्री गुरु चरणों का प्यार मिले।।

2. चौरासी के चक्कर में है, सुख-दुःखों का अम्बार घना।
सन्तों की शरण में जा प्यारे, करले उनसे तू प्यार घना।
श्री आनन्दपुर सा त्रिभुवन में, नहीं और कोई दरबार मिले।।

3. ग्रन्थों की वाणी पढ़ सुनके, यदि उस पर पूरा अमल करो।
सुधार के अपने कर्मों को, अपना जीवन तुम सफल करो।
फिर ऐसे गुरुमुख प्यारों को, श्री परमहंस अवतार मिले।।

4. लेकर के सहारा सतगुरु का, काँटा गर मन का बदल डाले।
भक्ति की गाड़ी पर चढ़के, मारग अपना ही बदल डाले।
निजदेश पहुँच के दास तुझे, मालिक का सच्चा द्वार मिले।।

भजन नं. 220

तर्ज़-आ लौट के आजा----।

टेक-कर गुरु चरणों से प्यार सफल हो जग में आना तेरा।
जोड़ शब्द से सुरति की तार, भरा इसमें कल्याण तेरा।।

1. कोटि जन्म गये यूँ ही अकारथ, मालिक से जोड़ा ना नाता।
जिस कारण तू आया जगत में भूल गया वह वादा।
अब वक्त न कर बेकार, प्रभु चरणों में चित्त को लगा।।

2. अनमोल पूँजी स्वांसों की प्यारे इसको न यूं ही लुटाना।
सुमिरण भजन और सतगुरु की सेवा में अपनी ज़िन्दगी बिताना।
सच्चे सुख शान्ति का भण्डार तू इससे दिन दिन प्रीत बढ़ा।।

3. सुन ले नसीहत सतपुरुषों की इसमें भरा तेरा हित है।
भक्ति बिना नहीं आज तलक भी पाई किसी ने राहत है।
इस जन्म की बाजी न हार, तू कर ले कुछ तो विचार ज़रा।।

4. सतगुरु शरण में आकर दासा, छुटकारा जग से तू पा ले।
इनकी श्री मौज आज्ञा में चलकर, काम तू अपना बना ले।
हो जायेगा भव से पार कटेगा चौरासी फेरा।।

भजन नं. 221

तर्ज़-रहा गर्दिशों में हरदम----।

टेक-मालिक की बन्दगी को, हरगिज़ नहीं भुलाना।
दुनियाँ सराय-फानी इसमें न दिल लगाना।।

1. पाया नसीबों से है, अनमोल तन यह प्राणी।
सुमिरण भजन तू करके, जीवन सफल बनाना।।

2. दुनियाँ के धन्धों को तू, मत जान सच्चा प्यारे।
बिन नाम के हैं निष्फल, इनमें न दिल फँसाना।।

3. मान आरिफों का कहना, इस में तेरी भलाई।
ज़रा खोज अपने घट को, मिले भक्ति का खज़ाना।।

4. मकसद यही है असली, आने का इस जहां में।
जन्मों से बिछुड़ी रूह को, मालिक के संग मिलाना।।

5. बड़भागी दास है वह, जिसने यह बात जानी।
इक सतगुरु हैं अपने, बाकी जगत बेगाना।।

भजन नं. 222

तर्ज़-मेरी याद में तुम----।

टेक-नाम का पी ले तू भर भर प्याला।
जिस का नशा नहीं उतरने वाला।।

1. नाम का दीपक तू घट में जलाना।
मन का अन्धेरा सब दूर भगाना।
तेरे मन मन्दिर में हो जाये उजाला।।

2. नाम जप जप के लाखों तरे हैं।
दुःख कष्ट उनके सब ही टरे हैं।
नाम में ऐसा है जादू निराला।।

3. सुरत अपनी नाम मे सदा लीन रखना।
पल पल तू सच्चा नाम ही जपना।
नाम ही अन्त हो तेरा रखवाला।।

4. कर नाम सुमिरण अब तू भी दासा।
पलट जाये तेरी भी किस्मत का पासा।
लोक परलोक तेरा हो जाये सुखाला।।

भजन नं. 223

तर्ज़-मुझे और जीने की चाहत----.

टेक-प्रभु नाम का तू ले ले सहारा।
हो जाये भव से तेरा निस्तारा।।

1. है नाम का सुमिरण अति सुखदाई।
कर स्वाँस स्वाँस तू इसकी कमाई।
नाम की हरदम बहे घट में धारा।।

2. है जन्म अकारथ नाम बिना ऐसे।
लवण बिना अनिक व्यंजन हों जैसे।
रहे नाम में हरदम ध्यान तुम्हारा।।

3. शरण में सतगुरु की अगर नाम ध्याये।
फिर काल माया न हरगिज़ सताये।
नाम से पायेगा दुःखों से किनारा।।

4. नाम का दीपक तू घट में जला ले।
लोक परलोक दासा रोशन बना ले।
कभी जन्म मरण न हो फिर दोबारा।।

भजन नं. 224

तर्ज़-ले के पहला पहला प्यार---.

टेक-भज ले सच्चा तू कर्तार, जो है जग का पालनहार।
गुरमुखों को है बस, उसी का आधार।।

1. देखा है तुमने जग का तमाशा।
बदलो मन का काँटा अब तो छोड़ो झूठी आशा।
गाफिल हुए गर इस बार, न होगा यमों से छुटकार।।

2. मालिक के अंश हो के क्यों बन गये भिखारी।
माया के वश में होकर, आयु जुए में हारी।
करो गुरु संग प्यार, वही करेंगे बेड़ा पार।।

3. सन्तों के दीवाने, जो जीव हो गये।
दुनियां को भूल करके, मस्ती में खो गये।
जो भी आये दरबार, पाये दिल का करार।।

4. किया गर्भ में जो वायदा, उसको सदा निभाना।
गुरु शरण लेके दासा, भक्ति का धन कमाना।
तज के झूठा संसार, बनना भक्ति का परिस्तार।।

भजन नं. 225

तर्ज़-ठहरो ज़रा सी देर तो----।

टेक-मानुष जनम अनमोल है, गाफिल न हो अपने काम से।
तुझ को जगाने सन्त रुप, आये प्रभु निजधाम से।।

1. तू जग माया के हाथों में, हरगिज़ खिलौना बनना न।
काम बना ले अपना अब, मन की मति पे चलना न।
कर्मों पे रख नज़र सदा, जीवन कटे आराम से।।

2. हरदम मालिक के ध्यान में, तेरी सुरति लगी रहे।
चाहत न मन में कोई भी, गैर सामानों की रहे।
कोई न हो तुझे वास्ता, झूठी इज़्ज़त मान से।।

3. ले के पूँजी स्वाँसो की, आया तू करने व्यापार है।
सौदा करे गर नाम का, फिर तो नफा बेशुमार है।
हो अन्त सहाई नाम धन, जाये जब तू जहान से।।

4. शरण में सतगुरु की सदा, सोया मुकद्दर है जागता।
प्रेम भक्ति के सिवा नहीं दास कुछ माँगता।
लोक परलोक संवर जाए, सतगुरु के बख्शे नाम से।।

भजन नं. 226

तर्ज़-दर्शन तेरा मन को मोहे----।

टेक-नाम की साची दौलत बख्शी।
जीवन में नई खुशियाँ भर दीं।।

1. जिस जिस ने भी नाम ध्याया।
जन्म अपना सफल बनाया।
पीर मिट गई आवागमन की।।

2. जग से कर दिया है न्यारा।
देकर नाम का सच्चा सहारा।
प्रीत बख्शी है चरणन की।।

3. अखुट खज़ाना ऐसा है ये।
आये कभी भी कमी न इसमें।
अब कुछ चाह रही न बाकी।।

4. दास किस मुख से गाये महिमा।
वर्णन इसका हो नहीं सकता।
पल में ही किस्मत ये बदल दी।।

भजन नं. 227

तर्ज़-कहता है जोकर----।

टेक-दुर्लभ नर तन यूं न गँवाना।नाम प्रभु का हर पल ध्याना।
ऐसा सुअवसर फिर नहीं आना, प्रीत प्रभु चरणों से लगाना।।

1. नाम व सुमिरण सेवा सतसंग।
इनमें रंग ले तू अपना तन मन।
सुखों का सार है ये, सच्चा आधार है ये।
इसको अपने हृदय बिठाना।।

2. इस झूठी दुनियाँ पे मत एतबार कर।
जन्म अपना यूँ न बेकार कर।
दीपक ज्ञान का अपने घट में जला।
पायेगा निज घर में तू ठिकाना।।

3. चार दिनों का है ये मेला।
जायेगा आखिर हंस अकेला।
स्वार्थ के हैं ये साथी रिश्ते और नाती।
इनमें अपना दिल न फँसाना।।

4. अपने पराये की कर पहचान।
सतपुरुषों के वचनों को मान।
इसमें तेरी भलाई दास है समाई।
अपने काम को भूल न जाना।।

भजन नं. 228

तर्ज़-रहा गर्दिशों----।

टेक-मालिक का नाम ध्या ले, नर तन जो तूने पाया।
बड़े पुण्य कर्मों से ही, है मौका हाथ आया।।

1. है खुशनसीबी तेरी, उत्तम देही जो पाई।
पल पल में नाम सुमिर ले, साची है यह कमाई।
यह कमाई करने खातिर, है दुनियाँ में तू आया।।

2. प्रभु नाम ही असली धन है, सन्तों का है यह कहना।
संग साथ में चले जो, यह ही है तेरा गहना।
जिसने यह गहना पहना, सब कुछ उसी ने पाया।।

3. गम चिन्ता न सताये, जो नाम प्रभु का ध्याते।
दोनों जहाँ की खुशियाँ, वे ही सदा हैं पाते।
उन भक्तों पे है रहती, पूरे गुरु की दाया।।

4. राहबर बना गुरु को, आज्ञा में उनकी चलना।
होगा सफल यह जीवन, निश्चय ही तू समझना।
हर स्वाँस में ऐ दासा, प्रभु नाम गर ध्याया।।

भजन नं. 229

तर्ज़-दिल के अरमां----।

टेक-भागों से पाया तूने अनमोल रतन।
कर ले ए प्राणी तू मालिक का भजन।।

1. नाम जपने के लिये तू आया है।
इसलिये प्रभु ने तुझे भिजवाया है।
नाम जपने में लगा तू अपना तन।।

2. मीत दुनियां में कोई न है तेरा।
जिसको समझे अपना है सब बेवफा।
नाम की हर पल लगा दिल में लगन।।

3. शिक्षा सन्तों की सदा तू मान ले।
हैं हितैषी तेरे दिल में जान ले।
टल जायेंगे तेरे सारे ही विघन।।

4. मेरी तेरी छोड़ दे ऐ दास तू।
ध्याया कर प्रभु नाम को हर स्वाँस तू।
मिट जायेगा तेरा फिर आवागमन।।

भजन नं. 230

तर्ज़-झांकी ये कितनी प्यारी---।

टेक-नाम है सारे सुख की खान नाम से होते पूरण काम।
जिसने भी-2 इसे दिल में बसाया मिल जाते उसको भगवान।।

1. नाम को जपकर लाखों भवसागर से हो गये पार।
जीवन उनका बन गया उत्तम जाने सकल संसार।
पाया उन्होने पद निर्वाण शक नहीं इसमें ये साचा प्रमाण।।

2. काग से हँस बनावे पल में इसकी ये तासीर।
नाम को जपने से मिटती है जन्म मरण की पीर।
गम का रहे ना नामो निशान हो जाता रुह का कल्याण।।

3. सब ग्रन्थों और सन्तों ने भी नाम की महिमा गाई।
पापी को पावन कर देता इसकी ये खास बड़ाई।
दूर हो जाता मोह अज्ञान अटल है ये विधि का विधान।।

4. अपने दिल में बसा ले दासा नाम प्रभु का प्यारा।
लोक और परलोक में देता तुझको सच्चा सहारा।
सतपुरुषों का ये फरमान जप ले इसको आठोंयाम।।

भजन नं. 231

तर्ज़-जहाँ डाल डाल पर----।

टेक-दुर्लभ नर तन पा कर प्राणी, प्रभु नाम का कर ले सुमिरण।
हो जाए सफल यह जीवन।।

1. बड़े पुण्य कर्मों से ऐ प्यारे, नर तन को तूने पाया है।
कुल मालिक से मिलने का यह, अवसर हाथ में आया है।
सच्चे नाम की तू ले ले दीक्षा, जा सतपुरुषों की शरण।।

2. फँस करके जग की रचना में, बरबाद न जीवन कर देना।
अनमोल पूँजी स्वाँसों की मिली, प्रभु नाम का सौदा कर लेना।
सिर देने से गर नाम मिले, तो ले ले खुशी से सज्जन।।

3. दुनियाँ के भोग पदारथ तो, हर योनि में जीव है पा लेता।
पर नाम सच्चे का अमोलक धन, केवल मानुष को प्रभु देता।
सच्चे नाम का धन ले सतगुरु से, हर पल करना है चिन्तन।।

4. कुछ पता नहीं है इस तन का, कब हो जाए राख की ढेरी।
इसलिए तू ऐ दासनदासा, प्रभु भजन में ना कर देरी।
हर पल तू कर ले कर्म ऐसा, जिस से हो घट में दर्शन।।

भजन नं. 232

तर्ज़-बहुत प्यार करते हैं----।

टेक-हर स्वाँस स्वाँस में जपता जो नाम।
जग में सुखी है वही इन्सान।।

1. मीठा मधुर अमृत जो पीवे।
अमर हो जावे युगों युग जीवे।
सच्ची दरगाह में पावे वो मान।।

2. तासीर इसकी अजब निराली।
धुल जाती मन की कालिमा सारी।
दूर हो जाता मोह अज्ञान।।

3. इसको पिया था मीराँ बाई ने।
नामदेव सदना सैन नाई ने।
वश में कर लिये श्री भगवान।।

4. दास सफल कर अपना जीवन।
श्रद्धा से कर तू नाम का सुमिरण।
यही तेरा अपना असली काम।।

भजन नं. 233

तर्ज़-घर आया मेरा परदेसी-----।

टेक-मान ले प्राणी सन्त वचन।
किया कर प्रभु का सुमिरण भजन।।

1. जाग उठे हैं तेरे शुभ करम।
तुझ को मिला जो मानुष जन्म।
तुझ पे हुए हैं प्रभु प्रसन्न।।

2. संयोग बना है बड़ा सुन्दर।
गफलत में न जाये गुज़र।
प्रभु से मिलने का कर ले यतन।।

3. सतगुरु पूरे की शरण में जा।
सेवा कर उनको ले रिझा।
करके न्यौछावर तन मन धन।।

4. दुनियाँ के रिश्ते हैं कच्चे।
सतगुरु साथी हैं सच्चे।
यह बात दासा बिठा ले ज़हन।।

भजन नं. 234

तर्ज़-आपको हम से बिछुड़े----।

टेक-दिल को लगा के देखो ज़रा नाम मे कितना सुख है भरा।

1. साचे सुख का मूल है केवल श्री सतगुरु का प्यारा नाम।
जपता इसको जो मन चित्त से पूरण होवें सारे काम।
जिसने भी नाम की ओट गही उसका ही बिगड़ा काज बना।।

2. सोध सोध कर सत्पुरुषों ने यह ही सार निकाला है।
सत वस्तु है नाम जगत में मिथ्या यह जग सारा है।
स्वाँस स्वाँस में नाम ध्या, जो है अपना काम तेरा।।

3. जलता दीपक नाम का दिल में दिल हो जाता है रोशन।
मोह का अन्धेरा दूर होवे सब हो जाता घट में दर्शन।
ऐसी है तासीर नाम में, देता है कष्ट क्लेश मिटा।।

4. इस अनमोल रतन को जो भी अपने दिल में बसाता है।
कटता चौरासी का बन्धन जीवन सफल हो जाता है।
दासा जपे जो नाम हमेशा, वह ही प्रभु का प्यारा हुआ।।

भजन नं. 235

तर्ज़-ज़िन्दगी की न टूटे लड़ी----।

टेक-काम तेरा है प्राणी यही, कर पल पल प्रभु बन्दगी।

1.जागी किस्मत तेरी जो तुझे. चोला मानुष का है मिला।
नाम सुमिर ले तू हर पल, होगा रूह तेरी का भला।
मिट जायेगी चिन्ता सभी, कर पल पल-----।।

2.छोड़ के अब आलस प्राणी, अपने काम में लाग ज़रा।
जो वादा किया प्रभु से, उस वादे को अब तू निभा।
पायेगी सुख सदा रूह तेरी, कर पल पल----।।

3.ऐसा अवसर दुर्लभ महा, हर बार नहीं मिलता।
जो गिर जाये डाली से, वह फूल नहीं खिलता।
सब सन्तों की वाणी यही, कर पल पल-----।।

4.बन के दास तू सतगुरु का, मान कहना तू उनका सदा।
होगी सफल तेरी ज़िन्दगी, गर उनको तू लेगा रिझा।
बिगड़ी पल में बनेगी तेरी, कर पल पल----।।

भजन नं. 236

तर्ज़-दीवाना तेरी चाह-----।

टेक-मालिक के सच्चे नाम को दिल में तू बसा।
और फानी जग के प्यार को बिल्कुल ही दे भुला।।

1. मोह माया के ख्यालों को, दिल से काफूर कर।
भक्ति के सच्चे धन से, इस को तू खूब भर।
हरदम इसी लगन में, तू ज़िन्दगी बिता।।

2. आसन है फकत दिल तेरा, कर्तार के लिये।
मत भर तू प्यार इस में, संसार के लिये।
जिस में भला हो तेरा, वो ही कर्म कमा।।

3. है सफल ज़िन्दगी जहाँ में, उस ही जीव की।
हासिल है संगति जिसे, बस अपने पीव की।
दोनों जहानों में है, उस का ऊँचा मर्तबा।।

4. ऐ दास दासों का नसीहत, तू यह मान ले।
इन्सानी फर्ज़ जो तेरा है, उस को जान ले।
निजघर का फिर तू, सहज ही पायेगा रास्ता।।

भजन नं. 237

तर्ज़-दिल लूटने वाले----।

टेक-मालिक के सच्चे नाम को ही बस स्वांस स्वांस में ध्याना है।
अनमोल समय जो पाया है, इसको नहीं व्यर्थ गँवाना है।।

1. इस काम में गफलत मत कर तू, यह फर्ज़ है तेरा इन्सानी।
बिन नाम के आखिर को होगी, तुझको ही बहुत परेशानी।
जन्मों से ख्याल जो मैले पड़े, उन्हें नाम से साफ बनाना है।।

2. बन्दगी बिन आज तलक कोई, नहीं भवसागर से पार हुआ।
राहत वह भला कैसे पाये, जिसका न प्रभु से प्यार हुआ।
औरों से हटा कर के मन को, सतगुरु के संग लगाना है।।

3. सब सन्तों व सद्ग्रन्थों ने, यह बारम्बार फरमाया है।
एक एक स्वाँस की कीमत को, त्रिलोकी मोल बताया है।
फिर ऐसे कीमती हीरे को, माटी में नहीं मिलाना है।।

4. ऐ दासनदास चेत जा तू, यह घड़ी गुज़र यों जाये ना।
जिस काम की खातिर आया है, उससे वंचित रह जाये ना।
रूह निज घर जिससे पहुँचे, वैसा ही कर्म कमाना है।।

भजन नं. 238

तर्ज़-जोत से जोत----।

टेक-दुनियाँ के मेले में दिल न फँसा।
प्रभु नाम को तू कभी न भुला।।

1. इस मेले में आया है तू, नाम का धन कमाने।
जो सामान हैं दिल में बसाये, सब के सब हैं बेगाने।
मोह और माया से दामन बचा-------।।

2. सुमिरा न यदि नाम प्रभु का, कुछ न बनेगा तेरा।
खायेगा चक्कर चौरासी के, खत्म न होगा फेरा।
अब भी बन्दे होश में आ----------।।

3. नाम ही केवल नादां तुझको, भव से पार उतारे।
नाम आराधन बिन डूबेंगे, दाना पण्डित सारे।
नाम से अपनी सुरत मिला----------।।

4. थाम के दामन तू सतगुरु का, पार उतर जा भव से।
सन्त हितैषी तुझको दासा जगा रहे हैं कब से।
नाम जप के तू निज घर जा---------।।

भजन नं. 239

तर्ज़-गुज़रा हुआ जमाना-----।

टेक-दुनियाँ में आके वृथा तू जन्म न गँवाना।
परलोक धन कमाना परलोक धन कमाना।।

1. झूठे हैं संगी साथी तुझ से जो नेह लगायें।
दुःख की घड़ी में आखिर नज़रें वही चुरायें।
मीत हैं सच्चे सतगुरु जब चाहे आज़माना।।

2. है प्रबल यह काल चक्कर माया की सारी रचना।
कर्मों को सुधार अपने हानि से हमेशा बचना।
मालिक की बन्दगी में कभी करना न बहाना।।

3. अब फेर ले मन का कांटा तू भक्तिमान बन जा।
धारण कर गुरुमति को अब तो इन्सान बन जा।
चिन्ता रहे न कुछ भी मिला गुरु चरणों में ठिकाना।।

4. नहीं मन पे तेरा काबू और हंस हंस के कांटे बोये।
कर्मों का देख फल तू टसुये बहा के रोये।
अभी वक्त है संभल जा दासा न फिर पछताना।।

भजन नं. 240

तर्ज़-मुझे इश्क है तुम्हीं----।

टेक-बड़े पुण्य से जी तुमने, तन पाया है इन्सानी।
प्रभु नाम तू ध्या ले, कहती है सन्त वाणी।।

1. कुदरत ने किरपा करके, बख्शा तुझे है नर तन।
गफलत में न तू खोना, करना प्रभु का सुमिरण।
अवसर यह है सुनहरा, हर बार पाये न प्राणी।।

2. प्रभु नाम ही ध्याना, असली है काम तेरा।
बाकी जगत का प्यारे, सब झूठा है बखेड़ा।
दुनियाँ की कोई वस्तु, नहीं साथ तेरे जानी।।

3. सन्तों के पास जाके, कर नाम की कमाई।
सन्तों ने किरपा करके, यह हाट है लगाई।
श्री सतगुरु जी देते, यह दात वो जो रूहानी।।

4. अब भी समय है दासा, तू नाम धन काम ले।
भटकी हुई सुरत को, तू नाम से मिला ले।
ताकि न होवे तुझको, दरगाह में परेशानी।।

भजन नं. 241

तर्ज़-बाबुल की दुआएं----।

टेक-प्रभु नाम आराधन बिन तेरा, हो सकता कभी कल्याण नहीं।
पा करके दुर्लभ नर तन तू, क्यों करता प्रभु गुणगान नहीं।।

1. सृष्टि की ऐसी गोबिन्द ने, इक रचना अजब रचाई है।
धन्धों में काल और माया के, जीवों की होश भुलाई है।
सतगुरु की राहनुमाई बिना, होती मुश्किल आसान नहीं।।

2. हो करके अंश तू ईश्वर का, नहीं इष्ट अपने से प्यार किया।
दुःख जन्म मरण के सह के भी, गर्भ का कौल बिसार दिया।
तू मालिक के उपकारों का, मानता क्यों एहसान नहीं।।

3. रह मग्न तू नाम आराधन में, हो जाए सफल तेरा जीवन।
श्रद्धा से नाम सुमिरने से, हो जायेंगे खुश तुझसे भगवन।
सन्तों की किरपा दृष्टि बिना, पर मिलता नाम का दान नहीं।।

4. हैं दोनों लोक संवर जाते, सन्तों की शरण में जाने से।
रूह नाम के रंग में रंग जाती, श्री पावन वचन अपनाने से।
सन्तों की कृपा बिना दासा, मिल सकता कभी भगवान नहीं।।

भजन नं. 241

तर्ज़-पवन मोरे आंगना में----।

टेक-दुनियाँ में बन्दे आकर अगर भक्ति न कमाई।
यूँ ही बेशकीमती है ज़िन्दगी बिताई।।

1. भक्ति के बगैर कभी चैन न मिलेगा।
आकबत में भक्ति बिन कुछ भी न चलेगा।
भक्ति बिना तेरी वहां होगी रुसवाई।।

2. गर बनाये महल या कि जोड़ा है खज़ाना।
सोच ले ऐ प्राणी कुछ भी साथ में न जाना।
बे-वफा दुनियाँ से कभी न होयेगी वफाई।।

3. हो नसीब रुतबा और तुझको गर हकूमत।
दिन चार की बहार है जानो मत हकीकत।
आरिफों ने बात सभी खोल के बताई।।

4. नाम भक्ति सार चीज़ सन्तों ने कही है।
मन की भक्ति गलत गुरुभक्ति ही सही है।
गुरु की भक्ति दास कर इसमें है भलाई।।

भजन नं. 242

तर्ज़-अपनी तो हर जगह----।

टेक-नाम को जो प्राणी दिल में बसायेगा।
निश्चय ही भवसिन्धु वह तर जायेगा।।

1. नाम सुमिरण से है मन की वासना मिटती।
जन्मों जन्मों की चढ़ी सब कालिमा धुलती।
नाम से निर्मल यह मन हो जायेगा।।

2. सतगुरु का नाम है भवसिन्धु की नौका।
लिया सहारा जिसने उसका काज है संवरा।
लक्ष्य को जीवन के वह ही पायेगा।।

3. नाम से हैं बदल जाती पल में तकदीरें।
मोह और ममता की कट जाती हैं जंज़ीरें।
चक्कर आवागमन का कट जायेगा।।

4. श्रद्धा से करता है जो गुरु नाम का सुमिरण।
है सफल दुनियां में दासा उसका ही जीवन।
भाग्यशाली जग में वह कहलायेगा।।

भजन नं. 243

तर्ज़-महफिल में जल उठी-----.

टेक-पूर्ण सतगुरु की भक्ति से सुरत भई हरियाली है।
मन मन्दिर है काबिल उनके, विषयों से जो खाली है।।

1. हो जायेगा बाग-बहारां, भक्ति बीज तो बो के देख।
जग ममता से बच के प्राणी, इक सतगुरु का हो के देख।
खिल जायेगी रूह भी तेरी, मुस्काये हर डाली है।।

2. यह तन तो है बेलरी विष की, गुरु अमृत की खानी है।
शीश दिये गर मिल जायें सतगुरु तो भी भाग्य निशानी है।
उनके भाग्यों का क्या कहना, भक्ति जिन्होंने कमा ली है।।

3. दुनियां फूल है इक कागज़ का, खुशबू इसमें कोई नहीं।
भूल है इस दिल को दिल कहना, जुस्तज़ू जिस में प्रभु की नहीं।
जीवन उसका होगा उज्जवल,जिस नाम की जोत जगा ली है।।

4. कई जन्मों की तेरे दासा, मन पे बहुत है मैल चढ़ी।
मन्द कर्मों से सुरत भी तेरी, पिण्ड देश में अड़ी पड़ी।
सतगुरु नज़र मेहर की करते, जो दर पे आता सवाली है।।

भजन नं. 244

तर्ज़-ना कजरे की धार-----।

टेक-प्रभु नाम से कर लो प्यार, ये सुखों का भण्डार।
करता ये भव से पार महिमा इसकी है बड़ी।।

1. जो श्रद्धा भाव से ध्याये, बन्धन सारे कट जायें।
निज घर में वासा पाये, आनन्द में जा समाये।
ये भक्ति और मुक्ति का साचा अखुट भण्डार।।

2. मिटती सब आधि व्याधि, लिव नाम से लग जाती।
प्रभु नाम की खुमारी, इक बार चढ़ जाती।
बात साची ग्रन्थ साक्षी देता ये जन्म सुधार।।

3. हर स्वाँस स्वांस में जप कर जीवन ये सफल बना लो।
यह पूँजी संग जायेगी दिन रात इसे कमा लो।
सौदा ये सस्ता भागों से मिलता इकपल न इसे विसार।।

4. मिलता ये सतगुरु पास तू शरण में आ जा दास।
कट जायेगी यम की फाँस घट में होगा प्रकाश।
इस अमृत का मधुर रस पी ले तू इक बार।।

भजन नं. 245

तर्ज़-यह ज़िन्दगी उसी की है----।

टेक-नर तन जो तूने पाया है, वृथा न यूं ही गँवा।
कर ले यादे खुदा।।

1. आया तू जहान में फकत जपने नाम को।
जग की रचना देख कर तू भूला असली काम को।
हैं जगाते सन्त तुझ को, जाग जा अब जाग जा।।

2. यह घड़ी और यह समय, हाथ फिर नहीं आयेगा।
जो काम अपना ना करे, वह अन्त में पछतायेगा।
झूठे धन्धे छोड़ कर, नाम में तू मन लगा।।

3. जगत के जंजाल में तू नहीं लिपटायेगा।
सतगुरु के चरणों में जानों दिल लगायेगा।
मन्ज़िलें मकसूद का, पायेगा तू रास्ता।।

4. फर्ज़ जिस ने जाना अपना, है फकत ही बन्दगी।
दासा निश्चय हो गई, उस की सफल यह ज़िन्दगी।
क्यों न उसको ध्यान आये, सदगुरु की ज़ात का।।

भजन नं. 246

तर्ज़-दिल के अरमां----।

टेक-नाम प्रभु को ऐ बशर पल पल ध्या।
इसलिये मानुष रतन तुझको मिला।।

1. नाम प्रभु का सब सुखों की खान है।
इससे मिलता जीव को सम्मान है।
सन्तों व सद्ग्रन्थों ने यह है कहा।।

2. भारी से भारी विपद जो आ पड़े।
पल में आसाँ उसको प्रभु का नाम करे।
देता है यह जीव को सुख ही सदा।।

3. कर ले बेशक दुनियाँ के सब काम तू।
दिल में कर मालिक का सुमिरण ध्यान तू।
होगा फिर जीवन सफल प्राणी तेरा।।

4. बात हिरदय में यह दासा धार ले।
ज़िन्दगी तेरी केवल दिन चार रे।
बेशकीमत वक्त से तू लाभ उठा।।

भजन नं. 247

तर्ज़-बाबुल की दुआएँ----.

टेक-प्रभु नाम भुला के ऐ प्राणी, बरबाद न कर तू ज़िन्दगानी।
दुनियाँ की हकीकत सन्तों बिना, नहीं और किसी ने समझानी।।

1. इक अजब तमाशा है दुनियाँ, नहीं जिसमें कोई सच्चाई है।
तूने लाख चौरासी भटक भटक, यह मानुष देही पाई है।
ज़रा सोच ले अपना भला बुरा, छोड़ दे अब तो नादानी।।
2. जीवन है बुलबुला पानी का, क्यों लम्बी आस लगाता है।
नश्वर सामानों में नाहक, क्यों अपनी सुरत फँसाता है।
उपदेश हैं करते सन्त यही, चन्द रोज़ यहां है मेहमानी।।
3. सन्तों ने उठाया है ज़िम्मा, भव से तुझे तराने का।
गल्बे से काल और माया के, हर हाल में तुझे छुड़ाने का।
जब सन्त बनें राहबर तेरे, कैसी भला फिर परेशानी।।
4. तेरे काम न अन्त में आयेंगे, रहते जो नाती तुझे घेरे।
केवल श्मशान तलक के हैं, ये सब साथी झूठे तेरे।
सतगुरु ही सच्ची दरगाह में, करेंगे तेरी निगहबानी।।
5. इस जनम मरण के चक्कर से, तू तब ही दासा छूटेगा।
सच्चे नाम की दात रूहानी जब, तू स्वाँस स्वांस में लूटेगा।
धुरधाम से आये जगाने तुझे, सतगुरु की है यह मेहरबानी।।

भजन नं. 248

तर्ज़-ऐ मेरे दिले नादां-----।

टेक-प्रभु नाम का सुमिरण कर, हर स्वाँस तू ऐ प्राणी।
तेरे स्वाँस हैं गिनती के, चन्द रोज़ की ज़िन्दगानी।।

1. दुनियां की रंगत का, तुझ पे न रंग चढ़े।
विषयों का तेरे मन पर, हरगिज़ न जंग चढ़े।
सही पथ पे चलना सदा, मत करना तू मनमानी।।
2. स्वाँसों की पूंजी का, देना होगा हिसाब तुझे।
गया खाली हाथ अगर, न सूझेगा जवाब तुझे।
अब भी जोड़ के धन सच्चा, कर खुद पे मेहरबानी।।
3. अन्त काम न आयेंगे, जो हैं रिश्ते और नाती।
हैं सब के सब केवल, श्मशान तलक साथी।
सतगुरु ही करें तेरी, दरगाह में निगहबानी।।
4. सतगुरु की शरण ले के, तू बना ले कुछ अपना।
नर तन का मकसद है, सच्चा नाम सदा जपना।
सतगुरु से ऐ प्राणी, लाभ उठा ले तू रूहानी।।
5. मालिक के सुमिरण में, मिलती है हकीकी खुशी।
कट जाती फिर दासा काल माया की रस्सी।
निष्काम तू साधना कर, सब छोड़ के नादानी।।

भजन नं. 249

तर्ज़-छिप गया कोई रे------।

टेक-नर तन पा के बन्दे प्रभु नाम ध्या रे।
सतपुरुषों की सेवा पूजा कमा रे।।

1. मालिक की हो गई किरपा संयोग जो बना है।
नर तन हीरा रतन मिला है।
कर बन्दगी पल पल लाभ तू उठा रे।।

2. भक्ति बिना कई जन्म यूँ गँवाये।
नीच योनियों के कष्ट उठाये।
उत्तम देही यह प्यारे यूँ न गँवा रे।।

3. डाली से फूल टूटा फिर नहीं खिलता।
नर तन प्यारे हर बार न मिलता।
कहते हैं सन्त सारे तुझ को सुना रे।।

4. दासा हिदायत जो न तूने मानी।
होगी तुझ को बहुत परेशानी।
मुँह क्या दिखायेगा प्रभु दरगाह रे।।

भजन नं. 250

तर्ज़-गुरुदेव के चरणों में आकर-----।

टेक-दुनियाँ का बन के देख चुका, गुरुदेव का बन कर देख ज़रा।
गुरु भक्ति में कितनी खुशियाँ हैं, इस राह पे चलकर देख ज़रा।।

1. दुनियाँ के प्यार में फँस कर के, कई जन्म यूँही बरबाद किये।
अब शरण में सतगुरु की आकर, तू नाम सुमिर कर देख ज़रा।।

2. गुरु प्रेम में कितनी मस्ती है, यह पूछो प्रेम दीवानों से।
इस प्रेम का प्याला ऐ प्राणी, इक बार तू पी कर देख ज़रा।।

3. भक्ति की राह जो चलते हैं, वे जग में अमर हो जाते हैं।
है प्यार हकीकी सतगुरु का, मोह नींद से जग कर देख ज़रा।।

4. गुरु चरण कमल से प्रीति कर, पायेगा दास तू सुख सच्चा।
सतगुरु की आज्ञा मौज में चल,मनमति को छोड़ कर देख ज़रा।।

भजन नं. 251

तर्ज़-पँख होते तो-------।

टेक-नाम में सुरति लगाओ जी, समय यूँ ना गँवा।
तुझे स्वाँस मिले हैं गिन गिन के।।

1. अपना काम तेरा भक्ति कमाना, तब तू कहलायेगा सयाना।
झूठे जग के पीछे पड़ा क्यों, माया से है नाता जोड़ा क्यों।
समय यूँ ना गँवा----।।

2. जग धन्धों में लगी लगन है,ऐशो इशरत में हरदम मगन है।
इक दिन मौत का आयेगा तूफाँ,भक्ति बिना पछतायेगा इन्साँ।
समय यूँ ना गँवा----।।

3. स्वाँस स्वाँस में नाम कमा ले, जीवन अपना सफल बना ले।
गुरु दर पे आने से जागें नसीब,राजा होवे चाहे होवे गरीब।
समय यूँ ना गँवा----।।

4. मन मन्दिर में गुरु को बसा कर,श्री चरणों की रज मस्तक लगाकर।
नाम की दासा कर ले कमाई, सतगुरु होंगे सदा सहाई।
समय यूँ ना गँवा-----।।

भजन नं. 252

तर्ज़-नगरी नगरी द्वारे द्वारे----।

टेक-बड़े भाग्य से मिला है नर तन, इसमें भक्ति लाभ उठा।
दुनियाँ के झूठे भोगों में, नहीं तू हीरा जन्म गँवा।।

1. सन्त तुझे समझाते हरदम, ध्येय जो तेरे जीवन का।
भक्ति में चित जोड़ दे प्राणी, बदल दे कांटा तू मन का।
ऐसा दुर्लभ अवसर भोले, बार बार नहीं पायेगा।।

2. माया की झिलमिल ने तुझको, पहले भी भरमाया है।
इसके धोखे में आकर के, जन्म जन्म दुःख पाया है।
करके संगति सत्पुरुषों की,इस धोखे से खुद को बचा।।

3. चाहता है गर अपनी भलाई, गुरु नाम की ओट पकड़।
नाम प्रताप से कट जायेगी, काल और माया की जकड़।
आवागमन के चक्कर में तू, कभी नहीं फिर आयेगा।।

4. सतपुरुष ही दासनदासा जग में तेरे हैं हितकर।
उनके मंगलमय वचनों को, हृदय में तू धारण कर।
पल पल करके नाम का सुमिरण,जीवन अपना सफल बना।।

भजन नं. 253

तर्ज़-तुझे क्या सुनाऊँ----।

टेक-माया की सारी रचना है, तेरे साथ कुछ नहीं जाना है।
आखिर तो सच्चे नाम ने, साथ तेरा निभाना है।।

1. इस जग के झूठे नज़ारे हैं, तुझे लगते जो बड़े प्यारे हैं।
इस झूठे माया जाल में, कभी दिल न अपना फँसाना है।।

2. दुर्लभ जन्म की कर कदर, करमों पे अपने रख नज़र।
मन को हटा चहूँ ओर से, हर स्वाँस नाम ध्याना है।।

3. सुखों की चाहत दिल में है, रहता दुःखी तू पल पल में है।
सच्चा सुख है केवल नाम में, बाकी झूठा सब अफसाना है।।

4. सौदा नाम का अनमोल है, पर मिलता सिर के मोल है।
मन की मति को त्याग के, सतगुरु को अपना बनाना है।।

5. प्रकटे सन्त रूप भगवान हैं, करते जीवों का कल्याण हैं।
अब दासा उनका दास बन, यह जन्म लेखे लगाना है।।

भजन नं. 254

तर्ज़-ये दुनियाँ यह महफिल----।

टेक-ऐ सतगुरु नाम तेरा, सब रोग की दवा।

1. नाम तेरा ए प्रभु, दिल में बसाता जो कोई।
जन्मों की पीड़ा से, मुक्ति है पाता वो ही।
क्या जादू इसमें है भरा, है देता सबको सुख अथाह।
इसलिए ही नाम की महिमा का, सन्तों ने है गायन किया।।

2. जपता जो नाम तेरा, जग में वह पाये आदर।
जीवन में सुख पाये, जायें लोक दोनों संवर।
श्रद्धा से हर स्वांस जो, नाम का सुमिरण करे।
जपने से पावन नाम को, पापी भी भव सागर तरे।।

3. पल छिन में मुश्किल सारी, नाम आसान करे।
इसकी बड़ाई को क्या, वर्णन ज़ुबान करे।
कोई रहता उसको न फिकर, जो जपता तेरा नाम बशर।
वह प्राणी तो इस दुनियाँ में, हो जाता सहजे ही अमर।।

4. ज़िन्दगी ये तेरी दासा, दो दिन है या चार रे।
हर स्वाँस में तू जप ले, ऐ प्राणी करतार रे।
तू सन्तों की संगत में जा, दिलो-जान से सेवा कमा।
उनके ही रहम-ो-करम से, तर जायेगा बेड़ा तेरा।।

भजन नं. 255

तर्ज़-तुम्ही मेरे मन्दिर----।

टेक-सतगुरु नाम तू जप लै प्यारे, झूठे दुनियां के धन्धे सारे।।

1. रूतबा मान वडाईयां आखिर, सभे खाक हो जान सरासर।
   कर लै भक्ति दी सच्ची कमाई, दोनों लोक जो तेरे संवारे।।

2. दुनियां चार दिनां दा है मेला, नाम जपन दा एहियो वेला।
   नाम सुमिर लै हर सांस प्राणी, पाप मिट जावनगे तेरे सारे।।

3. भाग ने चंगे नाम जो मिलिया, बिना नाम दे कदे कोई न तरया।
   जो वी तरया नाम जप के तरया, आप तरया ते होर वी तारे।।

4. दामन फड़ लै पूरे गुरु दा, हो जाये कल्याण तेरी रूह दा।
   दासा साचे हितैषी ने सतगुरु, डुबदी किश्ती लगाँदे किनारे।।

भजन नं. 256

तर्ज़-मेरा अंग अंग मुस्काया----।

टेक-दुर्लभ नर तन, कर प्रभु सुमिरण, इसलिये तू जग में आया।
सन्तों ने है फरमाया।।

1. कुदरत ने तुझ पर किरपा की।
बख्शी तुझ को उत्तम देही।
कुल मालिक से, मिलने का यह।
है अवसर हाथ में आया, सन्तों ने है फरमाया।।

2. तन सुन्दर लगता जितना है।
क्षणभंगुर भी यह उतना है।
कुछ पता नहीं, कब माटी में।
मिल जायेगी यह काया, सन्तों ने है फरमाया।।

3. यह दुनियाँ रंग बिरंगी है।
यहां कोई न तेरा संगी है।
प्रभु नाम ही केवल, मीत तेरा।
और बाकी जगत पराया, सन्तों ने है फरमाया।।

4. जब मुश्किल भारी आन पड़े।
तब नाम प्रभु का मदद करे।
सच्चे दिल से, प्रभु को सुमिरे, विपदा से उसे बचाया।।

5. ऐ दास तू अब होशियार हो जा।
हर स्वाँस प्रभु का नाम ध्या।
जो साथ चले परलोक तेरे।
वह जोड़ ले तू सरमाया, सन्तों ने है फरमाया।।

भजन नं. 257

तर्ज़-चाँदी की दीवार----।

टेक-मन की मति को छोड़ अयाने, गुरु मत है सुख की खानी।
बिन गुरु मत के सुख न पावे, भटके जन्म जन्म प्राणी।।

1.तरह तरह की बातों से मन, जीव को झट भरमाता है।
सतसंगत और हरि भजन, इसको मुतलिक नहीं भाता है।
सतगुरु की सेवा भक्ति से, सदा ही यह कतराता है।
जीव को उलट चलाने की, हरदम इसने है ठानी।।

2.सदगुरु जीव के हैं सुख दाता, सब दुःख दर्द मिटाते हैं।
हानि लाभ हो जिसमें इसका, निर्णय कर समझाते हैं।
मोह माया की रचना से, सब को आज़ाद कराते हैं।
श्री चरणों का दे सहारा, छुड़वाते हैं मनमानी।।

3.गुरु कृपा से दुर्मति नाशे, भरम अन्देशे दूर हुए।
चिन्ता कलह कल्पना सारी, पल में चूरा चूर हुए।
भक्ति की सच्ची दौलत से, जीव सभी भरपूर हुए।
सतगुरु सुख सागर जग अन्तर, भक्ति प्रेम के हैं दानी।।

4.दासनदास वह हुआ सुर्खरु, जिसका गुरु से प्यार हुआ।
लोक सुखी परलोक सुहेला,भवसागर से पार हुआ।
झूठ का दामन छोड़ा उसने, सच का ही व्यौहार हुआ।
उसने ही गुरु भक्ति की, असली रम्ज़ है पहचानी।।

भजन नं. 258

तर्ज़-

टेक-क्या तू जग से नेह लगाये, प्राणी ज़रा विचार।
स्वार्थ के सब मीत यहाँ पर, झूठा जग का प्यार।।

1. भाई बन्धु और रिश्ते नाते, अपने जो कहलायें।
मुश्किल जब भी आन पड़े तो, कोई काम न आयें।
सुख में हैं वे जो भी करते, हैं झूठे इकरार।।

2. प्रीत जताने की खातिर वे, कितना ढोंग रचाते।
सुख में अपने सब ही बनते, दुःख में आँख चुराते।
स्वार्थ बिन कोई बात न पूछे, यह जग का व्यवहार।।

3. किस को अपना कहें कोई भी, अपना नज़र न आवे।
जिस जिस पर भी करो भरोसा, धोखा वह दे जावें।
यही है जग की रीत ऐ प्राणी, कहते सन्त पुकार।।

4. जिसने जग से प्रीत लगाई, सदा ही दुख वह पावे।
चिन्ताओं से रहे घिरा, वह, सुख निकट न आवे।
झूठी आशा में जीवन की, बाज़ी जावे हार।।

5. सतगुरु बिन इस जग के अन्दर, कोई न साचा मीत।
करुणा के अवतार हैं सतगुरु, सच्ची उनकी प्रीत।
सदा रहे संग साथ जीव के, हैं सच्चे गमख्वार।।

6. दासनदास तू दिल का नाता, सतगुरु के संग जोड़।
प्रीति लगा सतगुरु से केवल, जग से प्रीति तोड़।
रैन दिवस करते हैं सतगुरु, जीवों पर उपकार।।

भजन नं. 259

तर्ज़-मतलब निकल गया तो----।

टेक-वाज़िब तुझे है सतगुरु की करना बन्दगी।
मकसद तेरी ही ज़िन्दगी का है फकत यही।।

1. बन जाना खाक इष्ट के श्री पाक कदमों की।
कर साफ दिल विमल बना, मिटे गैरियत सभी।
नूरे खुदा की देखनी झलक इसी में ही।।

2. दौलत रूहानी संचित करले तू नाम की।
होगी न तुझको इस कदर फिर परेशानी।
सहनी पड़ेगी फिर नहीं मालिक की रंजगी।।

3. आकर जहाँ में फँस गया खुद को पहचाना ना।
किया यतन न छूटने का भारी हुआ गुनाह।
मुज़रिम बना हुज़ूरी में होनी है पेशगी।।

4. जो कारर्वाही दास कर सब गुरु की मौज पर।
तामील गुरु के वचनों की करना तेरा फर्ज़।
नुक्ता समझ में आ गया किस्मत तेरी जगी।।

भजन नं. 260

तर्ज़-बस यही अपराध----।

टेक-लाज़मी है बन्दगी इन्सान के लिये।
है नसीहत जीव, तव कल्याण के लिये।।

1. तूने था वायदा किया, भगवान से नादान।
जाकर करूँगा जगत में, केवल भजन और ध्यान।
लेकिन कर रहा तू कर्म, मन परधान के लिये।।

2. आरिफों की यह हिदायत, ध्यान से तू सुन ज़रा।
सन्त जो फरमाते हैं, उन पे भी तू चल ज़रा।
बेशकीमत श्वास हैं, सुमिरण ध्यान के लिये।।

3. चन्द रोज़ की ज़िन्दगी, इस पे क्यों इतराये।
जान ले बस दिल तेरे, अंजाम के हैं आये।
होने को रवानगी उस धाम के लिये।।

4. नहीं रहेगा कायम, यह नश्वर संसार।
दास कहे जो आया, उसने जाना आखिरकार।
जगत सराय है केवल, मेहमान के लिये।।

भजन नं. 261

तर्ज़-

टेक-जन्म अनमोल तेरा, पल पल ध्या भोले प्राणी।
है यह हित भरी सन्तों की वाणी।।

1. नर तन भागों से तूने है पाया,मिला स्वाँसों का तुझको सरमाया।
स्वाँस लेखे लगा, नाम धन तू कमा,भोले प्राणी। है यह-----।।

2. झूठे जग की सब झूठी है रचना,इसे हरगिज़ न सच तू समझना।
न चित्त इससे लगा,न जन्म व्यर्थ गँवा भोले प्राणी। है यह----।।

3. सच नाम है केवल प्रभु का,नाम बिन सब है धोखा।
नाम से लिव लगा, साचे सुख को ले पा भोले प्राणी।है यह---।।

4. जग के धन और पदार्थ सारे, अन्त में काम आयें न प्यारे।
ये हैं सब बे-बका, इन पे मत इतरा भोले प्राणी। है यह----।।

5. जिन को समझे तू सम्बन्धी मीत, झूठी है प्यारे इस सबकी प्रीत।
इनमें कोई न तेरा, मत कर मेरा मेरा भोले प्राणी। है यह----।।

6. नाम बिन कुछ नहीं साथ जाये,नाम ही साथ हर दम निभाये।
नाम हिरदे बसा, इसको न तू भुला भोले प्राणी। है यह ----।।

7. दास चाहे तू यदि कल्याण, सन्तों के वचन ले अब तू मान।
हर पल नाम ध्या, इसमें तेरा भला भोले प्राणी। है यह----।

भजन नं. 262

तर्ज़-बड़ी दे भई नन्द लाला----।

टेक-कर स्वाँस स्वाँस में सुमिरण, हो जाये सफल तेरा जीवन।
सन्त पुकार पुकार के कहते, वृथा न खो यह नर तन रे।।

1. बड़े भाग्य से तूने प्राणी, मानुष चोला पाया है।
भूल के अपना मकसद तूने, जग में चित्त फँसाया है।
अब भी अगर न चेता भोले, पछतायेगा सिर धुन रे।।
2. झूठे जग से सुरत हटा के, जोड़ ले नाता प्रभु के संग।
करके सुमिरण भजन ऐ प्राणी, मन रंग ले भक्ति के रंग।
प्रभु की किरपा से फिर तेरा, टल जाए आवन जावन रे।।
3. जीवन पल पल बीता जाये, कर इसका कुछ ध्यान रे।
भव से तरने का ऐ प्राणी, कर ले तू सामान रे।
सतपुरुषों की संगति में तू, कर संचित भक्ति धन रे।।
4. सन्तों का उपदेश यही है, गफलत में नहीं वक्त गँवा।
पल पल प्रभु की भक्ति कमा के, रूह अपनी आज़ाद करा।
भक्ति के प्रताप से प्राणी, कट जाये काल का बन्धन रे।।
5. सतगुरु बिन नहीं कोई तेरा, झूठे हैं संगी साथी।
झूठी प्रीत जताते सारे, जितने हैं रिश्ते नाती।
सतगुरु साचे मीत हैं दासा, पकड़ ले उनका दामन रे।।

भजन नं. 263

तर्ज़-ओ प्रेम के भण्डारी----।

टेक-सुरति को सतगुरु के चरणों में है लगाना।
इससे तू निश्चय पाये, सुख शान्ति का ठिकाना।।

1. हरदम ज़ुबाँ पे होवे, गुणगान सतगुरु का।
रग रग में हो समाया, बस ध्यान सद्गुरु का।
प्रभु प्यार की लगन में, जीवन है यह बिताना।।

2. गैरों के प्यार से दिल, हो जाए जब यह खाली।
मालिक के प्रेम की फिर, मस्ती मिले निराली।
कट जाएगी चौरासी, होगा न आना जाना।।

3. है असल काम तेरा, मालिक को नहीं भुलाना।
पल पल में याद करके, जीवन सफल बनाना।
नर जन्म पाया दुर्लभ, ऐ दास न गँवाना।।

भजन नं. 264

तर्ज़-तुम अगर साथ----।

टेक-ये समय कीमती है बड़ा ही अनमोल।
इसको बिन बन्दगी न गँवाया करो।।
हर स्वाँस में नाम जप जप कर।
ज़िन्दगी अपनी सफल बनाया करो।।

1. बड़ी खुशकिस्मती से ये हाथ आया।दुर्लभ नर तन हीरा पाया।
करले इसमें कुछ नेक कर्म।
परलोक का जोड़ ले सरमाया।
सतपुरुषों की सुन्दर वाणी को।
अपने हृदय में बसाया करो।।

2. इस झूठे जगत की मुहब्बत में।
दिल अपना कभी भी फँसाना नहीं।
स्वाँसों के अनमोल इस धन को।
कौड़ी के बदले लुटाना नहीं।
मन माया के ख्यालों को दिल से हटा।
ध्यान प्रभु चरणों में लगाया करो।।

3. इस जीवन को पाने का मकसद यही।
संचित कर लो स्वांसों मे पूँजी नाम की।
फिर फिर न मिलेगी ये सुन्दर घड़ी।
बड़ी मुश्किल से दास जो तुझको मिली।
सेवा सतसंग सुमिरण ध्यान भजन।
इन नियमों पे अमल कमाया करो।।

भजन नं. 265

तर्ज़-होठों से लगा लो तुम----।

टेक-मन का अन्धकार मिटे, तू ज्ञान का दीप जला।
सतगुरु से सदा अपने, तू दिल की तार मिला।।

1. बच बच के चलना सदा, मोह माया की दल दल से।
कोई वास्ता न रखना, दुनियाँ की झिलमिल से।
कर्मों पे रख तू नज़र, इनसे न आँख चुरा।।
2. जैसे हो जग में कमल, ऐसे जग में रहना है।
रख मन पे तू काबू, यही सन्तों का कहना है।
गुरु शब्द की ताकत से, जीत ले मन का किला।।
3. मालिक ने स्वाँसो का, जो बख्शा खज़ाना है।
उसका हिसाब तुझे, इक रोज़ चुकाना है।
गफलत में लुटा पूँजी, किस्मत पे न करना गिला।।
4. सतसंगत बिन होता, चहूँ और है अंधियारा।
सतगुरु के ज्ञान बिना, भटके यह जग सारा।
सही मार्ग चलते कभी,आये पास न कोई बला।।
5. कट जायेगा जन्म मरण, सतगुरु की रहमत से।
हो घट में उजाला तेरे, उन की खिदमत से।
जन्मों की साधना का, मिल जायेगा दास सिला।।

भजन नं. 266

तर्ज़-उठ जाग मुसाफिर----।

टेक-जो शरीर मिला है तुझे बन्दे, तेरे पास प्रभु की अमानत है।
इसे विषयों में यूँ ही गँवा देना, यह तेरी बहुत हिमाकत है।।

1. तेरी काया औज़ार बेगाना है, इक दिन तो इसे लौटाना है।
इससे कुछ फैज उठा ले तू, यहाँ असली यही सदाकत है।।

2. जिस खातिर जग में आया है, मकसद वह क्यों भुलाया है।
गुरु शब्द का रस न पाया है, यह तेरी बड़ी ज़हालत है।।

3. नश्वर सुखों में न अटके, राह भक्ति से न कभी भटके।
फिर भव से तरे तू बे खटके, सच्चे नाम में इतनी ताकत है।।

4. युग युग में सन्त जन आते हैं, मोह नींद से तुम्हें जगाते हैं।
हर हानि से सदा बचाते हैं, दास उनमें इलाही ताकत है।।

भजन नं. 267

तर्ज़-वो दिल कहाँ से लाऊँ----।

टेक-सन्तों की यह हिदायत, ज़रा गौर से ले सुन।
नर तन को प्यारे पाके, कर ले प्रभु भजन।।

1. देही मिली जो उत्तम, यह भागों की निशानी।
सुमिरण भजन तू कर ले, न कर तू आनाकानी।
इसी हेतु ही है पाया, अनमोल तूने तन।।

2. कहते हैं सन्त सारे, तुझको सुना सुना कर।
दुनियाँ न साथ देगी, मत बैठ दिल लगा कर।
दुनियाँ में मीत केवल, इक सतगुरु सज्जन।।

3. दुनियाँ की कोई वस्तु, हरगिज़ न साथ जाये।
इनके लिए ऐ प्राणी, क्यों पाप तू कमाये।
जाये जो साथ तेरे, ऐसा कमा ले धन।।

4. होशियार अब तू हो जा गफलत न कर ऐ दास।
प्रभु का भजन ही करना, हो काम तेरा खास।
भक्ति भजन से होगा, निश्चय प्रभु मिलन।।

भजन नं. 268

तर्ज़-महफिल में जल उठी----।

टेक-शरण में सतगुरु पूरे की, जो जो भी प्राणी आयेंगे।
जन्म मरण के चक्कर से वे, मुक्त रूप हो जायेंगे।।

1. पाँच चोर हरि ने दे के, जग में सब को भिजवाया है।
अपनी माया की झिलमिल में, खूब उन्हें भरमाया है।
नर तन पाके गुरुमुख ही इक, सच्चा लाभ उठायेंगे।।

2. करके संग गुरु-पारस का, भक्ति कन्चन पा ले तू।
जान के उनको अपना हितैषी, गुरु का शब्द कमा ले तू।
तेरी बेड़ी भवसागर से, गुरु ही पार लगायेंगे।।

3. मनमुख की बातों में आकर, नाहक खाता जोश है तू।
मालिक जाने तेरे दिल की, कि है कितने होश में तू।
तन मन जो कुरबान करे, सतगुरु को वे ही पायेंगे।।

4. राज़ी रहे तू दास रज़ा में, तुझे और कुछ भाये ना।
सुरत डोर रहे श्री चरणों में, भटक कहीं तू जाये ना।
सदगुरु ही फिर निश्चय तेरी, दरगाह लाज बचायेंगे।।

भजन नं. 269

तर्ज़-मन ले सतगुरु का सहारा--।

टेक-भागशाली है वो इन्सान।

जो करता नाम से प्यार।।

1. गुरु भक्ति गुरु सेवा में जो, रहता लीन हरदम।
प्रसन्नता सतगुरु का पाता, धन्य हो जाता जीवन।।

2. सतगुरु शब्द में ऐसी अलौकिक, शक्ति है समाई।
जन्म जन्म के कलिमल धुलते, दरगाह होवे रसाई।।

3. सुरत हमेशा निरत है रहती, ध्यान और सुमिरण में।
प्रभु प्रेम में वह रंग जाता पावे दर्शन घट में।।

4. दास पे रहमत करके दाता , दीजिए नाम का दान।
आठोंयाम करूँ तेरी भक्ति, सेवा भी निष्काम।।

भजन नं. 270

तर्ज़-मेरा पिया घर आया---।

टेक-शुभ कर्मों से पाया मानुष जन्म।
इसमें कर लो प्रभु का सुमिरण भजन।।
संग में जायेगा काम ये आयेगा परलोक में सच्चा धन।।

1. स्वाँसों का खज़ाना ये दिन दिन घटता जाये।
गया जो वक्त आज न वापिस हाथ आये।
कर लो यत्न हज़ार मिले न बारम्बार।
अनमोल हीरा रतन।।

2. इबादत करना ही महज ये काम तेरा।
प्रभु की बन्दगी से कटे चौरासी फेरा।
पानी है गर रिहाई,मालिक से कर रसाई।
ज़ोड़ दे चरणों में मन।।

3. सन्तों के सतंसग में तू रोज़ आया कर।
वचनों के हीरे मोती हृदय में बसाया कर।
यही सच्चा सरमाया, छुये न काल माया।
रहे न किसी का भी गम।।

4. अभी तो समय है दासा नाम ध्या ले तू।
अपने घट के भीतर ज्योति जगा ले तू।
उज्जवल कर ले मन दर्पण पायेगा परम आनन्द।
जीवन हो जायेगा फिर धन।।

भजन नं. 271

तर्ज़-नगरी नगरी द्वारे द्वारे-----।

टेक-सन्तों के वचनों को सुनकर, कुछ तो उनकी कदर करो।
सदा ही उन की मौज मुताबिक, जीवन अपना बसर करो।।

1. ज्ञान दीप बिना ऐ प्राणी, दुनियाँ काली रात है।
संग मिले गर सतपुरुषों का, हो जाये प्रभात है।
उन से सच्चा लाभ उठाके, पूरी अपनी कसर करो।।

2. महापुरुषों की शरण में जा कर, भक्ति के धन को पायें।
सकल पदारथ इस दुनियाँ के, फिर तुम को नहीं भरमायें।
सन्तोषामृत पी कर प्यारे. थोड़े में ही सबर करो।।

3. दुनियाँ से है बहुत निभाई, आखिर तुम ने पाया क्या।
बहुत बिताई है गफलत में, अपना तुम ने बनाया क्या।
जो बीती सो बीती तेरी, सफल बाकी उमर करो।।

4. हम को दुनियाँ से लेना क्या, सतगुरु से ही गरज़ है।
निश्चल होना गुरु भक्ति में, गुरुमुखों का फरज़ है।
सोच समझ कर मन में दासा अपने धर्म पे नज़र करो।।

भजन नं. 272

तर्ज़-आपका दर्शन----।

टेक-स्वाँस स्वाँस में कर लो सुमिरण समय अनमोल मिला।
मान ले कहना सतपुरुषों का जीवन सफल बना।।

1. मालिक की तुझ पर हुई रहमत बख्शा ये तन इन्सानी।
कर ले कमाई सच्चे नाम की ज़िन्दगी ये वापिस न आनी।
तोड़ ज़ंज़ीरें मोह बन्धन की प्रभु संग नेह लगा।।

2. अपना सच्चा धन केवल है नाम प्रभु का प्यारा।
बाकी रचना सारे जगत की केवल झूठ पसारा।
नाम ही अपने दिल में बसा ले पायेगा सुख सच्चा।।

3. सोवत जागत उठत बैठत गीत प्रभु के गाले।
निष्काम सेवा सुमिरण करके अपना प्रभु रिझा ले।
संगी साथी सतगुरु हैं बस इनको अपना बना।।

4. दासनदास उज्जवल मुख से दरगाह में जायेगा।
अखुट खज़ाना आनन्द वाला तुझको मिल जायेगा।
एक बार प्रभु के चरणों में अपना मन तू लगा।।

भजन नं. 273

तर्ज़-अफसाना लिख रही हूं....।

टेक-सतसंग है मान सरोवर सुखों की खान बन्दे।
सतसंग से ही मिलते हैं सचमुच भगवान बन्दे।।

1. सतसंग से होकर जाता है मन्ज़िल का रास्ता।
इस मन्ज़िल के राही को जग से क्या वास्ता।
सतसंग है बहती गंगा, कर ले इस्नान बन्दे।।

2. सतसंग ही सच्चा सौदा सच्चा व्यापार है।
परमार्थ के प्रेमी का सतसंग ही आधार है।
सत की चीज़ यहाँ पर सत की दुकान बन्दे।।

3. सतसंग तो वैकुण्ठ से बढ़कर सुखदाई है।
जिसने भी पाई मन्ज़िल सतसंग से पाई है।
सतसंग है शबरी मीराँ नरसिंह का ज्ञान बन्दे।।

4. सतसंग का लाभ लिया न पाछे पछतायेगा।
दरिया का पानी लौट कर वापिस नहीं आयेगा।
दासा कुछ बन्दगी का कर ले सामान बन्दे।।

भजन नं. 274

तर्ज़-जोत से जोत------।

टेक-सन्तों का है उपदेश यही, कर नाम सुमिरण तू हर घड़ी।।

1. अपने स्वाँसों की कीमत का, नहीं अन्दाज़ा तुझ को।
   पड़े न भुगतना गफलत कारण, कहीं खम्याज़ा तुझको।
   कर ले प्रभु की भजन बन्दगी।।

2. मोह और माया की चक्की में, पिसता रहेगा कब तक।
   दुनियाँ के धन्धों में जीवन, विरथा करेगा कब तक।
   मौत है तेरे सिर पे खड़ी।।

3. मालिक ने अजब रचाई, इस सृष्टि की रचना।
   चौरासी के इस चक्कर से, मुश्किल है तेरा बचना।
   जब तक न सतगुरु की ओट गही।।

4. याद न बिसरे कुल मालिक की, हरगिज़ तुझको दासा।
   नाम आराधन से फिर पलटे, भाग्य तेरे का पासा।
   हो जायेंगे दोनों लोक सुखी।।

भजन नं. 275

तर्ज़-मेरी याद में तुम----।

टेक-पूर्ण गुरु की भक्ति कमा ले।
लोक परलोक अपना सफल बना ले।।

1. झूठी प्रीत जग की नहीं काम आये।
हरगिज़ न मन तेरा तुझे वरगलाये।
तू मन की चालों से खुद को बचा ले।।

2. स्वाँस हैं गिनती के भूल न जाना।
दिल न सामानों में कभी अटकाना।
उपदेश सन्तों के ज़हन में बिठा ले।।

3. फीके हैं जग के भोग पदारथ।
बिना भक्ति जाये न जन्म अकारथ।
सतगुरु की सेवा भक्ति कमा ले।।

4. नर तन का मकसद सन्त बतायें।
काल और माया से तुझको बचायें।
सतगुरु से दासा नेह लगा ले।।

भजन नं. 276

तर्ज़-ये दो दीवाने दिल के----।

टेक-हर स्वाँस नाम ध्या ले, मालिक को तू रिझा ले।
हो जाए, हो जाए, हो जाए बेड़ा पार।।

1. प्रभु नाम को तू सदा याद रखना।
स्वाँस स्वाँस में नाम तू जपना।
नर तन है बेशकीमत, यही मौका है गनीमत।
हो जाए-------।।

2. गैर ख्यालों से मन को हटा के।
घट में प्रभु की प्रीत बसा के।
जन्म तू सफल बनाना, चौरासी से मुक्ति पाना।
हो जाए-------।।

3. जोड़ ले सन्तों से अपना तू नाता।
भक्ति और मुक्ति के वही एक दाता।
जो भी शरण में आये, मन की मुरादें पाये।
हो जाए------।।

4. सुमिरण बगैर दासा कुछ न बनेगा।
मालिक के आगे होना लज्जित पड़ेगा।
कर अब भी नाम कमाई, यही होवे अन्त सहाई।
हो जाए--------।।

भजन नं. 277

तर्ज़-मैं तेरा दुश्मन दुश्मन तू----।

टेक-हर स्वाँस स्वाँस में कर लो जी सुमिरण, सफल हो जाये जीवन।
सुखराशी अविनाशी प्रभु का नाम, सुख की खान।।

1. नाम से ज्यों ज्यों सुरति लगती, जन्म जन्म की मैल उतरती।
तन मन पावन हो जाता है, दिल का दर्पण धुल जाता है।
घट में होते हैं प्रभु के दर्शन।।

2. नाम की है ये अतुल बड़ाई, हरदम रहता संग सहाई।
जो भी श्रद्धा भाव से ध्यावे, कोई न मुश्किल पास में आवे।
कट जाता है चौरासी का बन्धन।।

3. नाम जहाज़ पे जो चढ़ जाता, भवसिन्धु से वो तर जाता।
शक की इसमें बात नहीं है सच्ची ये अनमोल निधी है।
पल में पापी को करता है पावन।।

4. मिलता ये पूरे गुरु के पास, चरण शरण में जो आ जाये दास।
कर देते हैं मालामाल, सेवक पर होकर निहाल।
चढ़ जाता उस पर भक्ति का रंग।।

भजन नं. 278

तर्ज़-जिस गली में तेरा----।

टेक-सतगुरु नाम की हो जहाँ रोशनी,वहाँ रहता कभी भी अन्धेरा नहीं।
तू ही तू की जहाँ धुन बजने लगे,वहाँ होता कभी मेरा तेरा नहीं।।

1. यह शक्ति अलौकिक तेरे नाम मे।
ऐसी तासीर है प्रेम के जाम में।
सभी बन्धन कटे पहुँचे निज धाम में।
नाहीं काल की गमता है उस जगह।
माया नागिन का भी वहाँ डेरा नहीं।।

2. नाम वाले जहां में हमेशा सुखी।
वे यहाँ भी सुखी और वहाँ भी सुखी।
फिर तू क्यों करता है नाम से बेरुखी।
क्या किया तू ने संसार में आए कर।
मालिक की ओर मन को जो फेरा नहीं।।

3. न भटक दर बदर चेत जा चेत जा।
सतगुरु पूरे की तू ले ले पनाह।
वे बताएंगे तुझ को सही रास्ता।
उनकी खिदमत बजा तू दिलो जान से।
फिर पाये चौरासी में फेरा नहीं।।

4. जो हिदायत फकीरों की वह मान ले।
नाम से प्रीत करने की तू ठान ले।
कीमती हीरे को तू पहचान ले।

भजन नं. 279

तर्ज़-मेरे साजना मेरे प्रीतमा-----।

टेक-है फर्ज़ तेरा यह ऐ बन्दे.पल पल प्रभु का नाम ध्या।
प्रभु नाम ही तेरा गहना है, सन्तों ने यह बार बार कहा।।

1. आया तू नाम ध्याने को, सुरति शब्द से मिलाने को।
यही सच्चा लाभ उठाने को, आना हुआ जग में तेरा।।

2. इस जग की जितनी रचना है, सब रैन का इक सपना है।
पर माना तूने अपना है, इस गलतफहमी को हटा।।

3. काम चाहे तू जगत के कर, पर नाम सच्चे से झोली भर।
फिर जायेगा जीवन संवर, है आरिफों ने यह कहा।।

4. अब जाग जा ऐ दास तू, जप नाम को हर स्वांस तू।
तज झूठी दुनियां की आस तू, पाये यकीनन सुख सदा।।

भजन नं. 280

तर्ज़-मिलती है ज़िन्दगी में-----।

टेक-होती है सतगुरु की, इनायत कभी कभी।
रहम-ओ-करम से प्यार की, रहमत कभी कभी।।

1. दाता है कुल जहान का, मालिक व मेहरबाँ।
होती नसीब इस दर की, खिदमत कभी कभी।।

2. आदत है उनकी चाहने वालों को चाहते हैं।
कर दिल में पैदा मिलने की, चाहत कभी कभी।।

3. मट्टी का है खिलौना यह ज़िन्दगी तेरी।
मिलती है सांस लेने की, मोहलत कभी कभी।।

4. दौलत का पा सहारा, गुरु को न भूल तू।
देकर वह छीन लेते हैं, दौलत कभी कभी।।

5. माया के रास्ते मे, भटकता, क्यों रात दिन।
पा उनके दर पे, जाने की आदत कभी कभी।।

6. दुनियाँ के रिश्ते नाते, इक ख्वाब है तेरा।
बन्दे तू इस की भूल जा, उल्फत कभी कभी।।

7. भक्ति व सेवा नाम ही, जीवन का मोल है।
खुशकिस्मती से मिलती है, कीमत कभी कभी।।

8. है वक्त अब भी, सतगुरु के, दामन को थाम ले।
होती नसीब इस दर की, इनायत कभी कभी।।

9. ऐ दास ज़िन्दगी पे, इतना न फूल तू।
मरने से पहले आती है कयामत कभी कभी।।

भजन नं. 281

तर्ज़-जोत से जोत----।

टेक-सन्तों का है सदा यही पैगाम।
कभी न बिसारो मालिक का नाम।।

1. फानी दुनियाँ को तू हरगिज़, अपना घर न बनाना।
मोह माया के अन्धकार में, मकसद भूल न जाना।
कभी न बनना मन का गुलाम।।

2. लेके साथ जो था आया, स्वाँसों का तू खज़ाना।
आखिर उसका मालिक आगे, तुझे है लेखा चुकाना।
मानुष जन्म कहीं न हो बदनाम।।

3. सतपुरुषों को बना ले राहबर, अपने धाम ले जायें।
तेरे सूने मन मन्दिर मे, ज्ञान का दीप जलायें।
उनका हमेशा तू दामन थाम।।

4. देख ले पी के अब तो दासा, प्रभु नाम का प्याला।
जिस का खुमार कभी न उतरे, ऐसा करे मतवाला।
आठोंयाम पी नाम के जाम।।

भजन नं. 282

तर्ज़-प्रभु तेरे दर्शन पे----।

टेक-जपना प्रभु का नाम तू प्राणी।
तुझको मिली कीमती ज़िन्दगानी।।

1. बड़े पुण्य से तुझको नर तन मिला है।
उठा लाभ इससे, उठा ना तू हानी।।

2. गफलत में यूँ ही समय न गँवाना।
हर बार पाये न यह तन प्राणी।।

3. काम जगत के बेशक तू कर ले।
पर नाम साचे में सुरत लगानी।।

4. दुनियाँ में हरगिज़ दिल न फँसाना।
फँसाया जो दिल तो होगी परेशानी।।

5. सतगुरु पूरे की खिदमत किया कर।
पायेगा निश्चय सुख तू लासानी।।

6. सतगुरु के वचनों पे अमल तू करके।
दास बना ले सफल ज़िन्दगानी।।

भजन नं. 283

तर्ज़-सतगुरु तुम्हारे नाम ने-----।

टेक-है आरिफों का कहना यह, चन्द स्वाँस का जीवन।
हर स्वाँस में कमाया कर, प्रभु प्यारे का भजन।।

1. न जाने अन्त का तेरे, बस यह ही स्वाँस हो।
जाये न स्वाँस भक्ति बिन, कर ऐसा तू यतन।।

2. तेरे सामने ही जा रहे, रिश्ते जहान के।
हो जायेगा इक दिन तेरा, निश्चय ही निधन।।

3. हर स्वाँस कर ऐसे कर्म, तुझे याद सब करें।
जब जाए तू जहान से, दुनियां करे रुदन।।

4. वह चाल चल कि खुशियों में, बीते उमर तेरी।
हर रोज़ ही स्वागत करे, तेरा नई किरण।।

5. अब भी समय है दास तू, सन्तों का संग कर।
ढंग सीख ले तू उनसे, जिससे हो प्रभु मिलन।।

भजन नं. 284

तर्ज़-भक्ति दे बाझों-----।

टेक-स्वाँस स्वाँस बन्दे प्रभु नाम ध्याना है।
मानुष जन्म बन्दे सफल बनाना है।।

1. दुर्लभ है तन इन्सानी, कहती सन्तों की बानी।
ऐसे कीमती जीवन को, विरथा नहीं गँवाना है।।

2. जीवन है दिन दो चार, तज दे माया का प्यार।
प्रभु की प्रेमाभक्ति को ही अपने हृदय बसाना है।।

3. जग की है झूठी शान, मत कर इसका अभिमान।
अन्त समय इसने न तेरा हरगिज़ साथ निभाना है।।

4. सतगुरु की सेवा करना, नाम में मन को रंगना।
मोड़ के जग से सुरति सतगुरु शब्द के संग मिलाना है।।

5. फर्ज़ यह तेरा दास, सतगुरु पे रख विश्वास।
उनकी आज्ञा मौज में अपना जीवन बिताना है।।

भजन नं. 285

तर्ज़-होठों से लगा लो----।

टेक- सदा नाम का सुमिरन कर, तेरा जन्म संवर जाये।
सतगुरु की रहमत से, भवसागर तर जाये।।

1. दुनियाँ के सामानों में, नहीं दिल को फँसाना तुम।
मालिक की भक्ति में, सुरति को लगाना तुम।
जीवन है सफल उसका, जो बन्दगी कर जाये।।

2. सतगुरु की भक्ति ही, जग में सुखदायी है।
मालिक की दरगाह में सदा संग सहायी है।
सतगुरु जो बनें रहबर, हो सहल सफर जाये।।

3. दुनियां में ऐ प्राणी, कहीं सुख का नाम नहीं।
गुरु शरण बिना कोई, सुख का ठाम नहीं।
गुरु पल में निहाल करे, हो जिस पे नज़र जाये।।

4. बीते न समय दासा, हरगिज़ तेरा गफलत में।
हर स्वाँस लगा लेखे, सन्तों की संगत में।
गुरु-सेवा में तेरा, जीवन यह गुज़र जाये।।

भजन नं. 286

तर्ज़-

टेक-नाम प्रभु का तुम दिल में बसाये रखना।
नाम से हर दम ही तुम लौ लगाये रखना।।

1. नाम प्रभु का खज़ाना है सच्चे सुख का।
हर इक स्वाँस में तुम नाम ध्याये रखना।।

2. जग के धन्धों में कभी सुरत न फँसने पाये।
नाम से सुरत को पल पल में मिलाये रखना।।

3. होगा प्रभु धाम में मुख नाम से तेरा उज्जवल।
नाम के ज़ेवर से तुम खुद को सजाए रखना।।

4. दिल में चाहत है अगर नाम के सच्चे धन की।
गुरुदेव के वचनों पर खुद को चलाए रखना।।

5. दुनियाँ से बिगड़े तो बेशक बिगड़े दासा।
पर सतगुरु से तुम हरदम ही बनाए रखना।।

भजन नं. 287

टेक-जपता क्यों नहीं हरि का नाम, तेरे पूरण हों सब काम।

1. झूठी माया झूठी काया झूठा खेल रचाया।
   साँचा रहे न्यारा इससे झूठे मन फँसाया।।
2. चार दिनों का जगत पसारा चार दिनों की बाज़ी।
   गुरुमुख रहे उदास जगत से मनमुख फंस कर राज़ी।।
3. कन्चन जैसा सुन्दर तन ये, होवे खाक की ढेरी।
   घड़ी पलक का दिवस उजाला आखिर रैन अँधेरी।।
4. मेरा कुटुम्ब कबीला मेरा कह कह शोर मचावे।
   नाम बिना परलोक में तेरे संग न कुछ भी जावे।।
5. आये अकेला जाये अकेला संग न कोई तेरे।
   मगर चलते मिल गये संगी साथी मीत घनेरे।।
6. ऊँचे ऊँचे महल बनाये करता बहुत पसारा।
   चार दिनों का बास जगत में बाजे कूच नक्कारा।।
7. माया कारण पच पच मरता करता हेरा फेरी।
   भरम जाल में आप बँधाया कोई न वस्तु तेरी।।
8. धन जोबन बादल की छाया तू मत करे गुमाना।
   क्या तू लाया साथ में अपने क्या तेरे संग जाना।।
9. विषयों के सुख में फँस कर मन मूर्ख नाम भुलाया।
   हीरे जैसा जन्म अमोलक हाये खाक मिलाया।।
10. काम क्रोध लोभ मोह ने घेरा और अभिमान सतावे।
    जिसके सिर पर पाँच भूत ये सो कैसे सुख पावे।।
11. नित नित तृष्णा बढ़ती जावे बहुत लगावे आसा।
    पल में खेल खत्म होयेगा जावे जीव निरासा।।

12.जो कुछ करे सो तन की खातिर आत्म चेतन कीन्हा।
शुद्ध चेतन निर्मल आत्म को डाल नरक में दीन्हा।।

13. बड़ा बड़ा सब जग में कहाये दुनियाँ बेशक माने।
नाम बिना परलोक में तेरी जाति न कोई पछाने।।

14. मुझसा चतुर न जग में कोई फूला फिरे अज्ञानी।
बिन भगती चतुराई तेरी किस लेखे अभिमानी।।

15. राजा राणा सब ही दुखिया भक्ति नाम विहिना।
मानुष तन धर भक्ति न कीन्हीं निष्फल जग में जीना।।

16. भक्ति कारन जग में आया माया भरम भुलाना।
पारस त्याग के काँच खरीदे काहे भया दीवाना।।

17. यह जग खुला बाज़ार अनोखा भाँति भाँति का सौदा।
स्वाँस पूँजी दे नाम मोल ले मत खाइयो यहाँ धोखा।।

18. जां की गाँठी नाम खज़ाना ताकी मैं बलिहारी।
धनवन्ता पतवन्ता रोई कारज लेत सँवारी।।

19. चेत चेत मन मेरे प्यारे क्यों तू समय गँवाये।
अब नहीं चेते तो कब चेते आयु बीती जाये।।

20. बहुत कहा सन्तन समझाई ग्रन्थन कहयो पुकारी।
ऐसा समय न फिर पावेगा अब ही लेहु सँभारी।।

21. अब तो सुने न बात सन्त की सुनकर चित नहीं लावे।
यम का दण्ड लगे जब सिर ते तब बहुते पछतावे।

22. बहुत गई गफलत में खोई रही उमिरया थोड़ी।
गुरु भक्ति कर जन्म सुधारो दास कहे कर जोड़ी।।

भजन नं. 288

तर्ज़-रहा गर्दिशों में-----।

टेक-नर तन को पाके प्राणी, तू नाम धन कमा ले।
हर स्वांस नाम जप के, जीवन सफल बना ले।।

1. स्वार्थ के सब हैं रिश्ते, यही आरिफों का कहना।
ख्वारी से गर है बचना, इनसे सुरति हटा ले।।

2. मकसद से अपने हरगिज़, होना नहीं तू गाफिल।
माया के बन्धनों से, खुद को तू छुड़ा ले।।

3. तिगनी का नाच तुझको, तेरा मन ही है नचाता।
कस देंगे इसकी मुश्कें, सतगुरु के कर हवाले।।

4. संगत में सतगुरु की, कर आखरत का सौदा।
करके तू सेवा भक्ति, सतपुरुषों को रिझा ले।।

5. सतगुरु ही फकत दासा, धुरधाम के हैं संगी।
आँखों में उनका नूरी, जलवा तू बसा ले।।

भजन नं. 289

तर्ज़-मिलती है ज़िन्दगी में-----।

टेक-पाया है मानुष तन तूने, प्रभु नाम तू ध्या।
इस बेशकीमत ज़िन्दगी, से लाभ तू उठा।।

1. जागे नसीब जन्मों के,अवसर जो यह मिला।
कर ले प्रभु का ध्यान, जिससे हो तेरा भला।
हीरा जन्म जो पाया है, प्रभु ध्यान में लगा।।

2. आया फकत तू भक्ति के कारण जहान में।
इस बात को बिठा ले तू, अपने ध्यान में।
उत्तम देही को पाके तू ,प्रभु भक्ति ही कमा।।

3. दुनियां की झिलमिल में न,अपने दिल को तू लगा।
लगती है सुन्दर पर, हकीकत में है यह फना।
फानी जगत में है केवल, प्रभु नाम ही बका।।

4. दौलत प्रभु के नाम की, पल पल में तू कमा।
पायेगा सुख तू ज़िन्दगी में, दास ऐ सदा।
आरिफों के इस वचन को ज़हन में बिठा।।

भजन नं. 290

तर्ज़-ये दो दीवाने-----।

टेक-सतगुरु से नेह लगा ले, तू उनको ही रिझा ले।
आये हैं, आये हैं, आये हैं तारणहार।।

1. दुनियाँ की प्रीत का तज दे आधार तू।
अपने प्रभु का पा ले सच्चा प्यार तू।
छोड़ के सब झमेले, सतगुरु की शरण ले ले।।

2. सतगुरु के चरणों में पायें सच्ची खुशियाँ।
होती हैं तृप्त उनके दर्शन से अँखियाँ।
गुरु सम नहीं देव दूजा, करो उनकी सेवा पूजा।।

3. दिल में न सच्चा प्रेम जब तक समाये।
हरगिज़ पवित्रता न इन्साँ में आयें।
करें दिल की शीशा साफ, जपा के अजपा जाप।।

4. अपनी पहचान सतगुरु आप हैं कराते।
दासों का दास अपने सेवक को बनाते।
लगा के सच्ची लगन, करें गुरु भक्ति में मगन।।

भजन नं. 291

तर्ज़-मेरे मीत तुझे हो----।

टेक-बिन भक्ति किसी ने सुख नहीं पाया।
सब ग्रन्थों व सन्तों ने यही फरमाया।।

1. और यतन करे चाहे लाखों बेशुमार।
पर भक्ति बिना नांहीं पाये सुख सार।
ऐसी चिन्तामणि यह सुन्दर।
लेवे इसके अपने हृदय धार।
फिर छू न सके उसे काल और माया।।

2. सुख ढूँढता फिरे झूठे ऐश भोग में।
उलटा दुःख है भरा माया के संयोग में।
दरअसल तलाश तेरी गलत है।
सुख भरपूर है सुरत शब्द योग में।
इस बात को आरिफों ने खूब आज़माया।।

3. खुद श्री राम जी ने वाणी मुख से उचारी।
मम भक्ति है मुझको प्राण प्यारी।
लग जाये जो जन इसमें।
उसकी गति मति फिर सबसे न्यारी।
यह कानून अटल है शुरु से बनाया।।

4. दासनदास यह है बात तेरे बहुत काम की।
और छोड़ भरोसे ले ले टेक नाम की।
यकसू होकर भक्ति में लग जा।
चाह दिल में न रख मान अपमान की।
फिर समझ ले काम तेरा बना बनाया।।

भजन नं. 292

तर्ज़-किधरे मिल जाये हारां वाला----

टेक-नाम प्यारा प्रभु का ऐ प्राणी, हिरदय अपने बसाना।
बेशकीमत तेरी ज़िन्दगानी, लाभ इससे उठाना।।

1. सुखों का सागर नाम प्रभु का।
सच्चा साथी है यह रूह का।
दोनों लोकों में है संगी सहाई, सन्तों का है फरमाना।।

2. तन से दुनियाँ के काम तू करना।
मन में प्रभु का नाम तू जपना।
जैसे जल में कमल है रहता, ऐसा जीवन तू बनाना।।

3. जिस जिस ने भी नाम ध्याया।
जग में अटल पद उसने पाया।
नाम रोशन करना चाहे अपना, प्रीत नाम से लगाना।।

4. दासा पल पल नाम ध्या ले।
जीवन अपना सफल बना ले।
सतपुरुषों की शरण में आके, सेवा भक्ति कमाना।।

भजन नं. 293

तर्ज़-मनुआ गुराँ दा बन के----।
टेक-नाम से जोड़ ले दिल की तार।
समय बड़ा अनमोल मिला है, इसे न यूँ ही गुज़ार।।

1. आया जगत में केवल प्राणी, जपने प्रभु का नाम।
भूल गया इस कर्म को, माया में गलतान।
कितनी हानी उठानी पड़ेगी, कुछ तो सोच विचार।।

2. बड़े भाग से मिला है तुझको, चोला ये इन्सानी।
इसमें कर ले भजन बन्दगी, ज़िन्दगी सफल बनानी।
कट जायेंगे भव बन्धन सब, पाकर सच्चा आधार।।

3. झूठी दुनियाँ के आडम्बर, तेरा साथ न देंगे।
अटक गया इनमें गर दिल तो, तुझको भटका देंगे।
स्वाँस स्वाँस जप नाम प्रभु का, पायेगा सुख अपार।।

4. दासन दास ये जीवन तेरा, निश्चय पलट जायेगा।
मालिक की सच्ची दरगाह में, उज्जवल मुख जायेगा।
सच्चा संगी साथी है ये कर ले इससे प्यार।।

तर्ज़-अच्छा सिला दिया-----।

टेक-प्रभु नाम हिरदे में धारो प्रेमियों।
नाम बिन झूठे हैं पसारे प्रेमियों।।

1. नाम से संवरते हैं बिगड़े काज।
नाम ही भव तरने का जहाज़।
इक पल इसें न विसारो प्रेमियों।
जीवन ये अपना संवारों प्रेमियों।।

2. जिसनें भी घट में बसाया नाम को।
पा लिया उसने सच्चे धाम को।
मिलते हैं प्रेम के हुलारे प्रेमियों।
नाम बिन झूठे हैं सहारे प्रेमियों।।

3. नाम जो जपे हरि को पावे।
लोक परलोक संवर जावें।
रहते वो जग से न्यारे प्रेमियों।
नाम बिन झूठे हैं पसारे प्रेमियों।।

4. दासन हर पल नाम सम्भाल।
कोड़ियों के बदले खो न लाल।
सब कुछ इस पर वारो प्रेमियों।
जीवन ये अपना सँवारो प्रेमियों।।

तर्ज़-जिस गली में-----।

टेक-बेशकीमत तुझे जो नरतन मिला,इस नर तन से प्यारे तू लाभ उठा।
स्वाँसों की अमोलक जो पूँजी मिली,प्रभु सुमिरण में प्यारे इसको लगा।।

1.बेशकीमत है बेशक तन यह तेरा।
पर भरोसा नहीं है इसका ज़रा।
क्या पता काल कब आके ले इसे उठा।
इसलिए कहते आरिफ और सद्ग्रन्थ।
सच्चे नाम में अपनी सुरत लगा।।

2.झूठी दुनियाँ में दिल को लगाना नहीं।
कभी विषयों में चित्त को फँसाना नहीं।
धोखे में कभी इसके आना नहीं।
छल कपट भरी है यह दुनियाँ।
जीव को देती पथ से यह भटका।।

3.निगाह कर्मों पे अपने रखना सदा।
जहाँ जायेगा होगा आदर तेरा।
बोल मीठे तू मुख से कहना सदा।
नूर हर शै में मालिक का देखना।
इस बात को दिल में बिठाना सदा।।

4.शिक्षा सन्तों की दिल में बसा ले तू।
पूरे सतगुरु की सेवा कमा ले तू।
दास खुद को गुरु का बना ले तू।
पाये जावन के तू असली लक्ष्य को।
ऐसा आरिफों ने सोच सोच कहा।।

तर्ज़-दो भक्तां नूँ----।

टेक-नर तन पाके भक्ति कमाइये।
इक स्वाँस भी न व्यर्थ गंवाइये।।

1. कहती सन्त जनों की वाणी।
सुन गौर से ऐ भोले प्राणी।
यह जीवन सफल बनाइये।।

2. बिना भक्ति नहीं निस्तार जी।
चाहे यतन करे कोई हज़ार जी।
इस नुक्ते को ज़हन बिठाइये।।

3. इस तन की कीमत भारी।
यह मिलता नहीं है हर बारी।
माटी में न लाल मिलाइये।।

4. दासा मोह निद्रा को छोड़।
सुरति अपनी शब्द से जोड़।
घट में गुरु दर्शन पाइये।।

तर्ज़-बहुत प्यार करते हैं------।

टेक-प्रभु नाम जप ले तू हर घड़ी।
मानुष जन्म का सच्चा लाभ यही।।

1. स्वार्थ के सब हैं रिश्ते नाती।
श्मशान तक ही हैं तेरे साथी।
रहे मोह माया में न सुरति अड़ी।।

2. चौबीस हज़ार है खर्च रोज़ाना।
ज़रा आमदन का भी हिसाब लगाना।
नाम जप के पूरी कर यह कमी।।

3. तुझको लाज़िम भजन बन्दगी है।
स्वाँस हैं गिनती के थोड़ी ज़िन्दगी है।
गँवाना न स्वाँस अपने विरथा कभी।।

4. जितनी तू फेरेगा स्वाँसों की माला।
उतना ही घट में होगा उजाला।
कदमों में होगी तेरे फिर हर खुशी।।

5. नाम धन की दासा कर ले कमाई।
प्रभु धाम में जो तेरा होगा सहाई।
फिर न कभी तुझको हो शरमिन्दगी।।

भजन नं. 298

तर्ज़-सतगुरु तेरे प्यार ने----।

टेक-लाखों को तेरे नाम ने भव से तरा दिया।
तारीक दिल को पलक में रोशन बना दिया।।

1. राहत को पाने का फकत ये ही है रास्ता।
सब आरिफों ने खोल कर सच सच बता दिया।।

2. ताकत है यह इलाही, जिसका बयाँ नहीं।
अहं भाव इसने जीव का पल में मिटा दिया।।

3. दीगर ख्याल छोड़ के लिया जिसने आसरा।
चौरासी लाख फेरों से उसको बचा दिया।।

4. जपने से नाम तेरा, जग की न चाह रहे।
ऐसा अनोखा कोई है जादू चला दिया।।

5. कुरबान दास क्यों न हो मालिक के प्यारों पे।
तेरी बन्दगी में जिसने, खुद को मिटा दिया।।

तर्ज़-मन ले सतगुरु का सहारा----।

टेक-प्रभु नाम बड़ा सुखकारी।
दूर करता सब बेकरारी।।

1. माया के बन्धनों से छूटे, जो इसे दिल में बसाये।
सफल कर लेता वो जीवन, साचा आनन्द पाये।।

2. सब रोगों की अचूक औषधि, नाम प्रभु का प्यारा।
लाखों ने इसको जप जप कर, अपना जन्म संवारा।।

3. तीन लोक में पाता है आदर, करता जो इससे प्यार।
चल सके न उस पर कोई, माया काल का वार।।

4. जहाँ नाम का होवे वासा, मिट जाये अन्धियारा।
सुरति शब्द में जाके समाये, पाये सुख अपारा।।

5. सब सन्तों और ग्रन्थों ने भी, इसकी महिमा गाई।
लोक और परलोक में दासा, रहता संग सहाईं।।

भजन नं. 300

तर्ज़-प्रेमा भक्ति भरा तेरा----.

टेक-मेरे सतगुरु तेरा नाम है रस भरा।
नाम तेरा रहे मेरे लब पे सदा।।

1. नाम तेरे में देखी करामात यह।
दूर करता है दुःख दर्द उतपात यह।
सब कलेशों की है लाजवाब इक दवा।।
2. उसको चिन्ता कलपना सताती नहीं।
कोई मुश्किल उसे पेश आती नहीं।
नाम तेरे का आधार जिसने लिया।।
3. नाम जप कर तेरा पार लाखों हुए।
कौन महिमा तेरे नाम की कह सके।
पार भव से करे नाम सतगुरु तेरा।।
4. नाम से सिद्ध होते मनोरथ सभी।
नाम से खौफ खाता है खुद काल भी।
नाम जपने से भय और भरम मिट गया।।
5. अपनी हस्ती मिटा दूं तेरे नाम पर।
ज़िन्दगी को लुटा दूँ तेरे नाम पर।
नाम बिन दास का जीना किस काम का।।

तर्ज़-जन्म सुधारने----.

टेक-जप ले रे मन प्रभु का नाम।
इसमें ही तेरा है कल्याण।।

1. नाम बिना हरगिज़ न होगा बेड़ा भव से पार कभी।
नाम ही सारे जगत में सच्चा एक आधार यही।
ये निश्चय तू जान सुमिर ले आठोंयाम।।

2. नाम सरोवर में निशदिन जो भी करता मज्जन।
कलिमल दोष धुल जाते हैं साफ हो जाता तन मन।
सब सुखों की खान प्यारा प्यारा ये नाम।।

3. नाम योग की अग्नि कर दे खुदी का नाश।
फिर तेरे घट के भीतर होगा प्रभु का वास।
इसकी महिमा महान गाये वेद पुरान।।

4. नर देही पाई है उत्तम बड़े ही पुण्य कर्म से।
अपना काम बना ले दासा तू अब इस जन्म में।
पाये पद निर्वाण पी ले मीठा जाम।।

भजन नं. 302

तर्ज़-मुझे रास आ गया है-----।

टेक-सतगुरु की भक्ति के बिन, न ज़िन्दगी बिताना।
स्वाँसों का यह खज़ाना, न भक्ति बिन लुटाना।।

1. इनसानी जामा तुझको, बड़े भाग्य से मिला है।
दुर्लभ यह जन्म अपना, गफलत में न गँवाना।।

2. लाज़िम तुझे यही है, कर याद सतगुरु को।
सेवा में सतगुरु की, दिल को सदा लगाना।।

3. कर प्रेम सतगुरु से, चाहे अगर भलाई।
झूठा है प्यार जग का, उसमें न दिल फँसाना।।

4. सतगुरु की शरण आके, पी नाम का प्याला।
हर स्वाँस स्वाँस दासा, गुरु को सदा ध्याना।।

तर्ज़-तुम्हे क्या सुनाऊँ----।

टेक-लाज़िम है तुझ को बन्दगी, काहे भूलता नादान है।
इस जग सराए फानी में, हर कोई इक मेहमान है।।

1. दिन चार का यहाँ मेला है, जाने वाला संग न धेला है।
ज़रा सोच मन में गाफिला, किस बात पे करता गुमान है।।

2. मायावी फल हैं ज़हर भरे, तू परख ले खोटे खरे।
न शिकार होना माया का, इस में बड़ा नुकसान है।।

3. भक्ति सुखों की खानी है, बिन भक्ति क्या ज़िन्दगानी है।
बेमुख रहे मालिक से जो, भला वह भी क्या इन्सान है।।

4. सतगुरु से अपने नेह बढ़ा, पल पल में तू भक्ति कमा।
ऐ दास फिर तू निश्चय ही, पायेगा पद निर्वाण है।।

भजन नं. 304

तर्ज़-मेरी याद में तुम----।

टेक-प्रभु याद में सदा चित्त को लगाना।
जीवन को है गर सफल बनाना।।

1. सामान दुनियाँ के सब बे बका हैं।
रिश्ते व नाते भी सब बे वफा हैं।
गैरों के ख्यालों को दिल से हटाना।।

2. झूठे हैं जग के सम्बन्ध सारे।
फकत भक्ति प्रभु की सच्ची है प्यारे।
प्रभु सेवा भक्ति में जीवन बिताना।।

3. तू दुनियाँ से रख अपना व्यवहार बेशक।
कर जो ज़रूरी है व्यापार बेशक।
मगर अपना दिल न उनमें फँसाना।।

4. अगर सच्चे सुख की चाहत है तुझको।
बचा जग के जंजाल से दास खुद को।
सतगुरु के चरणों से प्रीति लगाना।।

भजन नं. 305

तर्ज़-प्यासे पँछी नील गगन-----।

टेक-मानुष तन की कदर यही है, स्वाँस स्वाँस प्रभु ध्याना।
भव तरने का साधन है यह, सुरति शब्द से मिलाना।।

1. क्यों नाहक जग के धन्धों में, रात दिवस रहे खोया।
अमृतफल तज कर भक्ति का, बीज विषयों का बोया।
प्रभु का पावन नाम भुलाकर, जग का बना दीवाना।।

2. संचित की जग की माया, और मन की हवस बढ़ाई।
जग के झूठे सामानों का, बना है तू सौदाई।
इन में कुछ नहीं तेरा प्यारे, यह सब माल बेगाना।।

3. श्रेष्ठ कर्म में रत हो प्राणी, बदल रवैय्या मन का।
बार बार करें सन्त हिदायत, कर ले यतन भजन का।
बीत गया गर वक्त यूँ ही तो, पड़ेगा फिर पछताना।।

4. दास शरण बिन सतपुरुषों की, सार तत्त्व नहीं पावे।
परमार्थ का गूढ़ भेद जो, हाथ कभी न आवे।
राज़ हकीकी जान के उनसे, जीवन सफल बनाना।।

तर्ज़-इक प्यार का नगमा-----।

टेक-सतगुरु जी नाम तेरा, कैसा प्यारा जी प्यारा है।
श्रद्धा से जपने से, मिटता दुःख भारा है।।

1. जिस दिल में सतगुरु जी तेरे नाम का वास होवे।
उस प्रेमी के दिल मे, सदा ज्ञान प्रकाश होवे।
ऐसे जिज्ञासु का, चमके भाग्य सितारा है।।

2. सब सन्तों ने हर युग में, महिमा नाम की गाई है।
पापी से पावन करता, इसकी यह बड़ाई है।
लाखों डूबते जीवों को, इसने पार उतारा है।।

3. नाम धन यह ऐसा है सच्चा, जो न होता कभी भी फना।
चोर इसको न लूट सके, अग्नि इसको न सकती जला।
लोक परलोक में जीव को, सदा देता सहारा है।।

4. ऐ दास यह फर्ज़ तेरा, पल पल में तू नाम ध्या।
और छोड़ के सब आसरे, सच्चे नाम को मीत बना।
बिन नाम के बाकी जहाँ, सब झूठा पसारा है।।

तर्ज़-ठहरो ज़रा सी देर-----।

टेक-सुमरिण करो प्रभु नाम का, जन्म सफल हो जायेगा।
नाम ही लोक परलोक में, साथ हमेशा निभायेगा।।

1. लाख चौरासी जोनि में, मानुष जन्म प्रधान है।
अब भी गफलत की अगर, तो बहुत बड़ा नुकसान है।
जोड़ के सुरति नाम में, तू भव सागर तर जायेगा।।

2. जन्म अकारथ जाए ना, कर मालिक की बन्दगी।
सन्मार्ग पे चलने से, संवर जायेगी ज़िन्दगी।
ले के शरण तू सन्तों की, किस्मत अपनी जगायेगा।।

3. इस मिथ्या संसार में, तेरी अपनी चीज़ नाम है।
कर ले कमाई स्वाँस स्वाँस, यह तेरा असली काम है।
हकीकत सतगुरु बिन भला, कौन तुझे समझायेगा।।

4. हासिल न होगा दास कुछ, दुनियाँ के झूठे प्यार में।
चित्त का नाता जोड़ ले, सतगुरु के चरणार में।
नज़रे करम से सतगुरु की, साचे सुख को पायेगा।।

तर्ज़-ज़रा पर्दा हटा दो----।

टेक-भागों की है निशानी, तन पाया इन्सानी।
प्रभु नाम को प्यारे ले दिल में बसा।।

1. कई जन्मों में भटक भटक कर नर तन तूने पाया।
स्वाँस स्वाँस प्रभु नाम सुमिर ले सच्चा यह सरमाया।
भक्ति का धन कमा ले, जीवन को सफल बना ले।।
प्रभु नाम को प्यारे------।।

2. इस दुनियाँ में कुछ नहीं तेरा दुनियाँ है सब फानी।
सच्चे नाम बिना जग की कोई वस्तु साथ न जानी।
सब आरिफों का कहना, प्रभु नाम ही सच्चा गहना।।
प्रभु नाम को प्यारे-----।।

3. बेशक दुनियाँ में रह करके, काम जगत के करना।
पर मालिक के सच्चे नाम में मन अपने को रंगना।
सुरति शब्द से मिलाना, दुनियां को दिल से हटाना।
प्रभु नाम को प्यारे-----।।

4. यश पायेगा जग में सदा सतगुरु का बन तू दास।
उनके पावन वचनों पे रख श्रद्धा और विश्वास।
जीवन में होय सवेरा, मिट जाय मन का अन्धेरा।
प्रभु नाम को प्यारे-----।।

तर्ज़-दिल लूटने वाले-----।

टेक-भक्ति की सीधी राह तू चल, इसमें ही तेरी भलाई है।
सतगुरु का सहारा जिसने लिया, उसने ही मन्ज़िल पाई है।।

1. जग में कोई सच्चा मीत नहीं, मोह माया का सब ही पसारा है।
हैं स्वार्थी जग के रिश्ते नाते, मतलब ही उनको प्यारा है।
कुछ सोच ले अपना भला बुरा, सतगुरु ही संग सहाई है।।

2. अवगुण न देख किसी के तू, सन्तों का यह समझाना है।
हर किसी ने आखिर अपने ही, कर्मों का फल पाना है।
कर्मों का सुधार न किया अगर, निश्चय तेरी रूसवाई है।।

3. रह मगन सदा तू सुमिरण में, जग को है किस ने जीत लिया।
दुनियाँ है उसकी पूजा करती, जिसने मन अपना जीत लिया।
लेकिन बिन सतगुरुमन जीतने की,नहीं समझ किसी कोआई है।

4. भक्ति के मार्ग में दासनदास, असत कभी न फल सकता।
जो होना है सो होना है, दरगाही हुकुम न टल सकता।
छल छिद्र कपट न भाये उनको, सतगुरु को प्रिय सच्चाई है।।

तर्ज़-मेरा गीत अमर कर दो----।

टेक-सब सुखों की खानी, मालिक की भक्ति है।
भव तरने की और कोई, सहज न युक्ति है।।

1. तेरी सुरति की धारा, हरगिज़ न कहीं बिखरे।
हर स्वाँस नाम जप के, दर्पण दिल का निखरे।
फिर पाके हकीकी खुशी, कली दिल की खिलती है।।

2. मोह नींद से प्राणी तुझे, सतपुरुष जगाते हैं।
किया गर्भ में जो वादा, वह याद दिलाते हैं।
जो काट दे जन्म मरण, ऐसी नाम की शक्ति है।।

3. तू नाम का कर सुमिरण, सन्तों की शरण जा के।
मिले सच्चा सुख उनकी, प्रसन्नता को पा के।
बीते जो सुमिरण में, वही ज़िन्दगी ज़िन्दगी है।।

तर्ज़-फूल तुम्हें भेजा है-----।

टेक-बेशकीमत तन यह तेरा, लाभ इससे उठा ले तू।
देर न कर अब तू प्यारे, पल पल नाम कमा ले तू।।

1. लाख चौरासी भटक भटक कर, नर तन तूने पाया है।
भागों से यह दुर्लभ अवसर, हाथ तेरे अब आया है।
स्वाँस स्वाँस में ऐ बन्दे, मालिक के गुण गा ले तू।।

2. देख तमाशे दुनियाँ के तू, दिल उसमें न फँसा अपना।
मिथ्या जग के भोग पदार्थ, जैसे रैन का हो सपना।
ये फल मीठे ज़हर भरे हैं, धोखे से खुद को बचा ले तू।।

3. जीवन सफल बनाना है तो, सतपुरुषों की संगत कर।
चरण शरण में जाके उनकी, ले ले नाम की दात अमर।
सेवा पूजा उनकी कर के, प्रसन्नता को पा ले तू।।

4. पायेगा सुख दासा निश्चय, बात यह सत सत मान ले।
आज्ञा मौज में चलना सदा, दिल अपने में ठान ले।
फिर न व्यापेगी गम चिन्ता, चाहे तो आज़मा ले तू।।

तर्ज़-दुनियाँ में ए मुसाफिर----।

टेक-मानुष जन्म को पाकर गर भजन न कमाया।
कौड़ी के बदले तू ने हीरा जन्म गँवाया।।

1. भेजा प्रभु ने जग में गिनती के स्वाँस देकर।
भक्ति खरीद करना कुछ रोज़ जग में रह कर।
आदेश तूने उसका मन से ही है भुलाया।।

2. विषयों के रस में फँसकर पिया नाम का न प्याला।
माया की मोहिनी ने तुझ पर असर है डाला।
यूं ही बरबाद कर दी, मानुष जन्म सी काया।।

3. सुन सन्तों की हिदायत उसे ज़हन में बिठाना।
मानुष जन्म के अन्दर फिर फिर न होगा आना।
कर फैज इसमें हासिल जो वक्त हाथ आया।।

4. ऐ दास वक्त मत खो कर नाम की कमाई।
यह तेरी खुशनसीबी संगत गुरु की पाई।
गफलत में सो रहा था सतगुरु ने है जगाया।।

तर्ज़-कर जोड़ प्रथम------।

टेक-यह जन्म मिला है तुझे प्राणी, मालिक की भक्ति कमाने को।
यह मानुष तन इक सीढ़ी है, चौरासी से मुक्ति दिलाने को।।

1. दुनियाँ से दिल न लगाना तुम, प्रभु प्रेम को दिल में बसाना तुम।
दुनियाँ के धन्धों में फँस कर, नहीं जन्म यह वृथा गंवाने को।।

2. तू शरीर से अपनी नज़र हटा, रूह का कल्याण भी सोच ज़रा।
सतगुरु संसार में आये हैं, भवसागर पार कराने को।।

3. तू सिर के मोल भी सौदा कर, गुरु दर से भक्ति खरीदा कर।
गुरु शब्द ही असली पूँजी है, जीवन सुखरूप बनाने को।।

4. पूर्ण सतगुरु का पकड़ दामन, बनें अन्त में जो तेरे ज़ामन।
माया के चक्कर से दासा, सतगुरु आये हैं बचाने को।।

तर्ज़-उठ जाग मुसाफिर----।

टेक-यह जग रचना सब झूठी हैं, इकदिन तो छोड़ के जाना है।
कई चले गए कई तैयार खड़े, ये दुनियाँ मुसाफिर खाना है।।

1. मोह नींद का सारा सपना है, यहाँ कुछ न जीव का अपना है।
जग तो मृगतृष्णा का जल है, नाहक दिल भरमाना है।।

2. स्वाँसों का धन क्यों लुटाता है, गया वकत हाथ नहीं आता है।
तब बाद में आँसू बहाएगा, जब सामने काल ने आना है।।

3. जग में रह के उत्तम काम करो, नर तन को न बदनाम करो।
परलोक का कुछ सामान करो, सन्तों का यही फरमाना है।।

4. हर चीज़ यहाँ की पराई है, इक नाम ही संग सहाई है।
गुरु चरणों में दास मन को लगा, सतगुरु ने अन्त निभाना है।।